मनुष्य जिन्दगीको चमकानेवाली

अद्भुत पुस्तक

आकर्षण-शक्ति

लेखक :—

श्री गुलाबरत्न वाजपेयी "गुलाब"

चौथा संस्करण]

[मूल्य ३)

सुनो

और सुनो !

आज संसार भरके दुखी भाइयोंका आर्तनाद मेरे कानोंमें वज्रघोषकी तरह गूँज रहा है। मैं अपनी जिन्दगीमें एक दिलचस्प भूकम्प लिये रास्तेमें चलता हूं। आज मेरी नसोंमें जो खून बिजलीकी तीव्र गतिसे दौड़ रहा है, उसकी इस बढ़ती प्यासमें मैं ठण्ढे जलकी शीतलता प्राप्त कर रहा हूं। मुझे इन प्रचण्ड धाराओंपर चलनेमें विश्रामका पूरा आनन्द आ रहा है और मैं तुमसे मिलकर धन्य हो गया हूं।

जल्दबाजी न करो। 'आकर्षण-शक्ति' को होशियारीसे पढ़ो। इस पुस्तक द्वारा संसारमें तुम्हारा नया जन्म होगा।

अपने पर पूरा विश्वास रखो। अपना काम खुद करो और हमेशा सावधान रहो। यदि कोई बात समझमें न आये, तो उसे बार-बार समझानेकी चेष्टा करो। यदि अपने कार्यमें दो-चार बार 'फेल' भी हो जाओ, तो न घबराओ। आगे बढ़ो। असफलता ही सफलताकी मुख्य सीढ़ी है। बस !

कलकत्ता
२०-११-३७

मैं हूं तुम्हारा प्यारा दोस्त
गुलाबरत्न वाजपेयी

नयी-जिन्दगी

२१ अप्रैल १६४५ !

आज संसारमें मनुष्य रूप धारण कर पिशाचकी गुप्त कल्पनाओंमें जो व्यक्ति चल फिर रहे हैं, उन्हींमें से किसी दयालु सज्जनने मुझपर ऐसा रहस्य जाल फेंका कि मुझे अकस्मात हैजा हो गया और मैं कई दिनों तक बेहोशीकी हालतमें पड़ा रहा। वह बेहोशी थी या मेरी मृत अवस्था, मैं नहीं कह सकता। किन्तु मुझे ऐसा मालूम होता था, मानो मैं मृत हूं, और एक सुनसान उज्वल प्रकाशमें मैं दूर,—बहुत दूर चला जा रहा हूं।

आज २१ मार्च १९४६ है। पूरे ३६५ दिन तक मैं मौतके साथ युद्ध करता रहा। इस बीच कितने ही तूफान आये, ज्वालामुखी पहाड़ जैसे विस्फोट हुये, कई तरहकी अद्भुत घटनायें घटीं, कुछ खास खास आदमियों को स्टडी करना पड़ा। मनुष्यकी शक्लमें मुझे दैत्य भी मिले और मनुष्यके रूपमें मनुष्य भी। उन दिनों जितने भाई बहनोंने मुझे जीवन-ज्योति प्रदान कर नये संसारमें ला खड़ा किया, उन सबका मैं कृतज्ञ हूं और श्रद्धापूर्वक उनके सामने सर झुकाता हूं।

आज पूरे एक वर्ष वाद, मेरी लेखनी कहींसे सिमटती हुई मेरे हाथोंमें पुनः फिर आई है। आज मैं सच्चे हृदयसे माता सरस्वती, आराध्यदेव और भारतके समस्त भाई-बहनोंसे नया बल, नवीन उत्साह और आत्मिक ज्योतिका भिखारी हूं, यदि उनकी दयाके कण मेरी आत्मामें जागरण रूपसे फैल सके तो मैं अपनेको धन्य समझूंगा। जय हिन्द !

विज्ञान मन्दिर
कलकत्ता
२०—३—४६

सेवक—
गुलाबरत्न वाजपेयी

आकर्षण शक्ति

ग्रन्थकार

सफलताकी सीढ़ियाँ

विषय | पेज

दो शब्द

आकर्षण-शक्ति !

इसपर 'दो शब्द' लिखना और खासकर उस शख्सकी 'आकर्षण-शक्ति' पर कुछ लिखना, जो स्वयं कवि, नाटककार और लेखन कलाका सिद्धहस्त है—वास्तवमें मुश्किल है ।

पर इतना तो मैं अवश्य कह सकता हूं कि इस ग्रन्थमें कविवर गुलावजीने उस शक्तिको हस्तगत करनेका उपाय बताया है, जो संसारकी एक ऐसी महती शक्ति है, जिसके सहारे यह इतना महान विश्व सुचारु रूपसे कार्य कर रहा है और जिस शक्तिको प्राप्त कर लेखक ही के शब्दोंमें प्रत्येक मनुष्य यह कह सकता है—"संसारमें मेरे लिये कोई काम असम्भव नहीं—मैं अपने भाग्यका स्वयं मालिक हूं ।" हां, इसमें जो विषय बताये गये हैं, जिन सरल, सर्वोपयोगी, सुन्दर और सुखद साधनोंका समन्वय किया गया है, उनका पालन कर मनुष्य वह शक्ति प्राप्त कर देवत्वकी सीमापर पहुंच सकता है और वह आकर्षण-शक्ति प्राप्त कर सकता है, जो सांसारिक और आध्यात्मिक जीवनमें आनन्द उत्पन्न कर देती है ।

सच तो यह है कि मँजे हाथोंकी यह आकर्षण-शक्ति अतीव कल्याण कारिणी है और इसकी प्रत्येक पंक्ति अनुभवसिद्ध है । प्रत्यक्ष प्रमाण स्वयं लेखक मौजूद हैं, जिनमें वह आकर्षण-शक्ति है कि जिसे चाहें मोह लें ।

—**स्व० भोलानाथ टंडन** एम० डी० एस०

प्रिन्सिपल इन्टरनेशनल कालेज

सुनो !

मनुष्यके अन्दर जो आश्चर्यजनक शक्तियां है, उनके द्वारा वह संसारमें जो चाहे कर सकता है। दुनियाकी हर चीज खुली आँखोंसे देखनेसे बहुत ज्यादा सुन्दर दिखाई देती है। इस पुस्तकमें मनुष्यके प्रभाव और उसकी रोगमुक्तिके सम्पूर्ण विषयकी झाँकी मैं तुम्हारे सामने पेश किये देता हूं। उन्हें खुले दिलसे समझो। यदि तुम सामनेकी फैली सड़कपर सावधानीसे चलोगे तो तुम्हें हर काममें सफलता मिलेगी। तुम्हारा जीवन दुनियाकी बड़ीसे बड़ी इमारतसे ज्यादा पेचीदा और ताज्जुब भरी ताकतोंका अजीब अजायबघर है। इसे याद रखो—"मनुष्यको कोई नहीं बनाता, उसे खुद महापुरुष बनना पड़ता है।"

तकलीफों और मुसीबतोंसे न घबराओ। जिस आदमीने जिन्दगीमें दुखोंका अनुभव नहीं किया, वह महत्वपूर्ण आनन्दोंसे वंचित रह गया। आफतें मनुष्यको पवित्र, सफल व्यक्ति और भविष्यका विजयी वीर बनाती हैं। जिन्दगीकी कठिन मंजिलमें दुःख ही मनुष्यका सच्चा दोस्त है, जो उसके लिये उन्नतिके विराट मार्ग खोल देता है और उसे शिक्षा देता है—"मनुष्य जो कुछ सोचता है। भविष्यमें वही उसका भाग्य बन जाता है!"

मेरे सन्देशोंको धीरजके साथ सुनो। मेरे साथ किसी तरहकी अशांतिका अनुभव न करो! अपने जीवनपर ध्यान दो, कर्तव्यको देखो और जिन्दगीको शक्तिशाली तथा आदर्श बनाओ।

मनुष्यको पुरानी शिक्षा मिली है, वह पुण्यात्मा बने। किन्तु मैं कहता हूं—तुम वीर्यधारी बनो। पुराने आदमियोंने तुम्हें सिखलाया है—साधू-सन्यासी हो जाओ। किन्तु मैं कहता हूं—इसकी तुम्हें जरूरत

नहीं। तुम शक्तिशाली, कर्मयोगी और महामानव बनो; बल्कि उससे भी ज्यादा आगे बढ़ जाओ और देवता बनो। अपने नये मार्ग और आवश्यक कार्य-पद्धतियां निकालो। मेरे ये सिद्धान्त शायद पहले तुम्हें कड़वी गोलियोंके समान जहरीले मालूम हों, किन्तु बादको ये तुम्हारी कायापलट कर देंगे और तुम दुनियामें नवीन जीवन धारण करोगे।

तुम्हारा भविष्य, सुख और भाग्य किसी खास मौकेपर न चमकेगा। यह सब तुम्हारी इच्छा शक्तियोंपर निर्भर हैं। तुम जब चाहे उन्हें चमकाकर दुनियामें असाधारण व्यक्ति बन सकते हो, और अपनेमें इतना चित्ताकर्षक 'व्यक्तित्व' ला सकते हो कि राह चलते आदमियोंको अपनी तरफ खींच सकते हो।

जमाना तेजीसे पलट रहा है। मनुष्यके कार्योंमें ज्वार-भाटा आ गया है। पुरानी परम्परायें, दकियानूसी खयाल और पुरानी रूढ़ियां डगमगा रही हैं। व्यक्ति स्वातन्त्र्य और नये विचारोंका सूर्य तेजीसे उदय हो रहा है। इस जागरण युगमें जो मनुष्य अपनेको पहचानकर आगे बढ़ेगा, संसारमें उसीका बोलबाला होगा।

यह सच है तुम जिस दिन अपने दिल और दिमागपर कब्जा करना सीख जाओगे, उस दिनसे तुम्हारी दुनिया आजकी दुनियासे बहुत ज्यादा दिलचस्प, खूबसूरत और निराली होगी। मनुष्यका दिल और दिमाग़ वह तूफान है, जो उसके खयाल कल्पना, भय या अन्धविश्वासके द्वारा कभी गर्म और कभी सर्द होकर प्रवाहित होता है। मनुष्य आंखोंसे जो कुछ देखते हैं उसका आधा उनका विश्वास है। और वह जो कुछ डरते हैं, उसका आधा वहम और कोरी कल्पना!

तुम क्या हो ?

क्या तुम जानते हो, ईश्वर के बाद संसारमें सबसे बड़ा कौन है ? राजा या प्रजा नहीं, सभासद या सभापति नहीं, पुजारी या पतित नहीं, बनचर, नभचर भी नहीं, ईश्वरके बाद संसारमें सबसे बड़े हो—"तुम" !

क्या तुम्हारे दिलमें कभी इस बातका तूफान आया है कि—"मैं क्या हूं ? क्या तुमने कभी एकान्तमें बैठकर इस प्रश्नपर विचार किया है कि—"मैं क्या हूं ?"

मैं समझता हूं ? तुम्हारे मनमें कभी इस बातका तूफ़ान न आया होगा। यदि आया भी होगा, तो चन्द मिन्टों में काफूर की तरह उड़ गया होगा। फिर तुम इस प्रश्न को भूलकर अपने काम-धन्धेमें लग गये होगे।

आँखे खोलकर अपने उन्नत मस्तककी ओर देखो। उसके सामने संसारकी सारी शक्तियाँ नतमस्तक हैं !

तुम पृथ्वीमंडलके सर्वश्रेष्ठ मनुष्य हो ! तुम्हारे तेजस्वी ललाटमें ब्रह्म-ज्योतिकी चमक है। हृदयको टटोलो—उसमें शक्तियोंका खजाना जगमगा रहा है ! संसारकी तरफ़ देखो—वह सौन्दर्यका जादूघर है। दिमागका अध्ययन करो—उसमें बिजलीकी ताकत है।

रेगिस्तानको हँसता खेलता बगीचा बना देना तुम्हारे हाथका काम है। असम्भवको सम्भव कर दिखाना, दुःख और मुसीबतोंसे भरे जमानेको सुख और

शांतिके रूपमें पलट देना तुम्हारे ही घटनाचक्रका रहस्य है। तुम्हारे एक शब्दसे, तुम्हारे एक इशारेसे, जीवनके दुःख-बन्धन तड़ातड़ टूट सकते हैं। अपनेको देखो—अपनेको पहचानो।

तुम इस महान विज्ञानको कविकी कल्पना, या पागलका प्रलाप न समझो। यह सत्य है, और सत्य होनेके लिये वाध्य है!

तुम्हें यह देखकर आश्चर्य होगा—कि मैं तुमसे इतनी दिलचस्पी क्यों रखता हूं? इसका सबसे बड़ा कारण यह है--कि तुम्हारी आकर्षण शक्ति मुझे चुम्बककी तरह तुम्हारी तरफ खींच रही है। ओह! तुम्हारी जिन्दगीमें शक्तियोंका खजाना है!

इस विज्ञानको सावधानीसे अध्ययन करो। सोचो, समझो और उसपर गौर करो। तुम अपने विषयमें जितना अधिक सोच सकते हो, उतना दूसरे नहीं। पृथ्वी-मंडलमें तुम्हें एक भी मनुष्य न मिलेगा—जो तुम्हारी उन्नति के विषयमें गहराईसे सोचनेका कष्ट उठाये। तुम अपने विषयमें गंभीरतापूर्वक विचार करो—खूब सोचो—"मैं क्या हूं? और संसारमें किसलिये आया हूं?"

तुम चुम्बक हो!

वह अद्भुत चुम्बक—जो हाड़, मांस और रक्तसे बना है। उसमें अद्भुत तेज है—बिचित्र आकर्षण! यह आकर्षण शक्ति संसारके प्रत्येक मनुष्यको अपनी ओर खींच सकती है। बिश्वको तुम्हारा भक्त बना सकती है। इसके जरिये तुम अपनी समस्त मनोकामनायें पूर्ण कर सकते हो। यह शक्ति तुम्हारे घरमें कारूँका खजाना भर सकती हैं। तुम्हारे बच्चोंको आनन्दके हिंडोलेपर झुला सकती हैं। इसी शक्तिके जरिये तुम्हारी मातायें

बहनें, बेटियां देवी बन सकती हैं और तुम परम पिता परमात्माके साक्षात दर्शन कर सकते हो !

यह एक नया और निराला विज्ञान है, जो सही और सत्य है !

इस मार्गको पानेके लिये तुम्हें न तो सन्यास लेनेकी आवश्यकता है, न श्मशानमें मन्त्र जगानेकी जरूरत। तुम बाल—बच्चोंके साथ रहो। व्यापार धन्धे करो। तुम जो चाहोगे—भविष्यमें वही हो जाओगे। सफलतायें तुम्हारे आगे हाथ जोड़े खड़ी रहेंगी। तुम्हारा जीवन विशेषताओंसे भर जायेगा और तुम दुनियामें अपनेको एक नया आदमी समझने लगोगे !

तुम्हारा महान आकर्षण तुम्हारे पास है। उसे न कोई छीन सकता है, न चुरा सकता है। तुम संसारमें एक बहुत आवश्यक मनुष्य हो। दुनिया उन्हें आदरके सिंहासन पर स्थान देती है, जो अपनेको पहचानकर जीवन-संग्राममें आगे बढ़ते हैं।

तुम इस ख्यालको लेकर होशियारीसे आगे बढ़ो। अपने समयको अपने ही कर्तव्योंमें समाप्त करो। भविष्यमें तुम बड़ेसेबड़े आविष्कारक, कलाकार; व्यापारी तथा राजनैतिक हो सकते हो।

आगेके सनसनीखेज पेज पढ़ो। यह विज्ञान तुम्हें दिन दूना रात चौगुना ऊँचे उठानेकी शिक्षा देगा, जीवनके अद्भुत रहस्योंको समझायगा तथा तुम्हें आनन्दका अमृत पिलायगा।

ईश्वरके बाद संसारमें सबसे बड़े हो—"तुम" !

इस आध्यात्मिक ज्ञानको एकान्तमें अध्ययन करो। जरा भी न घबराओ।

मैं कोई जादूगर नहीं। सब तुम्हारी समझमें आ जायगा--और तुम एक दिन आनन्दसे उन्मत्त होकर चिल्ला उठोगे—"संसारमें मेरेलिये कोई काम असम्भव नहीं। मैं अपने भाग्यका आप मालिक हूं।"

चुम्बक

तुम भी जागते हो, मैं भी जागता हूं, सारा संसार जागता है। मगर हमारी नींदमें कुम्भकर्णकी बेहोशी है। हम जागते हुये भी सोते हैं। हाथ पैर रखते हुये भी पंगु हैं। कान हैं, मगर हम सुननेमें बहरोंके कान काटते हैं। आंखें हैं, लेकिन हमारी गिनती सूरदासकी श्रेणीमें होती है। क्यों और किस लिये?—हम मनुष्य जीवनके रहस्योंको नहीं समझते!

संसारमें सफलताकी मंजिल तय करना, खासकर आजकलके जमानेमें, बच्चोंका खेल नहीं। सफलताकी भाग्य रेखायें उन मनुष्योंके कपालमें अंकित हैं—जिनके हृदयमें नवीन आविष्कारोंकी आंधी हहराया करती है, जो कर्मक्षेत्र में कमर कसकर खड़े होनेकी ताकत रखते हैं, जिनकी मानसिक शक्तियां तेजस्वी, अटल और प्रतापी होती हैं।

तुम चुम्बक हो। तुम्हारे शरीरकी अन्दरूनी—कोठरी शक्तियोंका बिजलीघर है। उसमें दिमागी ताकत उत्पन्न करने के लिये, जिन्दगीमें नया रङ्ग लानेके लिये, बिजलीघरकी समस्त मैशीनोंको साफ करना होगा। उनके कल पुर्जे दुरुस्त करने होंगे, उसमें 'पेट्रोल' डालना होगा—जोरदार 'स्पीड' पैदा करनी होगीः—जिससे अन्दरकी सब मैशीनें खटाखट चल सकें और तुम्हें सफलताके मार्गमें विजय हासिल करनेके लिये जरा भी कठिनाईका सामना न करना पड़े।

आकर्षण-शक्ति

किसी भी देशका उत्थान पतन उसके स्त्री पुरुषोंकी आकर्षण-शक्तिपर निर्भर है। जातियोंके क्रम विकास परिश्रम और तत्परतासे होते हैं। आज जो देश पतनके गहरे गड्ढे में गिर पड़े हैं, उनमें सिवा अन्धकारके रोशनीका नाम तक नहीं नजर आता। उनकी घृणित कहानी यह है कि उन देशोंने कभी मनुष्योंको आलस्यकी नींदसे नहीं जगाया। यदि हम मनुष्यों-को त्रुटियोंको खोज करने बैठें—तो वे हमें रास्ता चलते दिखाई देंगी। वे त्रुटियां हमेशाके लिये नष्ट कर देनेका एक ही उपाय है—हम पहले अपनेको पहचानें-फिर प्रत्येक मनुष्यके जीवन को नये सांचेमें ढालकर उनकी कायापलट कर दें। हमारे दैनिक अनुभवोंसे यह बात सिद्ध है, कि आत्म-गौरव और सुकर्म ही मनुष्य जीवनमें हेर फेर करते हैं। आज हम स्कूल तथा कालेजोंसे उँची डिग्रियां लेकर अपनेको महा विद्वान समझते हैं और टके टकेकी नौकरीको दर-बदरकी ठोकरें खाते फिरते हैं—इसके बाद पेटकी आराधनामें लगकर सरस्वतीको हमेशाके लिये प्रणामकर लेते हैं—यह कैसी नीच प्रकृति है? दुनियामें तुम्हें ऐसी प्रकृति कहीं न मिलेगी। दूसरे देशोंके विद्यार्थी स्कूल और कालेजोंके दरवाजेसे निकलकर ज्ञान-समुद्रका मन्थन करने लग जाते हैं और उससे अमूल्य निधियां प्राप्त करते हैं। क्योंकि ज्यादा ज्ञान परम पिता परमात्माकी आनन्दमयी सृष्टिसे प्राप्त होता है, सड़कों पर पैदल चलने तथा दैनिक जीवनकी घटनाओंसे मिलता है। यह ज्ञान तुम्हें स्वयं अपने पैरोंपर खड़े होनेके आकर्षक उपदेश देते हैं-तुम्हें महा मानब बनाते हैं।

तुम चाहें जिस दृष्टिसे देखो—साफ दिखाई देगा—कि मनुष्य सिखनेके

बजाय कर्मसे ज्यादा आगे बढ़ते हैं। वर्तमान समयमें मनुष्योंमें जो जागरण-ज्योति फैल रही हैं, उसका कारण और कुछ नहीं, मनुष्योंका आकर्षक प्रभाव है। आजकल मनुष्यका जीवन कितने ही आकर्षक प्रभावोंसे संगठित हो रहा है। विश्वकी सामयिक जागरण-ज्योति उनकी आँखें खोलती जा रही हैं और वे आज उन्नतिकी खोजमें ठीक उसी तरह पागल हो रहें हैं—जिस तरह एक दिन अमृतकी खोजमें देवता और दैत्य पागल थे।

मनुष्य जीवनके अद्भुत रहस्योंको न पहचान सकनेके कारण संसारमें हजारों लाखों मनुष्योंने अपनेको जिन्दा कब्रमें दफना दिया—याने वे संसारमें कुछ न कर सके। उन्होने न तो मनुष्य जन्म लेनेके रहस्योंको समझा, न अपनी मङ्गल कामनाओंकी पूर्तिकी। वे मुट्ठी बांधकर यहाँ आये—और हाथ पसारे चले गये। उनकी यादगारोंका कोई चिन्ह आज संसारमें न मिलेगा। अफसोस! यह उनकी भयानक भूलोंकी कैसी शोचनीय दुर्घटना है!

तुम मनुष्य हो, चुम्बक हो, भूलके भ्रममें न भूलो। इस चुम्बककी शक्तिशाली ताकतें तुम्हारे अन्दर बेचैनीसे दौड़ रही हैं, वे उन्नतिकी रेसमें तुम्हें सबसे आगे बढ़ाने के लिए बेताब हैं। तुम्हें बहुमूल्य उपहार देनेके लिये लालायित हैं। मानसिक विज्ञानकी आँखोंसे उन्हें देखो, पहचानो और प्रतिज्ञा करो—"मैं अपनेमें आकर्षण उत्पन्न करूँगा। आजसे मेरा संसार—वह संसार होगा, जिसकी मैं स्वयं रचना करूंगा। आजसे मेरी जिन्दगी,—वह जिन्दगी होगी—जिसे मैं खुद सांचेमें ढालकर तैयार करूँगा।"

आज हम विज्ञानके जमानेमें भ्रमण कर रहे हैं। विज्ञानने ही रेल, तार, रेडियो, ग्रामोफोन, बायस्कोप और हवाई जहाज इत्यादि आश्चर्यजनक

वस्तुओंकी सृष्टिकी है। इनके आविष्कारक तुम्हारे ही जैसे दो हाथ पांव-वाले मनुष्य थे। यदि तुम उन्नति करना चाहते हो, उन्नतिके शिखरपर चढ़कर गहरी बाजी मारना चाहते हो, तो अपनेको पहचानो—अपनेमें जागरण ज्योति जगाओ। सफलता तुम्हारे सामने जय-मुकुट लिये खड़ी रहेगी।

तुम्हें यह जानकर आश्चर्य होगा कि मनुष्यमें चुम्बक शक्ति तीन ताक-तोंसे उत्पन्न होती है। उसमें पहली ताकतका नाम है—हवा। वह हवा, जो रोजाना सांसके जरिये तुम्हारे शरीरमें प्रवेशकर प्राण शक्ति उत्पन्न करती है। दूसरी ताकत उन 'तरल पदार्थों' की है, जिन्हें तुम हर रोज पीते हो। तीसरी ताकत है—खाद्य सामग्री—जिसे तुम भोजन कहते हो।

यह ताकतें उस मनुष्यमें ज्यादा चुम्बक उत्पन्न करती हैं, जिसका स्वा-स्थ्य सुन्दर होता हैं। जिसमें पुरुषत्वकी लाली रहती है—जिसके बदनमें बल वीर्य चमचमाया करता है।

उठो! जागो! चुम्बक शक्तिसे संसारको अपनी तरफ खींचलो। फिर तुम एक दिन देखोगे—जिस मङ्गल कामनाकी पूर्तिके लिये तुम कल सोच रहे थे, आज उसकी पूर्ति हो गई और आज जो सोच रहे हो—वह कल पूर्ण होनेके लिये बाध्य है!

दुनियामें हमेशा चुम्बक बनकर जिओ। अपनी प्रसन्नताओं को चारो तरफसे चमकाओ—शक्तियोंको जाग्रत करो। एक दिन तुम्हें देखनेके लिये तुम्हारे सामने हजारों स्त्री-पुरुषोंकी भीड़ लग जायगी!

स्वास्थ्य-विज्ञान

तुम्हारी उम्र चाहे अठारह वर्षकी हो या अस्सीकी—चुम्बक शक्ति चमकानेके लिये सबसे पहले तुम्हें स्वास्थ्य सुधारना होगा। यह गलत ख्याल है कि-"मैं बृद्ध हो रहा हूं"। मनुष्य अठ्ठारह वर्षकी उम्रमें बूढ़ा हो सकता है और अस्सी वर्ष की उम्रमें जवान। जिन्दगीको जवानी और बुढ़ापेमें बदल देना मनुष्यके हाथकी बात है। हां, उसमें चाहिये—वैज्ञानिक रहस्योंके समझनेका ज्ञान!

पिछले पचास वर्षोंसे विज्ञान जिस तेज रफ्तारसे आगे बढ़ रहा है, उसे देखकर हम ताज्जुब किये बगैर नहीं रह सकते। अनगिनत आविष्कारों द्वारा उसने संसारकी काया पलटकर दी है। आज हम अपनेको विज्ञानकी बदौलत, पहलेकी अपेक्षा बहुत आगे बढ़ा पाते हैं।

अब मैं यहां स्वास्थ्य विज्ञानपर एक दृष्टि डालूंगा। यह विज्ञान दूसरे विज्ञानोंकी अपेक्षा अभी बहुत पीछे है, और जीवन के चुम्बक तत्त्वोंको चमकानेके लिये हमें उसका ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है।

हम रोगी हैं। हमें हमेशा कोई न कोई बीमारी सताती रहती है। क्यों?—हम स्वास्थ्य रक्षाके नामपर अनाप-शनाप बाजारू दवाइयां खाते हैं और शरीरके अन्दर जहर फैलाते हैं। यदि तुम कभी बीमार नहीं रहना

चाहते, बदनमें आकर्षण, जीवनमें चुम्बक और आंखोंमें तेज लाना चाहते हो—तो पहले तीन चीजोंको समझो। वे क्या हैं:—

(१) हवा याने सांस लेनेकी वायु, (२) तरल पदार्थ, (३) भोजन।

यहां मैं सर्वप्रथम हवाके प्रयोगोंको समझाऊंगा।

हवा याने साँस लेनेकी वायु

"हवा"—क्या है ? हवा मनुष्यको प्राण प्रदान करनेवाली शक्ति है। मनुष्य बगैर भोजनके महीनों जिन्दगी कायम रख सकता है, बगैर पानी हफ्तों मौतके साथ लड़ सकता है; किन्तु यदि उसे ताजी हवा न मिले तो ?—वह चन्द घण्टोंमें मर जाय।

मैं दावेके साथ कहता हूं वर्तमान समयमें हजारमें नौ सौ आदमी सांस लेनेके प्रयोग नहीं जानते। यही वजह है, जो मनुष्योंकी आयु दिन दिन घटती जा रही है, उनके सामने कमजोरियोंके ढेर लगे हैं, और वे मानसिक चिंताओंकी चितामें भस्म होते जा रहे हैं !

तुम हर रोज प्रातःकाल सोकर उठनेकी आदत डालो। उषाकालके समय उठो तो बहुत सुन्दर ! नित्य हरे-भरे मैदान या बाग बगीचेमें चले जाओ और हरियालीका लुफ्त लेते हुये एक जगह सीधे तनकर खड़े हो जाओ। आंखें और मुंह बन्द करो—फिर नाकसे ताजी हवा खींचकर शरीर के अन्दर भरो। दस पन्द्रह सकेण्ड तक उसे रोको, फिर आहिस्तः आहिस्तः मुंहके बाहर निकाल दो। यह प्रयोग सुबह शाम दस बारह मरतबे रोज करो। तुम्हारे जीवनमें संजीवनी बूटी जैसा असर होगा।

हवाकी ताकतसे चुम्बककी शक्तिशाली चिनगारियां तुम्हारे शरीरके अन्दर फलेंगी और तुम्हारे बदनमें दिन ब दिन आकर्षण बढ़ता जायगा! यदि बाग बगीचे या मैदानमें जानेके लिये तुम्हारे पास समय न हों, तो मकानकी छत या खिड़कियोंके सामने खड़े होकर वैज्ञानिक कसरत करो; तुम्हें नई और जोरदार जिन्दगी मिलेगी। दिमागमें नई-नई शक्तियोंका जन्म होगा।

साँस-शक्तिको बढ़ानेके लिये रोज कसरत करना आवश्यक है। इससे सिर्फ तुम्हारी साँस शक्ति ही नहीं बढ़ेगी—बल्कि शरीर भी सुडौल हो जायगा। कसरतके अलावा दौड़ना, तैरना, मैदानमें घूमना, फुटबाल, हाकी या टेनिसके खेल भी साँस शक्तियोंको बढ़ाते हैं।

तरल पदार्थ

तरल पदार्थोंमें सबसे बड़ी चीज है—पानी, जिस तरह जलकी वर्षा मुरझाई खेतोको लहलहा देती है—पानी उसी तरह मनुष्य शरीरको नये रङ्ग रूपसे चमका देता है।

तुम नौजवान हो, मगर बूढ़ोंके कान काटते हो। तुम्हारी कमर झुक गई है, आँखोंके नीचे गढ्डे पड़ गये हैं, धुंधला दिखाई देता है, बदसूरत हो रहे हो, गाल पिचक गये हैं या इस कदर मोटे हो गये हो कि रास्ता चलते लोग तुम्हारा मजाक उड़ाते हैं, तो मैं कहूंगा—तुम धोखेकी ओर बढ़ते जा रहे हो; पानी पीना नहीं जानते और बीमारियोंसे तुम्हें मुहब्बत हो गई है!

रोज कमसे कम आठ ग्लास पानी पियो। उसे धीरे-धीरे हलकके नीचे उतारो और स्वाद लेकर पियो। तुम्हारी समस्त अन्दरूनी गन्दगी धुलकर साफ हो जायगी। उसमें तेजस्वी शक्तियोंके बीज बो जायेंगे।

तुम्हारा सौन्दर्य दिन दूना रात चौगुणा बढ़ेगा। स्नान के समय बदनके चमड़ेको हथेलीसे रगड़ो; शारीरिक बीमारियोंका नाम निशान मिट जायगा।

यदि तुम पानीके प्रयोगोंसे चूक जाओगे तो तुम्हारे शरीरकी वैसी ही दशा होगी, जैसे मुरझाये फूलकी।

भोजन

चुम्बक शक्ति बढ़ानेकी तीसरी ताकत है—भोजन।

मगर भोजन,—भोजनके तरीकेसे करो। उन्हीं चीजोंको खाओ जो तुम्हें प्रिय हों और जिनका रूप रङ्ग तुम्हारी आंखोंको सुख देने वाला हो।

हममेंसे ज्यादा आदमी पेटकी बीमारियोंके शिकार हैं। कुछ के पेट भारी हैं, कुछके हल्के। कुछ हमेशाके लिये पेटके गुलाम हैं, कुछ पेटकी तरफ ध्यान ही नहीं देते। कुछ बहुत ज्यादा भोजन करके बीमारियोंको निमन्त्रण देते हैं, कुछ कम भोजनकर दुर्बलताओंसे दोस्ती गांठते हैं। यह भूलें हैं। पेट मनका ढाचा है। शारीरिक 'बिजली घर' की जितनी मैशीनें दौड़ती हैं—इसके नपे-तुले दायरेमें। दायरेके भीतर या बाहर जाना पेटके लिये कुछ वैसी ही दुर्घटना है—जैसी रेलके पहियोंका पटरियोंके बाहर चलाना या अन्दर गिर पड़ना!

खाना धीरे-धीरे और प्रसन्न मनसे खाओ। हमेशा इस बातपर ध्यान रखो, तुम चाहे जितना काममें 'विजी' हो, खाना समय पर खाओ। खानेको दांतोंसे खूब कुचलो, महीन बनाओ और आहिस्तः आहिस्तः गलेके नीचे उतारो। जो लोग खानेमें जल्दबाजी करते हैं और खाद्य पदार्थोंको अच्छी तरहसे कुचल कर नहीं खाते—वे अपने ही दांतोंसे अपनी कब्र खोदते हैं।

सादे भोजनके अलावा साग सब्जी ज्यादा तादादमें खाओ। हरी और कच्ची चीजें शरीरमें ठोस ताकत पैदा करती हैं। ये नमक, गन्धक और लोहेकी शक्तियोंको बढ़ाती हैं और बदनमें ताजा रक्त पैदा करतो हैं।

फल खानेकी मात्रा बढ़ा दो। फलोंसे शरीरमें पाचनशक्ति बढ़ती है। इस पाचनशक्तिसे तुम्हारे बिजलीघरका रसायनागार भरा-पुरा रहता है। ऋतुके बाहरकी चीजें न खाओ, ये नुकसान पहुंचातो हैं।

तुम्हारे शरीरमें दांत सच्चे सेवक हैं, उनसे अच्छी सेवायें लो—अगर तुम मांस खाते हो तो उसका बहिष्कार कर दो। ठण्डा भोजन जिन्दगीको शून्य और भारी बनाता है, इसलिये ठण्डे भोजनकी आदत छोड़ दो।

सफलताका रहस्य

विश्वास पूर्वक उपरोक्त नियमोंका पालन करो। दरख्त अपनेही बलपर अपनेमें लहरें निकालते हैं, स्वास्थ्यको सुन्दर और जीवनको भरा पूरा रखनेके लिये हरे भरे दरख्तोंसे शिक्षा ग्रहण करो और इस बातका ध्यान रखो:—

जिन्दगीके अमूल्य उपहार उन्हीं मनुष्योंको मिलते हैं, जो जीवनके कानूनोंको नियम पूर्वक मानते हैं। लापरवाही और सुस्ती शक्तियोंको नष्ट कर देती है और इससे मनुष्यके चुम्बक तत्व बेकार हो जाते हैं।

मनकी शक्तियां

आज संसारमें जितने मनुष्य अपने नामकी धूम मचा रहे हैं और आश्चर्य-जनक आविष्कारोंसे दुनियाको चकित कर रहे हैं — वे आध्यात्मिक शक्तियोंके मास्टर हैं। उसके शक्तिशाली कार्यकलापोंसे संसारमें अद्भुत उलट फेर हो रहे हैं, मनुष्यकी उन्नतिके नये नये रास्ते खुलते जा रहे हैं। यह शुभ लक्षण हैं।

मनुष्यके लिये विजय प्राप्त करनेकी सबसे बड़ी ताकतें दो हैं—पहली मन शक्ति, दूसरी तलवार। लेकिन मन शक्तिके सामने तलवारकी ताकत कमजोर साबित हो चुकी है—उस हालतमें कमजोर, जब कि मनुष्यका मन पूर्ण शिक्षत है, वह जीवनके असली रहस्योंको समझ चुका है।

चौंकिये नहीं, मनकी शिक्षायें अज्ञानताको नष्ट कर जीवन रहस्योंको वैसे ही प्रदर्शित करती हैं, जैसे सूर्य-किरणें उज्वलताओं द्वारा समस्त संसार को जगमगा देती हैं। आध्यात्मिक मनुष्य एक दिन वही हो सकता है, जो आज होनेकी इच्छा रखता है!

तुम्हारा शरीर कई हिस्सोंमें बँटा है। जैसे हाथ, पैर, नाक, कान, इत्यादि। मगर तुम्हारे पास मन एक ही हैं। तुम्हारे भविष्यकी सफल-तायें और तुम्हें अदृश्य शक्तियोंसे मिलानेवाली ताकतें—तुम्हारे मनमें छिपी

हैं। मन शक्तियों द्वारा तुम जो चाहो भविष्यमें बन सकते हो, जिस वस्तुको चाहो प्राप्त कर सकते हो। अमेरिकाके धनकुबेर राकफेलर एक दिन सड़कों-पर मामूली चीजें बेचते थे—आज संसारके धनी व्यक्तियोंमें उनका नाम पहले लिया जाता हैं। तुम स्वयं देखो, तुम्हारे एक साधारण दोस्त जिन्हें-कल बातें करनेका सलीका न था, आज अपनी स्पीचों द्वारा हजारों स्त्री-पुरुषों-को मुग्ध कर रहे हैं। क्यों? इसमें क्या रहस्य है? असलमें ये मनुष्य जिन्दगीके मूल रहस्योंको बहुत जल्द समझ गये। ये मन शक्तियोंका अध्ययन कर दिन बदिन जीवन संग्राममें आगे बढ़ते जा रहे हैं।

मनुष्य अपना ही दोस्त है, अपना ही दुश्मन।

यदि मैं तुमसे कहूं कि तुम, आर्थिक दुनियामें हेनरी फोर्ड, राकफेलर या निजाम हैदराबाद बन जाओ। साहित्यिक संसारमें शेक्सपियर बर्नार्डशा या रवीन्द्रनाथ टैगौरको तरह चमको; तो तुम फ़ौरन मेरी हँसी उड़ाओगे और कहोगे—"अजो छोड़िये यह चर्चा। कहाँ वे और कहाँ मैं! मैं कदापि इन महापुरुषोंका मुकाबला नहीं कर सकता।"

बस, यहीं तुम धोखा खा गये। मनके सन्देहने तुम्हें उठाकर पटक दिया। अब तुम उठनेका नाम नहीं लेते और अफीमचीकी तरह पड़े मिन-मिना रहे हो। कितनी बड़ी बुजदिली है यह!

तुम जो चाहो हो सकते हो, तुम्हारे लिये कोई बात असम्भव नहीं। तुम उन मनुष्योंसे बहुत बड़े हो, जिनका नाम इतिहासके पन्नोंमें चमक रहा है। हां, उनमें और तुममें इतना फर्क जरूर है कि वे तुम्हारी तरह गाफिल न थे। उन्होंने मनकी वैज्ञानिक ताकतोंको पूर्ण अध्ययन किया था। मनके

चढ़ाव उतार और उत्थान पतन हमारे दिमाग तथा स्वास्थ्यपर कितना गहरा असर डालते हैं, इसके यहां दो उदाहरण पेश करता हूंः—

मान लो, तुम्हारा कोई दोस्त कटोरा भर दूध तुम्हारे पास ले आया और बोला—"जनाब, इसे पी जाइये। इसमें मिश्री घुल रही है, केशरकी सुगन्ध है।"—उसे देखकर तुम्हारा मन ललचा उठेगा और तुम फौरन उसे पी जाओगे। थोड़ी देर बाद यदि मैं कहूं—"हुजूरने गलती की, दूधमें एक चूहा गिरकर मर गया था।"—तो? अब बताओ तुम्हारे मनकी क्या हालत होगी? सिर घूमने लगेगा। जी मिचलायगा और कै करनेकी इच्छा होगी।

दूसरी बात—

तुमने किसी बच्चेकी मांसे जाकर कह दिया—"गजब हो गया; तुम्हारा बेटा तालाबमें डूबकर मर गया।" अब देखो—मांके मनकी हालत! उसकी आँखोंके आगे अन्धेरा छा जायगा। वह छाती पीटने लगेगी और मारे गमके बेहोश हो जायगी। यदि उसी समय मैं वहां टपक पड़ूं और कह दूं—"आपका बच्चा जिन्दा है, लो,—वह आ गया।" तब? बताओ मांके मनकी हालत? वह मारे खुशीके उछल पड़ेगी और सारा गम भूल जायगी, दौड़कर बच्चेको छातीसे चिपटा लेगी, उसे चूमेगी और स्वर्गीय सुखका अनुभव करेगी।

तुम अपने ही मनको लो, जब तुम सङ्गीत सुनते हो तो मस्तीमें झूमते हो। मगर जब हाहाकार सुनते हो—तब मैं समझता हूं, थर्रा उठते होगे।

अपने गुस्सेपर गौर करो, जब तुम क्रुद्ध होते हो—तुम्हारे सरपर खून

और अत्याचारके भूत नाचने लगते हैं, तुम भयानकसे भयानक पाप कर डालते हो। लेकिन जब बहुत प्रसन्न रहते हो तब ? —मैं समझता हूं, तुम्हारे मनमें बड़ी फुरती होगी, तुम मनुष्यको प्यार करते होगे, तुम्हें संसार बड़ा सुन्दर दिखाई देता होगा।

असलमें यह सब मनके करिश्मे हैं। तुम मनको जिस रास्तेमें ले जाओगे, वह उसी रास्तेसे जायगा। बलासे वह रास्ता अच्छा हो या बुरा। अगर तुम्हारे मनमें अच्छी बातें दौड़ रही हैं, तो समझ लो तुम्हारा मन सफलताकी ओर जा रहा है। दिमागमें नयी-नयी शक्तियोंका जन्म हो रहा है। यदि उसमें बुराइयां भर रही हैं, तो पतनकी ओर जा रहे हो और तुम्हारा जीवन नष्ट होनेमें देर नहीं है।

मनके आन्दोलनोंको आंखे खोलकर देखो, उसकी आवाजोंको कान लगा कर सुनो। वह कहता है :—"ऐ मनुष्य ! तू मुझे अच्छे रास्तेसे ले चल। मैं तुझे जीवनमें श्रेष्ठ उपहार भेंट करूँगा।"

जिन मनुष्योंके आंख, कान खुले हैं, वे मनकी आवाजोंको देखते हैं, सुनते हैं और अच्छी बातोंको ग्रहण करते हैं। जो अन्धे और बहरे है, वे मनकी जरा भी परवाह नहीं करते। वे बुराइयां ग्रहण करते जा रहे हैं। और उन्हें बुराइयोंमें ही आनन्द आता है।

हमें उचित है, हम अपने मनमें जरा भी उदासी न आने दें। उसे प्रसन्नताओंसे भर दें, ऊँचेसे ऊँचा चढ़ायें और अपनी विचार शक्तियोंको उच्च अभिलाषाओंके साथ खुलकर खेलने दें। आत्मिक शक्तियोंका उदय होना

आकर्षण-शक्ति

भाग्यकी बात है; यह भाग्य मनुष्यके हाथमें है, वह जब चाहे बना बिगाड़ सकता है।

अपनेको देखो। अपने मन तथा शरीरको देखो। जिस दिन तुम मानसिक शक्तियोंके मास्टर हो जाओगे, उस दिन तुम्हें अपना भविष्य अत्यन्त उज्वल दिखाई देगा। उस उज्वल प्रकाशमें तुम स्वयं जज बनकर अपना फैसला लिखोगे—"मैं स्वयं अपने भाग्यका विधाता हूं। सफलतायें मेरे दाहिने-बायें चलती हैं।"

तुम्हारी जिन्दगीका सम्पूर्ण उत्तारदायित्व मनकी संचालन क्रिया पर निर्भर है। इसलिये मनको नये आकर्षक और अच्छे कार्योंकी तरफ दौड़ाओ। उसमें नयी-नयी आशाओंका जन्म होने दो, आकर्षक अभिलाषाओंको चक्कर काटने दो।

यह सही और दुरुस्त है कि तुम मनकीखेतीमें जिन बीजोंको बोओगे—भविष्यमें उन्हींको काटोगे। इसलिये मनकी खेतीमें बबूल न बोकर फूलोंके बीज बोओ। तुम्हारी जिन्दगी खिल उठेगी और उसकी खुशबूसे सारा संसार महँक उठेगा।

धनसे ही कोई मनुष्य—मनुष्य नहीं हो जाता। मनुष्य वे हैं, जो मन शक्तियोंके बादशाह हैं। संसारकी समस्त शक्तियां जिनके आगे नतमस्तक हैं।

हम दुख-सुखकी आंधियोंपर चल रहे हैं, मगर मन हमारे हाथमें है। समुद्रमें नौका डूब गयी, यह सोचकर जिन्दगी क्यों डूबा दें। तैरनेसे किनारा अवश्य मिलेगा।

मनुष्य अन्तर्जगतका कर्ता है। अपने वैभव पाकर कौन नहीं सुखी होता ? मनकी मिट्टीमें जो फूल खिल रहे हैं, मनके आशाका जो चन्द्रमा उदय हो रहा है, उसके मालिक और संचालक स्वयं हम हैं। उसके आनन्दों को हमारे सिवा कौन भोग सकता है ?

अपने कानोंमें इन आवाजोंको बिजलीकी तरह कौंधने दो और साथ ही जीवन-डायरीमें नोट कर लोः—"मैं जमीन पर चलते हुए मनको आसमानमें उड़ाकर देखूंगा—दुनिया किधर दौड़ी जा रही है, इस दौड़में मेरा क्या स्थान है ? मैं आगे हूं या पीछे।"

—

घुमक्कड़ मन

तुम कोई काम करने जाते हो उसमें सफलता नहीं मिलती, तुम्हारी सारी दौड़ धूप बरवाद हो जाती है। तुम फेल होकर भाग्यको कोसते हो, ज्योतिषियोंको हाथ दिखाते हो, पण्डितोंसे पूजा पाठ कराते हो। फिर भी कुछ नहीं होता। क्यों?—इसमें क्या रहस्य है?

मैं कहूंगा—तुम्हारा मन घूमता है। तुम जीवनके कानूनोंको नहीं जानते।

तुम मनको पूर्ण रूपसे काबूमें कर उसे शिक्षित क्यों नहीं बनाते? अशिक्षित और शिक्षित मनमें उतना अन्तर है, जितनाकि चांदनी और अन्धकारमें। शिक्षित मनके मनुष्य मनुष्यत्वके गौरवको नहीं खोते। इनके कार्योंमें पशुओंकी प्रकृति नहीं होती। वह अपनेको क्षणस्थायी जल-बुद्बुद् नहीं समझते, वे कहते हैं—मैं अनन्त आकाशका चन्द्रमा हूं। उनमें यह भद्दी भावना भी नहीं होती कि जिन्दगी चार दिनकी है। वह अपने जीवनको चमत्कारोंका प्रकाश मानते हैं। उनकी अन्तिम गति श्मशान या समाधि क्षेत्रोंमें नहीं होती, वह अंतर्देवताके चरणतलोंमें अमर हो जाते हैं। सफलता ऐसे ही मनुष्यको मिलती है।

मेरे एक बिगड़े दिल दोस्त हैं। किसी फिल्म कम्पनीके एक्टर। एक

दिन आप मस्तीसे झूमते हुए मेरे पास आये और बोले—"मैं आपकी जिन्दगीका बीमा करना चाहता हूं। मैंने एक नामी बीमा कम्पनीकी एजेन्सी ली है।" मैंने इनकार कर दिया, क्योंकि मेरा जीवन-बीमा कई वर्ष पहले हो चुका था। मेरे मित्र जरूरतसे ज्यादा निराश हो गये, शायद नाराज भी क्योंकि मैंने हफ्तों उनकी सूरत नहीं देखी।

एक दिन मैं विक्टोरिया मेमोरियलके बगीचेमें खिले हुए फूलोंका रस ले रहा था। अचानक सामनेसे एक गोल चीज आती दिखाई दी। मैंने ध्यानसे देखा; वह कोई आदमी था। थोड़ी देर बाद सामने आया—मैंने पहचाना। वह मेरे वही दोस्त थे, जो मेरी जिन्दगीका बीमा कराना चाहते थे।

हँसी-मजाकके बाद मालूम हुआ, आप इन दिनों रिक्शेका कारबार करते हैं। फिलहाल किसी मोटर कम्पनीकी एजेन्सी लेनेकी फिराकमें हैं। कुछ दिनों बाद मैंने उन्हें चायकी एक छोटी दूकानपर बैठे देखा। मुझे देखते ही खिल गये और चश्मेवाली नाक ऊँची उठाकर बोले—"आजकल इसी पेशेमें हूं। अब एक अखबार निकालनेका इरादा है। कभी-कभी आप भी लेख लिखते रहियेगा।"

इस तरह मेरे इस सनकी दोस्तने एक वर्षके अन्दर कई अवतार ले लिये। बीसों कारबार किये और छोड़े। उन्हें किसी काममें सफलता नहीं मिली। आजकल वह दाने दानेके मुहताज हैं। कारण साफ़ है, उनका मन एक मिनटके लिये भी कहीं नहीं टिकता। वह कभी नौकरीकी तिकड़म लगाते हैं, कभी शेयर मार्केटमें सट्टेका प्रोग्राम बांधते हैं। एक

काम आरम्भ करते हैं, दूसरा छोड़ते हैं और तीसरेके इश्कमें बेजार हो जाते हैं। उनका मन कभी टूटी नौकाकी तरह संसार सागरमें डूबता उतराता है, कभी आंधीकी तरह आसमानमें उड़ता है।

यह क्यों? उनकी शक्तियां क्यों फेल हो रही हैं? इसका प्रधान कारण यह है कि उनका मन घूमता है। वह अपने मनको काबूमें नहीं रख सकते। उन्हें दैनिक कार्योंमें जरा भी दिलचस्पी नहीं रहती।

ऐसे घुमक्कड़ मनके मनुष्योंकी संख्या संसारमें बहुत ज्यादा है। ये मनुष्य असफलताओंके लिये स्वयं अपनेको अपराधी नहीं ठहराते। भाग्यको दोष देते हैं, ईश्वर पर कुढ़ते हैं और निराशाके अन्धकारमें मौतको टटोलते हैं।

मैं पूछता हूं, तुम मन-शक्तियोंको जगाते क्यों नहीं? अच्छे काम कलके लिये छोड़ देते हो, आज ही क्यों नहीं करते? कल शायद तुम्हारा मन बदल जाय तो?—निःसन्देह तुम निशानेसे चूक जाओगे।

तुम्हारे मनमें वे अद्‌भुत शक्तियां हैं, जिन्हें तुमने न तो सोचा है, न देखा है। यह सच है कि मनुष्यके मनमें एक बार ऐसा विद्रोही समय आता है, जब मानसिक शक्तियोके आनन्दको लेकर इस तरह मुग्ध हो जाता है कि उस समय न तो उसे कोई चिन्ता रहती है, न फिक्र। उसे जीवनका अनन्त प्रेम विश्व-धारामें तिनकेकी तरह बहा ले जाता है। उस समय वह अपनेको पहचानता है, और संसारके समस्त आनन्दोंको प्राप्त करता है।

तुम्हारे भविष्यकी आशायें तुम्हारे मनके अन्दर छिपी हैं। यदि तुम संसारमें सफलता चाहते हो, तो मनको घूमनेसे रोको। जिस कामको करो, उसमें ज्यादेसे ज्यादा दिलचस्पी उत्पन्न करो, उसको हरेक बारीकीको समझो और उसकी गहराई तक पैठ जाओ। दूसरा काम तबतक शुरू न करो, जब तक कि पहला पूर्ण रूपसे सफल न हो जाय।

रूप, रस और गन्धको लेकर संसारकी रचना हुई है। मनुष्य इसके असीम सौंदर्यका प्यासा है। मगर उसकी मंजिल कांटोंसे भरी हैं। रोग, शोक, तथा विपत्तियां उसे विश्वका असीम आनन्द उपभोग करनेमें पद-पदपर बाधायें डालती हैं। यदि हम इन बाधाओंको दूर नहीं करते, तो हमारा जीवन एक अभिशाप बन जाता है। हमारे लिये संगीतमुखर लीला भूमि श्मशानके रूपमें पलट जाती है और हम जीवन संग्राममें हर समय हारते जाते हैं।

मनमें किसी बातकी अभिलाषा होते ही यह न समझ लेना चाहिये कि फौरन उसकी पूर्ति हो जायगी। जिस अभिलाषामें शक्ति नहीं, उसकी पूर्ति असम्भव है। यह नहीं कि आज तुम्हारे मनमें एक अभिलाषा उठी और कल गायब! ऐसी क्षणिक अभिलाषाको जन्म देकर मानसिक शक्तिको नष्ट न करो! तुम्हारे मनमें स्थायी अभिलाषा क्या है? इसे सामने रखकर उसकी पूर्तिका प्रोग्राम बनाओ। स्वयं अपनेको और अपने भविष्यको देखो, अपनी गलतियोंका संशोधन करो।

मनकी एकाग्र शक्तियोंने आज कितने ही फकीरोंको अमीर बना दिया। कितने ही मूर्खोंमें विद्वत्ताकी चमक आ गयी, नीचे गिरे हुए ऊपर चढ़ गये।

दुःख और सुख, अच्छा और बुरा, सफलता तथा असफलता मनुष्यकी मन-शक्तियों पर निर्भर है। मनको कब्जेमें रखकर तुम संसारमें सिर्फ सफल व्यक्ति ही नहीं कहे जा सकते, बल्कि बहुत वर्षों तक जीवित रह सकते हो। तुम जो जवानीकी उम्रमें बूढ़े हो गये हो—इसका प्रधान कारण यह है कि तुम्हारा मन हरदम चलायमान रहता है—तुम कभी उसे कब्जेमें नहीं कर पाते।

मनमें एकाग्र शक्ति प्राप्त करने वाले मनुष्य संसारमें किसी समय असफल नहीं होते। मैं समझता हूं, तुम इस विषयको गहराईके साथ अध्ययन करोगे और अपने व्यक्तिगत सौंदर्यको बढ़ानेमें जरा भी देर न करोगे!

स्वास्थ्य, प्रसन्नता तथा सफलता मनुष्यका जन्म सिद्ध अधिकार है। वह मानसिक शक्तियोंसे अपने शरीरको बहुत दिनों तक कायम रख सकता है!

एकाग्रता

एकाग्रता के माने हैं—गुप्त ध्यान। गुप्त ध्यानसे सत्य प्रेम मिलता है, सत्य प्रेमसे अभिलाषाओं पर विजय होती है। तुम एकाग्रता द्वारा उस अनन्त शक्तिके अटूट भंडारके साथ मिल जाते हो, जिससे इस ब्रह्माण्डकी उत्पति है। यह सम्बन्ध स्थापित होते ही तुम शक्तिशाली बन जाते हो। सिद्धियां एकाग्रतासे प्राप्त होती हैं और तुम्हारे मनमें जो संकल्प उठते हैं, वह तुरन्त सिद्ध हो जाते हैं।

एकाग्रतासे ऐसी कोई वस्तु नहीं, कोई घटना नहीं, जो इसके द्वारा प्राप्त या सम्भव न की जा सके। दूरदृष्टि, दूरश्रवण शक्ति, पर विचार बोध, भविष्य ज्ञान, आकाशभ्रमण, भारीसे भारी हो जाना, हलकेसे हलका हो जाना इत्यादि एकाग्रताकी सिद्धियां हैं। तुम एकाग्रता द्वारा असत्से सत्य, अन्धकारसे ज्योति और मृत्युसे अमृतका अविष्कार करो। ब्रह्मा इसीसे सृष्टिकी रचना करते हैं, शंकर इसी शक्तिसे संहारका नाटक खेलते हैं।

परन्तु हम मनुष्य हैं। यह हमारी मूर्खता है कि जहां हम मनुष्योंकी उन्नतिके लिये देवी देवताओं या प्राचीन ऋषि मुनियोंका उदाहरण पेश करते हैं, लोग हँसी उड़ाते हैं और इस तरहके उपदेश देनेवालोंको उल्लू बनाते हैं। ऐसे मनुष्य हृदयके दुर्बल होते हैं। ये अपनेको दुनियामें बलवान नहीं, कम-

जोर साबित करते हैं। जमानेको दोष देते हैं। मगर जमानेको पलटनेकी कोशिश नहीं करते।

हम मनुष्य हैं, लेकिन हमें देवी देवताओं और ऋषि मुनियोंके गुणोंको प्राप्त करने का पूरा अधिकार है। इस अधिकारसे हम जो आज हैं, भविष्यमें उससे बहुत अच्छे हो सकते हैं; और एक दिन बहुत अच्छेसे सर्व श्रेष्ठ बन सकते हैं।

तुम्हारी विजय शक्ति है—मनकी एकाग्रता। यह शक्ति मनुष्य जीवनकी समस्त ताकतोंको समेटकर मानसिक क्रांति उत्पन्न करती है। इसी क्रांतिमें तुम्हारा जीवन पलटता है और मनोकामनाएँ पूर्ण होकर तुम्हारे सामने खुद प्रकट हो जाती हैं। उस समय तुम अपने लिये उतने ही बड़े हो जाते हो, जहां तक की पहुंचनेकी कोशिश करते हो। तुम उतने ही लम्बे चौड़े हो जाते हो जितनी कि तुम्हारी कामनाएँ हैं।

यह एक ऐसा वैज्ञानिक तत्व है, जो एक दिन मुर्दा जीवनमें अमृतकी वर्षा कर सकता है। बाधा विपत्तियोंको छिन्न भिन्न कर सकता है। रास्तेके कांटें को फूलोंमें बदल सकता है। तुम अपने मनको इन मनोवैज्ञानिक कानूनोंमें लगा दो—अद्भूत चमत्कार देखनेको मिलेंगे।

आज एकाग्रताके बलसे संसारके शक्तिशाली मनुष्य दुनियामें बड़ेसे बड़े काम कर रहे हैं, ज्यादेसे ज्यादे रुपये कमा रहे हैं और अपनी उज्बल कीर्तियोंको दशों दिशाओंमें चमका रहे हैं। हम उनकी वैज्ञानिक ताकतोंको देख कर चौंकते हैं, उनके आविष्कारों पर आश्चर्य करते हैं, और अपने लिये कुछ नहीं कर सकते। अफसोस !

हमारी बेवकूफियोंका प्रधान कारण यह है कि हम भाग्य और कमजोरियों के गुलाम बन गये हैं। हमारे अन्दर पशुओंकी अज्ञानता घुस गयी है।

आँखें खोलदो। संसारको तरफ देखो। वे मनुष्य जिनकी जिन्दगी सफल है, जिनका जीवन धन्य है, एकाग्रतासे अपनी अभिलाषाओंको मुट्ठीमें करते जाते हैं। आज चाहे वे जागते हों या सोते, यात्रा करते हों या घरमें बैठे हों—वे मन शक्तियोंके मास्टर हैं। वे जिस रूपमें जहां चाहते हैं, भाग्य चक्रको घुमाते हैं और युगांतरकारी सफलतायें प्राप्त करते हैं।

एक धान कूटनेवाली स्त्री एक हाथसे ढेंकी चलाती है, दूसरेसे उछलते हुए धानोंको समेटकर ऊखलमें डालती है, साथ ही ग्राहकोंके साथ धानका मोल तोल भी करती जाती है; परन्तु यह सब होने पर भी ऊखलमें पड़ कर कहीं हाथ में चोट न आ जाय, वह पूर्ण सतर्कताके साथ अपने मनको प्रधान कार्यमें एकाग्र रखती है। इसी तरह तुम अपने संसारिक कार्योंको करते हुए भी अपने प्रधानकार्यमें मनको एकाग्र रखो। श्री कृष्ण भगवान गीतामें कहते हैं—"इंद्रियोंमें मन मैं हूँ।" मन जिस पदार्थको देखता है, उसीके आकारका हो जाता है। तमोगुणी पदार्थका ध्यान करनेसे तमोगुणी, सत्व-गुणी पदार्थोंका ध्यान करनेसे सत्वगुणी हो जाता है। इसी लिये मनको बुरे कार्योंमें न दौड़ाकर सुकार्योंमें एकाग्र करो। जीवन विजयकी यह महान मन्त्र शक्ति है।

मनकी एकाग्रता मनुष्य जीवन पर कैसा गहरा असर डालती है, ऐसी दो घटनायें मैं तुम्हारे सामने पेश करता हूँ।

एक गृहस्थने अपने कमरेमें एक कुमारीका सुन्दर चित्र टांग रखा

था। उनसे मिलने वाले एक सज्जनने उस चित्रको देखकर कहा—"आपकी पुत्री—जिसे मैंने अभी देखा है—का यह चित्र बिल्कुल जैसाका तैसा है। एकदम हूबहू—वैसे ही हाथ पांव, वैसा ही रूप रङ्ग। आपने इसे किसी कुशल चित्रकारसे बनवाया था—क्या?" गृहस्थने उत्तर दिया—"यह चित्र मेरी पुत्रीका नहीं है। हाँ, इस चित्रके अनुसार ही मेरी पुत्रीकी रचना हुई है।" इसपर आगन्तुकने विस्मित होकर कहा—"आप क्या कह रहे हैं? इस चित्रके अनुसार आपकी पुत्रीकी रचना हुई! कोई शिल्पी या मूर्त्तिकार नमूनेके अनुसार जिस तरह सुन्दर मूर्त्ति बना देता है उसी तरह क्या आपने भी इस चित्रानुसार अपनी पुत्रीका शरीर बना लिया है?" गृहस्थने जवाब दिया—"मेरी पुत्री जब गर्भमें थी, तब उसकी माताने इस चित्रका एकाग्रता पूर्वक ध्यान किया था तथा इसी तरहकी सुन्दर आकृतिवाली पुत्री मेरे भी हो, ऐसी दृढ़ इच्छाकी थी। इसीके परिणामस्वरूप इस चित्रके अनुसार हमारी कन्या हुई।"

दूसरी घटना यों है—

"एक स्त्रीका सद्गुणी बालक उसकी बहिनके यहाँ कुछ दिनों तक रह चुका था। इस बालकके चाल चलन और व्यवहारोंपर मुग्ध होकर वह स्त्री इस बालकको अपने पुत्रसे ज्यादा प्यार करने लगी और बार बार उसी बालकका स्मरण चिन्तन करती रही। कुछ दिनों बाद उस स्त्रीके एक बच्चा हुआ, जो रूप रङ्ग आदि सभी बातोंमें उस बालकसे इतना मिलता था कि जब वह आठ वर्षका हुआ, देखनेवालोंको दोनों बालक सहोदर भाईके समान दिखाई देते थे।"

ऐसी घटनायें रोज घटती हैं। अब हमें ध्यानपूर्वक यह देखनेकी जरूरत है कि तुम घूमते मनको किस तरह कब्जेमें कर "एकाग्रता" प्राप्त कर सकते हो। रास्ता साफ है। पहले तुम मनमें यह तय करलो कि हम क्या चाहते हैं, हमारा उद्देश्य क्या है? जब इसका निर्णय हो जाय, तब पूर्ण शक्तियोंके साथ आगे बढ़ो। मान लो, तुम अपने खजानेमें सोनेका ढेर देखना चाहते हो, तो तुम्हारा पहला कर्त्तव्य यह है कि तुम घूमते मनको काबूमें करो। एक मनसे सोनेके स्वप्न देखो, सोनेकी कल्पनायें करो—यहां तक कि अपनेको खुद सोना बना डालो, दूसरी अभिलाषाओंको पास न फटकने दो—फिर देखो चमत्कार; एक दिन तुम्हारे खजानेमें सोना ही सोना दिखाई देगा।

हम लोगोंमें एक छोटीसी कहानी बहुत मशहूर है—जङ्गलमें एक शिकारी धनुषकी डोरी ठीक कर रहा था। वह अपने काममें इसकदर एकाग्रचित था कि एक बड़ी फौज उसी रास्ते निकल गयी। फौजके चले जानेके बाद वहाँ एक सन्यासी आया। उसने शिकारीसे पूछा—"क्योंजी इधर होकर अभी फौज गयी है न?" शिकारीने कहा—"नहीं।" संन्यासीने शिकारीको अपना गुरू बनाया, क्योंकि वह अपने कार्य्यमें इतना दत्तचित रहनेकी शक्तिवाला था कि फौज निकल गयी—मगर उसे पता तक नहीं।

तुम अपने काममें शिकारीकी तरह तल्लीन रहो और याददास्तके लिये इस कहानीको नोट कर लो।

यदि तुम्हारा मन घूमता है, बहुत कोशिशें करने पर भी तुम उसे कब्जे

में नहीं कर पाते—तो फुरसतके समय कोई उपन्यास पढ़ो, कहानियोंकी पुस्तकें ज्यादा लाभदायक होगीं। जब इनमें आनन्द आने लगे, तब क्रमशः आध्यात्म, दर्शन और उपनिषद्की ओर बढ़ो। संगीतसे प्रेम बढ़ाओ। जादूके खेल, श्रेष्ठ फिल्में और भावपूर्ण नाटक देखो। अपने अन्दर ज्यादेसे ज्यादा दिलचस्पियां और प्रसन्नतायें उत्पन्न करो। एकाग्र शक्ति बढ़ानेकी यह सुनहरी कुंजियां हैं।

यदि तुम एकाग्रचित्त हो रहे हो तो इसका यह मतलब हुआ कि अपने ऊपर जादू कर रहे हो, गुप्त शक्तियोंको जगा रहे हो और सफलताको सीढ़ियों पर चढ़ रहे हो !

—*०*—

आनन्दमय जीवन

चिन्ता, उदासी, बेचैनी और निराशा,—ऐसी बीमारियाँ हैं, जो मनुष्य-की मानसिक शक्तियोंको नष्ट कर देती हैं—उसका जीवन अन्धकारसे घिर जाता है, स्वभावमें चिड़चिड़ाहट आ जाती है और वह जरा जरासी बातपर अनर्थकर बैठता है।

मैं पूछता हूँ, तुम इन बीमारियों को मनमें स्थान क्यों देते हो ? इन्हें फौरन हटानेकी फायदेमंद दवा है—आनन्दमय जीवन। वह आनन्दमय जीवन, जिसके सुखका संगीत है—सफलताओंका मधुर मिलन। जिस दिन तुम आनन्दके सौंदर्यसे अपने प्राण मिला लोगे; तुम्हें कोई पाप-ताप न जला सकेंगे, तुम कालचक्रके महासमरमें विजयी होगे और हमेशा जवान रहोगे।

यदि दुनिया तकलीफोंसे भरी है तो भरी रहे। पर इसी कारण तुम निराश न हो। अनन्त आनन्दमय जीवनका जो स्रोत तुम्हारे चारों ओर प्रवाहित हो रहा है, उसमें तुम्हारा स्थान एक तरङ्गके समान है। इसलिये संसारके दुःखोंको अपना दुःख समझना, हृदयमें सहानुभूतिके भाव उत्पन्न करना तुम्हारा धर्म है। आदर्श पुरुष वही है जो दूसरोंको दुखी देखकर या स्वयं दुखपाकर मुखसे 'आह' नहीं निकालता और जीवन-यात्रामें असत्यका

सहारा नहीं लेता। तुम्हें अपना स्वभाव कुछ ऐसा बना लेना चाहिये, जिसकी बदौलत संसार सदा सुन्दर और आनन्दमय दिखाई दे।

सत्यकी ओर देखो, संसारकी ओर देखो ओर देखो अपनी अन्तरात्माको। वह कौनसी वस्तु है, जो तुम्हारे जीवनको संचालित करती है? समस्त-नीति और उपदेशोंमें वह कौनसी प्रेरणा है, जो मानव-समाजको नियन्त्रितकर रही है? मैं 'जीवित रहूँ, अपनेको ऐश्वर्यमण्डित करूँ और संसार पर प्रभुत्व कायम करूँ'—यही तो मानव हृदयकी सच्चो आवाज है। यदि यह नहीं, तो और कौनसी वस्तु उसमें शेष है, कोई बताये तो?

जरा देखो—हमारा हर रङ्ग मस्तीका मयखाना है। हमारी हर उमंग हाथोंमें मस्तीका प्याला लिये नाच रही है। हम अपने मुस्कराते होठोंपर कामनाकी प्यास लेकर उसे मस्तोके साथ पियेंगे। मनमें यही क्रांतिकारी तूफान आने दो। इस सनकमें तुम वही कीमती चीज प्राप्त करोगे—जिसे बरसोंसे खोज रहे थे!

आनन्दमय संसारमें हमारे लिये सुखका भण्डार सब समय खुला है, मगर हम अपनी शानमें इस कदर चूर हैं कि उनकी तरफ हमारा ध्यान ही नहीं जाता। यदि हम उनके साथ हिलमिल जायं, तो उनके सौंदर्यसे हमारा जीवन जगमगा उठे और हमारी सफलताओंका सूर्योदय हो जाय।

तुम प्रसन्नताओंको ढूँढ़ो। वे झुण्डको झुण्ड तुम्हारे पास घूम फिर रही हैं। ठीक सोचो, सही रास्तेसे चलो, छोटीसे छोटी वस्तुको स्वीकार करो—बड़ी चीजें खुद-ब खुद तुम्हारे पास दौड़ी चली आयेंगी।

आनन्दमय जीवन

जिस आनन्दको पाकर मनका समस्त अन्धकार दूर हो जाता है, संसारके प्रत्येक मनुष्य सुन्दर दिखाई देते हैं, हृदयमें सहृदयता जन्म लेती है, तुम्हें वही आनन्द प्राप्त करनेकी जरूरत है।

सच्चा आनन्द ऐसा है, जिसका असर मनुष्यकी नसों व मांसपेशियोंपर पड़ता है। अन्य नशीली वस्तुओं में और आनन्दके नशेमें यह भेद है कि इसका नशा शरीर में अपने आप उत्पन्न होता है, और सौंदर्य भावनाओंसे उत्तेजित होकर दिन-ब-दिन आगे बढ़ता है।

मगर सच्चा आनन्द कहते किसे हैं? वह हमें कहांसे प्राप्त होता है? मैं कहूंगा मनुष्यके प्रेमसे।

तुम सुन्दर चीजोंको देखो। अपने चारों ओर सौन्दर्यका वातावरण उत्पन्न करो। सौन्दर्यके उपासक बनो। सौन्दर्यका सच्चा आनन्द इन्सान ही ले सकते हैं, हैवान नहीं।

यदि तुम्हें आनन्द नहीं मिलता, तो जङ्गलों पहाड़ों और बाग बगीचोंकी सैर करो, हरियालीका आनन्द लूटो, रङ्गीन फूल-पत्तियोंका अध्ययन करो किस्म-किस्मके जानवरोंको देखो, चिड़ियोंका गाना सुनो, नदी किनारे टहलो और समुद्रकी लहरोंमें अपनी उमंगें तैरने दो।

नवीन श्याम शोभासे संसार उन्मत्त हो रहा है, सूर्यकी प्रत्येक किरणके साथ सौन्दर्यकी लहर उठरें रही हैं, हवाके प्रत्येक झोंकेके साथ सौरभकी तरंगे तरंगित हो रही हैं। प्राकृतिक दृश्योंके कण-कणमें आनन्द है। आनन्दकी सृष्टि करो। तुम्हारी इस साधनामें मानव-जातिका महा कल्याण है।

आकर्षण-शक्ति

मनुष्य मात्रसे प्रेम करो। इस प्रेममें वह जीवन है—जिसमें विरह नहीं। एक मनुष्य जाता है, सूने सिंहासन पर दूसरे आदमीका राजतिलक होता है। वह भी जा सकता है, मगर मनुष्य जातिका संसारसे लोप होना असम्भव है। इस लिये कहता हूं—मनुष्य मात्रसे प्रेम करो, इस प्रेममें विरह नहीं है। यदि तुम समस्त मानव जातिको, समस्त संसारको अपने विशाल हृदयमें स्थान दोगे, तो तुम्हारा जीवन स्वर्गीय आनन्दसे भर जायगा। वह स्वर्गीय आनन्द शत-शत फूलोंमें खिल रहा है, उषाकी स्वर्ण रेखाओंमें नाच रहा है।

तुम इस आनन्दकी खोजमें पागल हो जाओ। तुम्हारे रास्तेमें चाहे बिजली कड़कती हो, पत्थर बरसते हों—पीछे न लौटो, न लौटो, न लौटो। शक्तियां जागरणकी तेजस्वी तरंगे हैं। इन तरंगोंके समुद्र-मन्थनसे तुम्हें जो अमृत प्राप्त हो, उसे निर्भीकतापूर्वक पी जाओ। तुम्हारे जीवन-प्रदेशमें नवयुग आरम्भ होगा।

आनन्द मनुष्यका हृदयहारी क्यों है? इस प्रश्नके अनेकों उत्तर हैं। जो चीज हमारे लिये संसारमें नहीं मिलती, आनन्दमें उसे हम प्राप्त कर लेते हैं जो चीज कहीं नहीं दिखायी देती—आनन्दकी दुनियामें हम उसीके दर्शन करते हैं।

दीपक जैसे घरको जगमगा देता है। आनन्द उसी तरह जीवनको उज्वलतासे भर देता है। आनन्दकी अनुभूति जीवनकी समस्त जड़ता मिटा देती है। आनन्द हमारे लिये वह पारस है, जिसके छूनेसे जीवनकी प्रत्येक वस्तु सोना बन जाती है।

तुम आनन्दके बलसे बलवान होकर संसारकी अशान्तिको दूर करो। भूमण्डलमें स्वर्ग राज्यकी स्थापना करो। हम लोगोंमें अज्ञानता भरी है कि संसार दुःखमय है। इन दुखोंका कारण है हमारी इच्छा। जबतक हम अवनी इच्छाओंको सुन्दर नहीं बनाते—दुखोंसे उद्धार पाना कठिन है।

बूंद-बूंदसे घड़ा भरता है। कण-कण भापसे मेघोंकी सृष्टि होती है। क्षुद्रजल विन्दुको लेकर महासिन्धुकी उत्पति हुई है—तुम जरा-जरा आनन्द संचित कर जीवनको आनन्दोंसे भर दो। आनन्दमय जीवनमें रूप, यौवन, प्रफुल्लता, सुख और आशाएँ सब आ जाती हैं। मनुष्य-जीवन धन्य हो जाता है।

जिस तरह सधवा स्त्रीके सोहाग सिन्दूर बिना बाहरो चमक-दमक और गहने-कपड़ोंकी शोभा नहीं बढ़ती, उसी तरह बगैर आनन्दमय जीवनके मनुष्यकी कहीं कद्र नहीं होती। आनन्दकी खोज ही मनुष्यका सौभाग्य है। बेशकीमती कपड़े या श्रृङ्गार तब तक फोके हैं, जब तक तुम्हारे हृदयमें सच्चा आनन्द न हो, शरीरमें शक्ति न हो, चेहरेमें चुम्बक न हो। तुम्हारे आनन्दमय जोवनमें उस आकर्षणकी आवश्यकता है, जो चुम्बक बना दे। फिर तुम जिस सभामें जाओ, जिस एकान्तमें बैठो-लोग तुम्हारी तरफ खिंचे बिना न रहेगें।

क्या जीवनका ऐसा आकर्षण तुम्हारे पास है? क्या तुमने आइनेमें अपना रूप-रंग देखा है? क्या तुम्हें सन्तोप है कि तुम्हारे शरीरमें इतना लावण्य है कि तुम दूसरों पर मोहनो डाल सकते हो? यदि नहीं, तो समझ लो तुम्हें ऐसे आनन्द साधनकी आवश्यकता है, जिससे तुम्हारे स्वभावपर

लोग मुग्ध हो जायँ, तुम्हारे शरीरमें अद्भुत् चमक पैदा हो। तुम जहाँ जाओ जिससे भी मिलो—हरेकको काबूमें कर लो, और तुममें सच्चा आत्म विश्वास उत्पन्न हो जाय।

आनन्दकी खोजके लिये तुम्हारी स्वाभाविक गति जिधर जाना चाहती है, उसे उधर ही जाने दो। काल्पनिक धर्मका भार डाल कर जीवनको पंगु न बनाओ। मनुष्यके अन्तरधर्मके खिलाफ पाप-पुण्य, नीति-अनीतिका पचड़ा सबसे बड़ा अपराध है।

आज कल कुछ मनुष्योंमें यह भावना घुस गयी है कि सच्चा आनन्द विलासितासे हासिल होता है ; किन्तु यह भूल है। विलासिता जीवनमें सच्चे आनन्दका भाव नहीं जगा सकती। विलासकी चमक-दमक बाहरी ऐश्वर्यो की क्षणिक आभा है, उसका मानसिक आनन्दसे स्थायी परिचय नहीं प्राप्त होता। विलासी मनुष्योंके हृदय खोखले वृक्षके समान हैं, जिसमें कितने हो जहरीले कीड़ोंका अड्डा होता है और उनकी क्रीड़ा-कल्लोल द्वारा मनुष्य जीवन की जड़ अपने हाथों काटता है।

जो मनुष्य विलासिताके जहरीले वायुमण्डलसे दूर हैं, सच्चे आनन्दके वही साधक हैं, और मनुष्य जातिके दिव्य नेत्र हैं। वह चाहे बाहरी बातोंमें तुम्हें पाषाण दिखाई दें, मगर उनका अन्तर्जगत फूलकी तरह कोमल है, उनके हृदयमें भोली अबलाओंके भोलेपनका शीतल झरना झरता है। उनकी इच्छाएँ स्वभावतः संसारके दुःखोंको नाश करती हैं, उनकी कामनाएँ संसारकी हितसाधिनी हैं, उनकी आशाएँ वसन्त जैसी प्रिय संवाददायिनी और कोकिल-कण्ठी जैसी पीयूषवर्षिणी हैं।

आनन्दमय जीवन

तुम जीवनके मानसिक बोझेको बहादुर मजदूरकी तरह ढोओ। मनुष्य गौरवको चमकाओ। सड़कोंपर आजादी और मस्तीके साथ, छाती निकाल कर चलो। खूबसूरत मकानों, विशाल अट्टालिकाओं, बाग बगीचों, पार्कों और सुन्दर वस्तुओं को देखो, तथा मनमें इस बातकी सनसनी फैलने दो—यह सब हमारे हैं, इन सबका मालिक मैं हूं।

मैं ऐसा क्यों कह रहा हूं—जानते हो? मनुष्य जीवनका तत्व यह है कि वह जो कुछ देखता सुनता है, और उसे गहराईसे सोचता है—भविष्य में वही उसका भाग्य बन जाता है और वह उसी भाग्य द्वारा अपनी जीवन नौकाको संसार सागरमें खेता चलता है।

आओ हम सब एक साथ मिलकर आनन्दमय जीवनकी उपासना करें हमारा भविष्य उज्ज्वल, अत्यन्त उज्ज्वल है!

——•——

विलपावर

"विलपावर !"— नाम ही सनसनीखेज है। एक-एक अक्षर मानो बिजली का प्रकाश है। एक-एक शब्द मानो ज्वालामुखी का रेशमी धुआँ है।

यह क्या चीज है, ?—यह है तुम्हारा "दृढ़ संकल्प", "आत्मबल"। मनोवैज्ञानिक इसे 'विलपावर' कहते हैं।

यह वो चीज है, जो मुर्दोंमें नवजीवन संचार करती है। इसे पाकर मनुष्य आकाश-पाताल एक कर सकता है। भाग्यको जिस तरफ चाहे घुमा सकता है। उसके लिये दुनियांमें कोई काम असम्भव नहीं। वह कहता है "भाग्य सैनिक है, मैं सेनापति।"—"भाग्य गुलाम है, मैं बादशाह !" मनुष्य की मानसिक चिन्ताओं, और मुसीबतोंको जड़से काटकर फेंक देना 'विलपावर' का पहला काम है। चाहे तुम लाख विद्वान, चतुर या बुद्धिमान हो, परन्तु यदि तुममें 'विलपावर' का अभाव है, तो तुम्हारा दिल और दिमाग किसी कामका नहीं—याने ढोलके भीतर पोल है। तुम संसारमें कोई अनोखा काम नहीं कर सकते।

किसीने 'विलपावर' वाले मनुष्यके सम्बन्धमें ठीक ही कहा हैः—

"बहादुर मर्द शेरे दिल कि जब कुछ करने जाते हैं,
समन्दर चीर देते, कोहसे दरिया बहाते हैं।"

कर्मयोगी श्रीकृष्ण अर्जुनसे कहते हैं—"हे कुरुकुलके आनन्द देनेवाले अर्जुन ! कर्मका मूल तत्त्व दृढ़ सकल्प (विलपावर) है। 'यह मेरा कर्तव्य है'—इतना हो जानकर दृढ़ताके साथ काम करते रहना चाहिये। जिसमें यह दृढ़ संकल्प 'विलपावर' नहीं है वह कुछ नहीं कर सकता।

नेपोलियनको लो। वह दुर्बल और कमजोर था, मगर उसने 'विल-पावर' से सारे संसारमें तहलका मचा दिया। यूरोपके शक्तिशाली मनुष्य भी नेपोलियनका नाम सुनकर नींदसे चौंक पड़ते थे। क्यों ? नेपोलियनके पास 'विलपावर' की जादू भरी चाभी थी, जो अखंड यन्त्रके समान घूमती हुई उसके मनोबलको दृढ़ रखती थी। वह कहता था 'असम्भव शब्द मूर्खोंके ही शब्दकोषमें पाया जाता है।'

बात ठीक है। मुसलमानोंके पैगम्बर मोहम्मद साहब अरबके जाहिल आदमियोंमें—जो उन्हें मार डालने तक को तैयार थे, एकेश्वरवाद याने खुदा एक है, का उपदेश देते थे ! स्वामी दयानन्द सरस्वतो मस्जिदोंमें ठहरते और निर्भीकता पूर्वक मूर्त्तिपूजा तथा इस्लामी मतका खण्डन करते थे। यह क्यों ? इसकी क्या वजह है ? असलमें इन महापुरुषोंके हृदयमें 'विलपावर' का महासमुद्र था, जिसकी लहरें उठ-उठकर मनुष्योंके मनमें समाजाती थीं। तरंगोंमें इतना आकर्षण होता था कि मनुष्य सहज ही में उन पर मुग्ध हो जाते थे और उन्हें पाकर अपने दिलका दर्द दूर करते थे।

इसलिये कहता हूँ, 'विलपावर' महा शक्तिशाली है। इस 'पावर' को पाकर मनुष्योंमें निर्भयता जागतो है, वे संसारको बड़ेसे बड़ा लाभ पहुंचा सकते हैं। यह वो 'पावर' है, जो सूर्य किरणोंसे ज्यादा गर्म और चन्द्र रश्मियोंसे

ज्यादा शीतल है। मानव-विज्ञान कहता है:—'विलपावर' से मनुष्यमें जिन इच्छाओंका विकाश होता है, वह उसे अवश्य मिलती हैं।

महाराज तिलक 'विलपावर' के सच्चे उपासक थे। उन्होंने एक ज्योतिषीसे कहा था—"यदि मैं फलित ज्योतिष पर विश्वासकर चुप बैठ रहता तो दुनियामें कोई भी महत्वपूर्ण कार्य न कर सकता।"

एक दिन इसी 'विलपावर' को पाकर बंगालके विद्रोही कवि काजी नजरुल इस्लाम शेरकी तरह गरज उठे थे:—

"जगदीश्वर, ईश्वर आमि पुरुषोत्तम सत्य,
आमि ताथिया ताथिया माथिया फिरि ए स्वर्ग पाताल मर्त्य;"

अर्थात् "मैं जगदीश्वर हूं, ईश्वर हूं—पुरुषोत्तम सत्य हूं। मैं ताण्डवनृत्यमें मत्त होकर स्वर्ग, पाताल, मर्त्य सबको मथता फिरता हूँ।"

'विलपावर' वाले मनुष्य बुद्धिमान, उद्योगी, और तेजस्वी होते हैं। वे नहीं चाहते कि उनके ऊपर कोई ताकत रंग जमाये। ऐसे अवसरोंपर वह आगकी तरह धधक उठते हैं और अपने आसपासके लोगोंमें बिजली भर देते हैं।

हम लोगोंका सबसे बड़ा अपराध यह है कि हम किसी आदमीकी उन्नति देखकर जल उठते हैं। दूसरोंकी मुसीबतोंका मजाक उड़ाते हैं। सामने दोस्त बनते हैं, अगल-बगल कैंचियां चलाते हैं। हमारी दुर्दशाओंका मूल कारण यही है। हम 'विलपावर' को भूल गये हैं!

'विलपावर' हरएक मनुष्यमें समान है। मगर जो उसे पहचानते हैं, जिन्दगीको चमका देते हैं। जो नहीं पहचानते—वह दीन हैं,—मुसीबतोंके शिकार हैं।

विलपावर

यदि तुम 'विलपावर' को अभी तक नहीं पहचान सके, तो अपने पर पूर्ण विश्वास करो और अपनी दुर्बलताओं को ढूंढ़ो। जरा भी अधीर होनेकी जरूरत नहीं। मानसिक शक्तियोंके सङ्गठनका ही नाम 'विलपावर' है।

स्वावलम्बी बनो। अपने कार्यकी सिद्धिके लिये दूसरों पर भरोसा न करो। 'विलपावर' तुम्हें अवश्य प्राप्त होगा। वह तुम्हारे अन्दर आत्मोन्नतिका मन्त्र फूंकेगा, तुम्हें उत्साह प्रदान करेगा, अपने मरहमसे तुम्हारे घावोंको भरेगा। फिर तुम्हें किन कांटोंका डर? 'विलपावर' प्राप्तकर तुम जिस काममें हाथ डालोगे, उसे पूरा करके छोड़ोगे।

जिन मनुष्योंमें 'विलपावर' याने आत्मबल नहीं हैं, जो एक विचारधारासे दूसरी विचारधारा पर छलांग मारते हैं, वह कोई महत्वपूर्ण कार्य नहीं कर सकते।

The wise man rules his stars—अर्थात् बुद्धिमान आदमी अपने ग्रहोंपर शासन करता है।

यदि तुम अपनी इच्छाओंकी पूर्ति चाहते हो तो "आत्मबलका" सहारा लो। तुम अपने भाग्यके स्वयं निर्माता हो। फिर दुःख और निराशा क्यों?

'विलपावर'कोई अरेबियन मैजिक, चीनका जादू या कामरू देशका वशीकरण नहीं; यह सिर्फ तुम्हारे हृदयका महान सिद्धान्त है, जो खूनकी तरह तेज और संगीतकी तरह मधुर है। इसे पाकर सूर्यकी रोशनीमें रहनेवाली ऐसी कोई वस्तु नहीं, जिसे तुम न पा सको। आज ही निश्चय करलो—"हम आत्मोन्नतिके लिये 'विलपावर' से काम लेंगे, अपनी अभिलाषाओंको पूरी करेंगे। जब तक जियेंगे, जिन्दगीको चमकाकर रखेंगे।

आकर्षण-शक्ति

तुमने अकसर कुछ ऐसे आदमियोंको देखा होगा, जो ज्यादातर मौन और गंभीर रहते हैं। उनसे तुम पचास प्रश्न करो, वे चुप रहेंगे—जैसे गूँगे बहरे हों। मगर एक बार—सिर्फ एक बार, वह तुम्हें ऐसा जवाब दे देंगे, जो तुम्हारे पचास प्रश्नोंका एक ही जवाब होगा। ऐसे मौन या गम्भीर व्यक्ति 'विलपावरके' बड़े तेज होते हैं।

'विलपावर' को सफल बनानेके चार रास्ते हैं। पहला यह कि तुम कोई सिद्धान्त उत्पन्न करो। दूसरा—सिद्धांतमें कोई 'इच्छा' प्रकट करो। तीसरा—इस बातकी प्रतिज्ञा कर लो कि मैं अपनी इच्छा पूर्ण करके दम लूंगा। चौथा—इच्छापूर्तिके लिये 'प्रवल उद्योग' करो। जहां इन बातोंकी तुममें आदत पड़ी, तहां तुम्हारी आत्मा जगमगा उठेगी! तुम हर काममें सफल होते जाओगे।

जमाना तेजीसे पलट रहा है, हर मनुष्य आगे बढ़ रहा है। अपनी काया पलटकर दो, स्वभाव बदल दो—ठीक उसी तरह, जिस तरह तुम बैलगाड़ी छोड़कर आज मोटरकी सवारी करते हो। उन्नतिकी रेसमें तुम्हारा नम्बर हमेशा पहला होना चाहिये।

'विलपावर' से विद्यार्थी परीक्षामें पास होते हैं, व्यापारी अपना व्यापार चमकाते हैं, ऐक्टर सुयश और सफलताके दर्शन करते हैं, गरीब रुपयोंका ढेर पाते हैं और अमीर राजे महाराजाओंकी श्रेणीमें जा बैठते हैं।

'विलपावर' प्राप्त करो। किसीके चरण-चिन्होंपर न चलो। पुण्यशील नहीं, वीर्यधारी बनो। सन्यासी नहीं, गृहस्थ बनो। साधारण नहीं, देवता बनो। अपनी नयी दुनिया कायम करो, तुम्हारा देश राजर्षियों और देव ऋषियोंसे भर जायगा। यह कविकी कल्पना नहीं, तुम्हारे आत्मबलका चमत्कार है—जो एक दिन हर मनुष्यको प्राप्त होता है।

भयका भूत

तुम्हारे दिमागमें एक ऐसा भयानक दुश्मन रहता है, जिसकी याद करते ही बदनके रोंगटें खड़े हो जाते हैं। और हमारी हालत कुछ वैसी ही अन्धकारमय हो जाती है, जैसी पहले दिन मां के पेटसे जन्म लिये हुए बच्चेकी।

क्या तुम जानते हो—यह दुश्मन कौन है ? भयका भूत।

'भय' ने मनुष्यमें सैकड़ों खतरनाक बीमारियां फैलाई हैं। 'भय' हमारे जीवनके सुख, सौंदर्य, स्वास्थ्य और शक्तियोंको भूखे राक्षसकी तरह भोजन करता है। इन्सानकी बहादुराना 'स्प्रिटों' को गर्म खूनकी तरह पीता है। आज संसारमें लाखों करोड़ों आदमी सोनेके सिंहासन पर बैठे दिखाई देते—यदि उनके दिमागमें भयका भूत न समाया होता। आज जिन्दगीको चमकानेमें करोड़ों आदमी इसलिये फेल हो गये कि उनके अन्दर भयका भूत सुदर्शन चक्रकी तरह घूमता रहा।

'भय' जीवनका जहर है। यह मनुष्योंसे प्रेम-सम्बन्ध जोड़नेमें वाधायें उपस्थित करता है, हमारी ताकतोंको कमजोरियोंमें पलट देता है। इसके कुसंगसे मनुष्य ठीक वैसा ही हो जाता है, जैसा काल कोठरीमें लोहेकी जंजीरोंसे जकड़ा कैदी।

क्या तुमने कभी भयकी खूंखार सूरत पहचाननेकी कोशिशकी है ? मैं समझता हूं—नहीं।

'भय' क्या है?—वहमकी बीमारी!

देखो, जब तुम अच्छी और दिलचस्प बातें करते हो, तब तुम्हारे होठों पर मुस्कुराहट दौड़ जाती है, दिल गुदगुदा उठता है, तुम खुश हो जाते हो। मगर जिस समय खून, डकैती और मौतकी कहानियां सुनते हो, भूत प्रेतके किस्से पढ़ते हो, फांसीके दृश्य देखते हो—तब?—मैं समझता हूं तुम घबरा जाते होगे और तुम्हारे दिमागमें फौरन 'भय' समा जाता होगा।

एक दिलचस्प किन्तु बेवकूफियोंसे भरी घटना सुनियेः—

सन् १९३६ की बात है। कलकत्तेमें एक दिन यह अफवाह जोरोंसे फैली कि अमुक दिन शामको भीषण भूकम्प आयेगा और सब आदमी इमारतोंके नीचे कुचलकर मर जायँगे।

अब जनाब! इस तूफानी अफवाहसे कलकत्ता निवासी इतने भयभीत हो गये कि चन्द घण्टोंके अन्दर आधा शहर खाली हो गया। भयभीत भगोड़ोंमें अमीर, गरीब, शिक्षित, अशिक्षित सभी किस्मके लोग थे। स्पेशल ट्रेनें दौड़ने लगीं। घोड़ागाड़ी, रिक्शा और टैक्सीवालोंकी बन आयी! उन्होंने मनमाने पैसे वसूल किये। जनाब, भगदड़ मच गयी! सैकड़ों मकानोंमें ताले पड़ गये। सड़कोंपर हड़तालका दृश्य नजर आने लगा। जिधर देखो उधर सन्नाटा! किलेके मैदान और पार्कोंमें नरमुण्डोंका मेला लग गया। सबके दिलमें एक ही सनसनाहट, एक ही बेचैनी, एक ही खतरा था—भूकम्प आया, आया और अब आया। बूढ़ोंने राम नामकी माला जपनी शुरू की, नौजवानोंकी आंखें आसमानमें ईश्वरको ढूंढ़ने लगीं! औरतोंने मन ही मन देवी-देवताओंको टटोलना शुरू किया। अद्भुत दृश्य देखनेमें आये।

दोपहर मुस्कुराती चली गयी, सन्ध्या सो गयी, रातने विश्रामका बिगुल बजाया मगर न भूकम्प आया, न प्रलय हुई। लोग स्त्री-बच्चोंके साथ झेंपते हुये घर लौटे। शहरवाले उन्हें बनाने लगे—आप भी खासे बौड़म निकले!

देखा तुमने? उस दिन इस मिथ्या भयसे कलकत्तेमें लाखोंका नुक-शान हुआ।

एक दूसरी घटना सुनो, जो कलेजेको हिला देती है:—

एक व्यापारीके व्यापारका चक्कर बिगड़ गया। वह जरूरतसे ज्यादा भय-भीत हो गये। मरता क्या न करता? उन्होंने अपनी विपत्तियों, और भयकी बातोंको हर आदमीसे कहना शुरू किया—यह सोचकर कि इससे मेरी मुसीबतें कम हो जायँगी। लोग मेरे प्रति सहानुभूति प्रकट करेंगे और मुझे मदद पहुंचायेंगे। मगर नतीजा उलटा हुआ। लोगोंने उनकी बद-नामी शुरू कर दी। दोस्त दुश्मन हो गये। कारबार फेल हो गया। हजारों डिग्रियां हुई और लाखोंका माल कौड़ियोंमें नीलाम हो गया।

वह भयसे पीले पड़ गये! शरीर सूखकर कांटा हो गया और चन्द दिनोंमें पागल होकर मर गये।

'भय' के ऐसे हजारों उदाहरण मौजूद हैं, जिन्हें तुमने भी देखा सुना होगा। यदि मेरे यह दोस्त भयको अपने दिलमें जगह न देकर निर्भीकतासे काम लेते, तो शायद अकाल मृत्युसे बच जाते। मगर भयके भूतका चक्कर ही तो था—वह अपनी जिन्दगीसे भी हाथ धो बैठे!

हमें चाहिये, हम अपने दिल और दिमागको सही रास्तेसे सञ्चालित करें और कभी इस बातका खयाल भी न आने दें कि हम कमजोर, या बुज-दिल हैं। चतुर माली चुनकर बीज बोते हैं, इसीलिये बगीचेमें सुन्दर फूल खिलाते हैं।

आकर्षण-शक्ति

मानसिक शक्तियोंको जोरदार बनाना या उन्हें अंधे कुएँमें धकेल देना हमारी विचारधारा पर निर्भर है। मान लो, तुम जङ्गलकी सैर कर रहे हो, एकाएक तुम्हारे सामने शेर आकर खड़ा हो गया। तो शेरको देखकर तुम चाहे कम डरो—मगर यदि मैं तुमसे कह दूँ—आगे न बढ़ना, वहाँ शेर रहते हैं—तो तुम एक कदम आगे न बढ़ सकोगे। होश गायब, बोलती बन्द हो जायगी। क्यों? इसलिये कि तुम्हारे मनकी हालत बदल गयी। मैंने तुम्हारे दिमागमें भयका भूत घुसेड़ दिया।

कितने ही आदमी मनुष्योंसे भय करते हैं और संसारमें कोई अच्छा काम नहीं कर सकते। उनके मनमें यह सनक सवार रहती है कि लोग मुझे क्या कहेंगे?

मैं कहता हूं—निर्भीकताका पाठ पढ़ो। भयके बहमसे ज्ञानतन्तु नष्ट हो जाते हैं। यदि तुम्हारा मन भयभीत रहता है—तो उसे विनोद, विलास में बहलाओ। एक मिनट बेकार न बैठो, कुछ करो। कोई पुस्तक पढ़ो, किसीको पत्र लिखो—सारांश यह कि भयको फौरन दिल दिमागसे निकाल बाहर करो।

यह सच है कि मानव शक्तिमें दैव शक्तिका चमत्कार है। दैव शक्तिके ही बलपर सृष्टि और संहार लोला हो रही है। मनुष्य यदि इस दैव शक्ति को पा ले, तो वह सृष्टि भी कर सकता है, संहार भी। हमारे अन्दर जो भय की क्षुद्रतायें भरी हैं, उनके संहारकी ताकत भी हममें है। हम अमरत्वके अधिकारी हैं। क्षुद्र बनकर रहनेके लिये हमने मनुष्य जोवन नहीं धारण किया।

भयका भूत

मैं देखता हूं—माता पिता छोटे-छोटे बच्चोंमें ज्यादा भयकाभूत उत्पन्न करते हैं। बच्चे जिद्दी होते हैं, वह जब रोते चिल्लाते हैं, तो उन्हें चुप करानेके लिये भूत-प्रेत, शेर-भालू और कुछ ऐसे ही अंटसंट नाम लेकर उन्हें इस कदर भयभीत कर दिया जाता है कि बेचारा बच्चा चुप हो जाता है। यह कैसी अज्ञानता है! जो माँ-बाप बच्चोंमें भयका भूत फैलाते हैं, वे सन्तानका भविष्य नष्ट करते हैं।

बच्चोंका दिल फूल जैसा कोमल होता है। भयकी बातें सुनकर उनकी क्या हालत होती है—एक समाचार सुनोः—

शंघाईके एक जापानी सज्जन सड़कसे अपनी बच्ची लेकर जा रहे थे। चौराहेपर एक सिनेमाका सचित्र पोस्टर चिपका था, उसे देखते ही बच्ची चीख उठी और पिताकी छातीसे चिपट गयी। घर पहुंचने पर इतनी भयभीत हो गयी कि उसका टेम्परेचर बढ़ गया, तेजीसे बुखार चढ़ आया और उसी दिन वह हमेशाके लिये ठंढी हो गयी।

अब तुम बताओ—उस कागजके पोस्टरमें क्या था? मगर खयाल ही तो है—भयके भूतने निर्दोष बच्चीके प्राण ले लिये!

सो, यही बात हमारे और तुम्हारे लिये भी है। तुम निर्भीकताकी उपासना करो और जीवन संग्राममें निर्भय होकर युद्ध करो। जय तुम्हारी है।

स्मरणशक्ति

हमारी प्रतिभा, कल्पना और महत्ता स्मरणशक्ति पर अवलम्बित है। तुम संसारकी समस्त लाइब्रेरियोंकी पुस्तकें पढ़ जाओ, पृथ्वीमण्डलका चक्कर काट आओ, दुनियाका अनुभव करलो; परन्तु तुमने जो कुछ पढ़ा, देखा या अनुभव किया—यदि उसे याद न रख सके, तो तुम्हारी सारी मेहनत बरवाद हो गयी। तुम कौड़ीके तीन हो गये। देश और समाजमें तुम्हारी गिनती बेवकूफ, रद्दी और भोंदू आदमियोंमें की जाने लगती है।

स्मरणशक्तिसे ज्ञानेन्द्रियां जागती हैं, मानसिक शक्तियोंका विकाश होता है और 'विलपावर' बढ़ता है। इसके उपहारस्वरूप हमें मिलती हैं—अमूल्य निधियां, मोहिनी शक्ति, जिन्दगीकी सफलता !

हममें से बहुतोंकी स्मरणशक्ति कमजोर है। इतनी कमजोर कि देखकर दङ्ग रह जाना पड़ता है। यदि ऐसे कमजोर आदमियोंके सामनेसे कोई जुलूस निकल जाय और उनसे पूछा जाय—जुलूसमें किस टाइपके आदमी थे? उनकी पोशाकें क्या थीं? कितने किस्मके बाजे बजते थे? तो वे ठीक इसका उत्तर न दे सकेंगे। मेरे कई मित्र ऐसे हैं, जिन्हें घूमने फिरनेका शौक है। यदि मैं उनसे कभी पूछ बैठता हूं कि तुमने पिछले सप्ताहके भ्रमणमें कौनसी अद्भुत वस्तु देखी, तो वह बगलें झांकने लगते हैं और ठीक-ठीक जवाब नहीं दे सकते। यही हालत अधिकांश सिनेमाप्रेमियोंकी है।

वह अभिनेता-अभिनेत्रियोंके सम्बन्धमें लम्बी चौड़ी हांक देंगे; परन्तु यदि उनसे कहानी या नाटकका सारांश पूछा जाय, तो 'प्लाट' का ठीक-ठीक वर्णन न कर सकेंगे। एक और मित्रका हाल सुनो—यह पुस्तकें पढ़नेके इस कदर प्रेमी हैं कि चार-चार लाइब्रेरियोंके मेम्बर हैं। रोज एक मोटा उपन्यास दीमककी तरह चाट जाते हैं। यदि उनसे पूछो, किस उपन्यासमें आपको क्या आकर्षण प्राप्त हुआ तो मुस्कुराकर रह जायेंगे। इस तरके असंख्य भुलक्कड़ आदमी संसारमें हैं, जो स्मरणशक्ति कमजोर होनेकी वजह से जीवन संग्राममें 'फेल' हो जाते हैं। वे स्वयं यह निश्चय नहीं कर पाते कि हम क्या हैं? दुनिया क्या है? और इस रहस्यमय संसारमें हम क्यों आये हैं?

मनुष्यका स्मृति-मन्दिर एक अनमोल खजाना है, प्रकृतिका आश्चर्य-भण्डार। इस मन्दिरमें यह पता नहीं लगता—कहां क्या रखा है, किसने रखा और कब रखा? हां, जब जिसकी जरूरत होती है, तब सिर्फ वही चीज बाहर निकाल लेनी पड़ती है।

बहुतसे लोगोंकी आदत होती है—कोई चीज किसी जगह रख देते हैं, मगर जरूरतके समय जब उसे ढूंढ़ते हैं, तो स्थानकी याद नहीं आती—उसे कहाँ रखा था। किसी वस्तु या मनुष्यका नाम, कोई खास शब्द, जब कि इसका प्रसंग आता है, तो बहुत कोशिशें करनेपर भी लोग भूल जाते हैं और सिरपर उँगली रखकर विचार प्रवाहको तेजीसे दौड़ाते हैं, मगर होता कुछ नहीं। वह जितना अधिक याद करनेकी चेष्टा करते हैं, वह चीज उतना ही अधिक दूर भागती है। यह मनुष्यकी कमजोरी है। ग्रेटब्रिटेनके

लार्ड एडवर्ड थरलो भी ऐसे ही मनुष्योंमें थे। उनकी स्मरणशक्ति इतनी दुर्बल थी कि वह जो जलपान करते थे, उसे भी याद न रख सकते थे। मगर जब उन्होंने अपने जीवनकी प्रत्येक घटना, प्रत्येक बात, प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक कार्य, प्रत्येक विषयको एक-एक करके देखना शुरू किया, तो अपनी स्मरणशक्तिकी इतनी अधिक उन्नतिकर ली कि उनकी गणना सुविख्यात पुरुषोंमें की जाने लगी।

स्मरणशक्ति तेज बनानेके लिये प्राणायाम सर्वोत्तम है। प्राणायामसे सांसका संयम होता और उम्र बढ़ती है। यदि खास-खास मौकों पर याददास्त काम नहीं देती, तो अच्छी तरह सांसको भीतर खींचो और कुछ देर उसे रोक कर बाहर निकाल दो। इससे स्मृतिपर अच्छा प्रभाव पड़ेगा। ज्यादातर स्मरणशक्ति उन मनुष्योंमें नहीं होती, जो थके होते हैं या जिनके स्नायुमण्डल दुर्बल होते हैं। तुम प्रत्येक कार्यको चाहे वह मामूलीसे मामूली क्यों न हो, एकाग्रमनसे करो। अपनी प्रत्येक बातमें जादू उत्पन्न करो। खड़े होना, टहलना, कपड़े पहनना, दोस्तोंसे मिलना, स्त्री-पुरुषोंसे बातें करना, ऐसे हजारों काम हैं—जिन्हें पूर्ण सावधानीसे करो। इन प्रयोगोंसे तुम्हें स्मृतिकी वह अद्भुत शिक्षा मिलेगी, जो अन्य विधियोंसे प्राप्त करना दुर्लभ है।

स्मरणशक्तिसे दैवी शक्तिका आविष्कार होता है। जिसके एक बार अनुभवकर लेनेपर उसे छोड़नेका जी नहीं चाहता।

जो लोग स्मरणशक्तिकी चर्चा जितना अधिक करते हैं, उनकी स्मरणशक्ति उतनी ही प्रखर होती है; किन्तु यदि इसकी चर्चा ही न की जाय, तो

धीरे-धीरे ऐसी अवस्था उत्पन्न हो जाती है कि एक घण्टे पहले हमने क्या किया था—यह भी याद रखना कठिन हो जाता है।

प्रकृतिकी असंख्य शक्तियां तुम्हारे चारों ओर झुण्डकी झुण्ड घूम फिर रही हैं। संसारकी हजारों घटनायें तुम्हारी आंखोंके सामने घट रही हैं। तुम इनसे ज्यादेसे ज्यादा फायदा उठाओ। तुम्हारे ज्ञानका विश्वविद्यालय प्राकृतिक सौंदर्य है। इसी विद्यालयके विद्यार्थी बनकर ईश्वरीय चमत्कारोंका अध्ययन करो। शामके वक्त घरके भीतर या बाहर एकान्तमें निश्चिन्त होकर बैठ जाओ, वहां जो कुछ देखो-सुनो नोट कर लो। किसी सुन्दर भू-प्रदेशका, जिसे तुमने देखा हो—स्मरणशक्तिकी सहायतासे मनमें प्राकृतिक चित्र खींचो। उसके ऊबड़-खाबड़ पहाड़, कलकल करती नदियां, हरे-भरे वृक्ष, धूप-छाया, जमीन आसमान सभीको इस तरह देखो—जैसे तुम सचेत होकर उनमें सौंदर्य ढूंढ़ रहे हो। मनको प्रेम आनन्द और सहानुभूतिके भावोंसे भर लो। मधुर गाने गाओ, पक्षियोंकी चहचहाहट, हवाके झोंकोंके शब्द, पशुओंकी उत्तेजक बोलियां और अन्य प्रकारकी आवाजोंको यादकर कल्पनामें सुनो।

ट्राम, बस या रास्तेमें घूमते हुए खूबसूरत और प्रसन्नचित्त स्त्री-पुरुषोंको देखो। आधा माइल रोज पैदल चलो। स्मरणशक्ति हमेशा ताजी रहेगी।

यदि तुम स्मरणशक्तिको तेजीसे नहीं बढ़ाते, तो तुम्हारी मानसिक अवस्था क्या होगी-जानते हो? दिमागमें कोई भी मौलिकता या अनोखी प्रतिभाका चमत्कार न पैदा होगा।

यदि तुम स्मरणशक्तिको बलवान बनानेके लिये इच्छुक हो तो ज्ञानेन्द्रियों

को शिक्षित करो, याने आंखें खोलकर चलो। जो कुछ देखो, उसमें आकर्षण ढूंढो। कानोंसे ज्यादा सुननेका अभ्यास करो। जीभसे प्रत्येक स्वादका मजा लो, नाकसे जो चीज सूंघो, उसमें ज्यादा दिलचस्पी उत्पन्न करो, तुम्हारी उँगलियोंमें बिजलीका 'करेंट है—जिस वस्तुको छुओ, उसमें जोरदार स्पर्श-शक्तिका विकास करो। इन्द्रियों द्वारा जो ज्ञान हम प्राप्त करते हैं, वही ज्ञान अनुभवोंको हमारे सम्मुख उत्पन्न करता है। इस संचितकी हुई मानसिक शक्तिको ही स्मरणशक्ति कहते हैं।

अप्रिय, बदसूरत शक्लें तथा भद्दी वस्तुओंपर ध्यान न जमाओ। रंगोंका अध्ययन करो। किसीके घर या आफिसमें जाओ तो वहांकी खास-खास आकर्षक चीजें मनमें नोट कर लो। धुरन्धर विद्वानों और महापुरुषोंके सिद्धांतोंको पढ़ो और उन्हें मनके 'स्टाक' में इकठ्ठा करते रहो। दोस्तोंको पैरोंकी आवाजसे पहचानो कि मेरा फलां दोस्त आ गया। उन्नतिके यह सब वैज्ञानिक अभ्यास हैं। जो एकदिन तुम्हें महापुरुष बनादेंगे।

और इन अभ्यासोंसे तुम्हारी सिर्फ स्मरणशक्ति ही तेज न होगी, बल्कि तुममें एकाग्रता, और विलपावरका आश्चर्यजनक विकास होगा। इस तरह तुम आहिस्तः आहिस्तः पूर्व जन्म तकका हाल जान लोगे। निरन्तर अभ्याससे ही सफलता प्राप्त होती है—

"करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जाततें सिलपर परत निसान॥"

मनुष्यके जितने भी कार्य हैं, सबकी धारणा कल्पनामें की जाती है। एक व्यक्ति अपनी माताके लिये चाय बनाते समय चायके बर्तनपरके ढक्कनको उछ-

लता देखकर कल्पना करता है कि भापके फैलनेसे ढकना उठ जाता है। उसकी यह कल्पना इंजिनकी सृष्टि करती है और दुनियांमें रेलगाड़ी दौड़ा देती है। विज्ञान, चित्रकारी, व्यापार, साहित्य और कलाकौशल आदि सबमें कल्पनाशक्तिकी जरूरत है। जिनमें कल्पनाशक्तिका अभाव है, वे संसारमें मामूली अप्रिय और अयोग्य सिद्ध हुये हैं। विवेक और परिश्रमी होनेपर भी कल्पनाशक्तिके अभावसे वे भविष्य जीवनके ऊँचे उपहारोंसे वंचित रह जाते हैं।

स्वामी दयानन्द शिवरात्रीके दिन शिवमंदिरमें बैठे हुये कल्पनाकर रहे थे कि जो शिव अपनी रक्षा चूहोंसे नहीं कर सकता, वह मेरी सहायता कब करेगा? उन्हें इस कल्पनाशक्तिसे महान ज्ञान उत्पन्न हो गया और वह घर छोड़कर देश-कार्यके लिये जंगलोंमें चले गये। ठीक इसी तरह महात्मा बुद्ध, मीराबाई और गुरु नानककी भी कल्पनाओंने उनकी जिंदगीमें महान परिवर्तन कर दिये। इन महापुरुषोंके जीवनके चमकने का रहस्य और कुछ नहीं, स्मरण तथा कल्पनाशक्ति थी।

कोई घटना हो; कोई अभ्यास, विचार या सिद्धांत हो—सबमें स्मरण-शक्तिकी जरूरत है। रातको सोते समय, निद्राके पहले, इन विचारोंका चिंतन करो—"मैं शक्तिशाली मनुष्य हूं। मेरी स्मरणशक्ति तेज है। मेरा दिमाग प्रतिदिन बलवान होता जा रहा है।" इन विचारोंसे तुम्हारी इन्द्रियोंमें सनसनी फैलेगी। दिमागमें खलबली उत्पन्न होगी और प्रसन्नतासे तुम्हारा चेहरा चमक उठेगा।

जीवनको तकलीफोंका कारखाना न बनाकर उसे चिड़ियाघरकी तरह चहकने

दो। तुम्हारी जिन्दगीमें चमत्कारपूर्ण अभिनय हो रहा है, उसमें आनन्दका क्षणिक तूफान नहीं—स्थायी शक्ति है। पिछली गलतियोंको सुधारो। वर्तमानको शक्तिशाली तथा भविष्यको प्रतापी बनाओ। किसी तरहका वहम न करो। वहम मनुष्यको नष्ट कर देता है।

———

दिमाग

तुम्हारा दिमाग एक जबरदस्त कारखाना है। इसमें असंख्य डिपार्टमेंट हैं, जिनमें काम करनेवाले बड़ी मुस्तैदीसे अपनी ड्यूटी अदा करनेमें तन्मय हैं। यहांसे हुक्मनामे जारी होते हैं, ग्रामोफोनकी तरह बाहरी शब्दों और आवाजोंके रेकार्ड तैयार होते और बजते रहते हैं, इनकी मधुर ध्वनियां बाहरी आदमियोंको अपनी ओर आकर्षित करनेमें हमेशा अग्रसर रहती है। इन कारबारोंको हलचलको लेकर यह महान इन्स्टीट्यूशन बरसों चला करता है; किन्तु ज्योंही कर्मचारियोंमेंसे किसीने अपनी ड्यूटीकी अवहेलनाकी, त्योंही सारा कारोबार नष्ट हो जाता है।

आकाशके अनन्त तारोंकी तरह दिमागके अन्दर एक रहस्यमय ज्योतिस-मूह हैं, जिसके कारण ही मनुष्य, मनुष्य कहलाता है। प्रत्येक देशकी सभ्य-तायें इन्हीं दिमागदार खोपड़ियोंसे तैयार होती हैं।

यदि तुम साहित्यिक हो, तो गोर्की, एच० जो० वेल्स और बर्नार्डशा की खोपड़ीके रहस्योंको समझो! यदि तुम रुपयेके भक्त हो, तो राकफेलर, हेनरी फोर्ड, बाटा, बिड़ला ब्रादर्सके दिमागका इतिहास पढ़ो। तुम्हें कीमती बातें मालूम होंगी। इनके दिमाग शक्तियोंके धुरन्धर कारखाने हैं।

आकर्षण-शक्ति

ईश्वरने समस्त प्राणियोंमें मनुष्यको श्रेष्ठ बनाया है। मगर मनुष्यकी श्रेष्ठता केवल दिमागपर निर्भर है—

> आहार निद्रा भय मैथुनश्च
>
> समान मेतत् पशुभिर्नराणाम्।
>
> ज्ञानं हितेषा मधिको विशेषो,
>
> ज्ञानेन हीनाः पशुभि समानाः ॥

अहार, निद्रा, भय और मैथुन ये चारबातें मनुष्य और पशुमें बराबर होती हैं। ज्ञान न होनेसे मनुष्य और पशु दोनों समान हैं।

दिमागमें ज्ञान-बुद्धिको चमकाना या उसमें मूर्खताकी मिट्टी भरना तुम्हारे हाथका काम है। वह एक ऐसा कोमल पौधा है, जिसे तुम जिस तरफ चाहो मोड़ दो। उसमें करोड़ों सूक्ष्म तन्तु रहते हैं। इन्हीं तन्तुओंसे विचार—शक्तियां उत्पन्न होती हैं और इन्हीं विचार-शक्तियोंकी क्रांतिसे दिमागमें विलक्षण बुद्धि उत्पन्न होती हैं। जिसके द्वारा हम बहुत जल्द नवीनताओंके अविष्कारक, साहित्य क्षेत्रोंके महारथी, देश और समाजके भाग्यविधाता, धनकुबेर तथा मनुष्य मात्रके प्रेमी बन जाते है और एक दिन उच्च शिखरपर चढ़कर मानव जीवनको धन्य बनाते हैं।

ध्यान रखो, जिन आदमियोंसे तुम मिलते जुलते हो, उनका दिमाग एक एक इतिहास है। उनके मस्तिष्कमें बड़ी-बड़ी खूबियोंके खजाने हैं। प्रत्येक मनुष्यसे दिल खोलकर बातें करो। तुम्हारा दिमाग उन्नतिशील लाइनोंमें तूफानमेलकी तरह दौड़ेगा, और तुम्हें सफलताके स्टेशनमें पहुंचते जरा भी देर न लगेगी।

वर्तमान वैज्ञानिक युगमें यह बात बड़े तर्कसे सिद्ध हो चुकी है कि दिमाग की सोई शक्तियोंको जगानेवाली हमारे पास पांच ताकतें जबरदस्त हैं। मन विलपावर, आँखें, कान और नाक याने घ्राणशक्ति। यदि हम इन शक्तियोंको अच्छी तरह अध्ययन और अभ्यासकर सकें, तो हमारा दिमाग सूर्यकिरणोंकी तरह जगमगा उठे।

दिमागको सजीव बनानेकी सबसे शानदार ताकत है—मनुष्यकी घ्राण-शक्ति। जिन चीजोंको तुम सूँघते हो, उनमें ज्यादा दिलचस्पी उत्पन्न करो और घ्राण-शक्तिको अधिक तीक्ष्ण बनाओ।

आज सभ्य समाजमें बिरले ही आदमीको घ्राण-शक्तिका महत्त्व मालूम होगा। मगर जंगली आदमियोंका प्रधान दिमाग है—घ्राण-शक्ति। अपनी इस शक्तिके सहारे वे बड़ी दूर तक मनुष्योंका पीछा करते हैं, और जंगली जानवरोंसे हमेशा सावधान रहते हैं। अभी हालमें इस विषयकी जो वैज्ञानिक गवेषणायें हुई हैं, उनसे पता चला हैं कि सिर्फ जंगली मनुष्य ही मनुष्य और पशुओंका घ्राण-शक्ति द्वारा पीछा नहीं कर सकते, सभ्य मनुष्य भी इस कामको ठीक-ठीक कर सकते हैं। मनोविज्ञानके मास्टर डाक्टर पो० मूरका दावा है कि वह किसी कमरेकी गन्धसे बता सकते हैं कि एक घण्टा पहले उस कमरेमें कोई आया था या नहीं। कपड़ेकी गन्ध सूँघकर वह यह भी बता सकते हैं कि कपड़ा किसका है। ऐसे कई आदमी हैं। इसके अलावा आजकल अनेकों डाक्टर रोगोंके निदानमें घ्राण-शक्तिका उपयोग करते हैं, और रोगीके कमरेमें प्रवेश करते ही ताड़ लेते हैं कि रोगीकी गति कैसी है और रोगी कितने दिनोंमें स्वस्थ हो सकता है।

दिमागको तेजस्वी बनानेका दूसरा रास्ता है पढ़ना। मनुष्योंमें पशुता भी है—देवत्व भी। पशुता से धीरे-धीरे विकास करके पहले वह मनुष्य होता है और मनुष्यतासे ऊँचे उठकर वह देवपद प्राप्त करता है। पशुता पतन है और मनुष्यता उत्थान। मनुष्यको जितने साधन पशुत्वसे ऊपर उठानेमें सहायक होते हैं, उनमें शिक्षा प्रधान है। अतएव तुम जितना ज्यादा अच्छी-अच्छी पुस्तकें पढ़ोगे, उतना ही तुम्हारा दिमाग तेजस्वी होगा।

जिन्दगी और संसारमें सफलता पाना दिमागकी संचालन-क्रियाओं पर निर्भर है। यदि स्कूल और कालेजके विद्यार्थी, व्यापारी और नौकरी पेशेके लोग उपरोक्त बातों पर गौरसे विचार करेंगे, तो उन्हें पता लग जायगा कि दिमाग कोई दूकान नहीं, जिससे नफा या नुकसानका हिसाब जाना जा सके। दिमाग वह चमकता भण्डार है, जिसमें अच्छी चीजें भरकर तुम सुरक्षित रख सकते हो और मानव जीवनको चुम्बक बना सकते हो।

हम तकदीरके नामपर रो रहे हैं। विपत्तियाँ हाथ धोकर हमारे पीछे पड़ी हैं। क्यों?—इसका एक ही जवाब है—हमारे दिमागकी कमजोरी।

अपनी इन कमजोरियोंके कारण हम नरकंकालकी तरह दुनियाकी चमकती बाजारोंमें घूम फिर रहे हैं। हमारी सम्पूर्ण शक्तियां मुर्दा हैं। हम देश और समाजमें कोई आवाज नहीं पैदा कर सकते। व्यापारकी दुनियामें 'फेल' हो जाते हैं और किसी भी बातमें जरा भी तरक्की नहीं कर सकते।

इसके अलावा दिमागकी कमजोरियोंके दूसरे कारण हैं—सड़ी गली गलियोंमें घूमना, भद्दे बदसूरत आदमियोंकी सोसाइटीमें बैठना, घृणा,

घमण्ड, द्वेष, शंका तथा गुस्सेकी आगमें जलना। अनुभवकी शून्यता, ऐयासी, व्यभिचार तथा सुन्दर विचारधाराओंको ठीक रास्तेसे न ले चलना।

दिमागी कमजोरी और निपुणता कैसा रंग लाती है, आँखों देखी घटना सुनियेः—

सन् १९२८ की बात है। उन दिनों मैं एक सुप्रसिद्ध हिन्दी पत्रका सहकारी सम्पादक था। आफिस में दो क्लर्क थे। दोनों ही पुराने थे। एकाएक दोनोंमें एकका दिमाग अच्छा निकल गया। वह न्यूज एडीटर बना दिया गया। उसकी तनख्वाहमें तरक्की हो गई। जब दूसरे क्लर्कको इस बातका पता चला तो वह ईर्षाकी आगमें जल-भुनकर खाक हो गया। एक दिन वह गुस्सेकी हालतमें मैनेजिंग डाइरेक्टरके पास पहुंचा और अभिमानके साथ बोला—"आपके आफिसमें सबसे ज्यादा काम करनेवाला मैं हूं। आपने मेरे सहकारी की तरक्की कर दी—मेरी भी तनख्वाह बढ़ा दीजिये।"

मैनेजिंग डाइरेक्टरने कहा—"तुम्हें मेरे यहां नौकरी करते जमाना गुजर गया। मगर तुमने आज तक अपने दिमागका कोई नया चमत्कार नहीं पेश किया। मैं तुम्हारी तनख्वाह बढ़ानेमें लाचार हूँ।"

क्लर्क महाशय अपना सा मुंह लेकर चले आये। उन्होंने अपने सहकारी से बोलना तक बन्द कर दिया। उनके मिजाजमें चिड़चिड़ाहट आ गई। वह जरा-जरासी बात पर गुस्सा हो जाते और आफिसके नौकरोंको डांटते फटकारते। इसका नतीजा यह निकला कि उनका रहा सहा दिमाग भी चौपट हो गया। वह नौकरीसे अलग कर दिये गये। लेकिन उनका सहकारी योग्यता, शान्ति तथा लगनके साथ सब काम सम्भालता गया। कुछ ही दिनों

में प्रधान सम्पादककी कुर्सीपर डट गया। उसके अण्डरमें लगभग २०-२५ आदमी काम करने लगे।

दरअस्ल दिमागकी कमजोरियां हमें जरा भी आगे बढ़ने नहीं देतीं। दिमागमें विद्याकी रोशनी फैलाओ। उसे स्वस्थ होकर सफलताकी सीढ़ियों पर चढ़ने दो।

हालीउडको एक फिल्म कम्पनीका जिक्र है। वहां एक गजबकी नाचनेवाली नवयुवती आई। उसके कलापूर्ण नाचमें इतनी अधिक सौन्दर्य—मादकता थी कि लोग उसपर मुग्ध हो गये। उसके गानेमें जादूका असर था। लोगों ने सुना और मस्तीसे झूमने लगे। मगर वह थी बड़ी बदसूरत। लोग उसके गुणोंके तो भक्त बन गये मगर सूरतसे सबको नफरत थी। जिस समय वह स्टूडियोंमें आती—लोग उसे देखकर आपसमें कानाफूसी करते और उसके रूप सौन्दर्यकी हँसी उड़ाते। परन्तु नर्तकी इन बातोंसे कभी न चिढ़ती। क्रोध के बदले वह सबपर प्रेमका जादू चलाती। पर लोग उसे बराबर तङ्ग किया करते। वह इन मुसीबतोंसे छुटकारा पानेका प्रयत्न करने लगी। एक दिन उसने अभिनेताओंकी भरी मीटिंगमें कहा—"आप चाहे जितनी हँसी उड़ायें, मैं कभी नाराज न होऊँगी। क्योंकि मैं जानती हूं—गुणके सामने रूपकी कीमत नहीं होती।"

सब ठहाका मारकर हँस पड़े।

नर्तकीने कहा—"मेरी आँखोंमें शेरकी ताकतकी चमक है। गानेकी मधुर आवाज सुनिये—कोयलें शर्मसे मुंह छिपाती हैं। मेरा दिल प्रेमका दरिया है।"

नर्तकीने यह स्पीच इस ढङ्गसे दी कि भीड़में सन्नाटा छा गया। लोग एक दूसरेका मुंह ताकने लगे। बदसूरत नवयुवती का रंग जम गया।

इसे कहते हैं—दिमागसे काम लेनेका तरीका। यदि यही नर्तकी झेंपती और चिढ़ती, तो जिन्दगीके मैदानमें बुरी तरहसे हार जाती। मगर वह थी चतुर। अपने दिमागको जिस बुद्धिमानीके रास्तेसे ले गई—उसकी कौन प्रशंसा न करेगा।

यदि तुम सफलता के पुजारी हो, तुम्हारा उद्देश्य सिर्फ कमाना, खाना या मर जाना ही नहीं—मनुष्य जीवनको चमकाना है, तो ज्ञानेन्द्रियोंको जगाओ। शक्तिशाली मनुष्योंके जीवन चरित्र पढ़ो और दिमागदार आदमियोंका सत्संग करो। तुम एक दिन सर्वश्रेष्ठ मनुष्य और श्रेष्ठ नागरिक बनोगे।

जिस तरह भागीरथी गङ्गा अपनी असंख्य लहरोंसे कल कल निनाद करती हुई महासागरमें मिलजाती है, उसी तरह मनुष्यका शिक्षित दिमाग भी धीरे धीरे देवत्वके पवित्र सुख सम्मिलनमें दूध-पानीकी तरह मिल जाता है। उसे ऊँचे उठते देर नहीं लगती। संसारमें जितने मनुष्य साधारण मनुष्योंमें जन्म लेकर ऊँची प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेते हैं—उसका सबसे बड़ा रहस्य हैं उनका शिक्षित दिमाग। मनुष्य शिक्षित दिमागको लेकर ही शक्तिशाली होता है। संसारमें भयानकसे भयानक, विचित्रसे विचित्र उथल-पुथल होती हैं। पुरानी सृष्टि नई होती है और नई सृष्टि पुरानी। इन सबके अन्दर मनुष्योंका दिमाग कुम्हारके चाकेकी तरह घूमता रहता है। दिमागहीन मनुष्य पशु हैं। दिमागदार मनुष्यका जीवन हमेशा ताजा और

जवान रहता है   तुम मनुष्य हो, इस पृथ्वीपर आपत्तियोंके तूफान लेकर छाया की तरह न चलो। जीवनकी मंजिल में उज्जवल धूपकी तरह दौड़ो। जो सोचो; होशियारी, मौलिकता और तर्कके साथ। एक दिन तुम्हारा दिमाग गङ्गाजलसे बढ़कर पवित्र, हिमालयके हिमसे ज्यादा स्वच्छ, चन्द्रमाकी चांदनीसे कई गुना शीतल और सूर्यके प्रकाशसे ज्यादा तेजस्वी होगा। तुम्हारे प्रतिभाशाली दिमागसे तुम्हारा गौरव है। तुम्हारी जय है।

———

आंखोंका जादू

मैं कोई जादूगर नहीं, तुम्हारी ही तरह एक चलता-फिरता मनुष्य हूं। मगर मुझे तुमसे बड़ी दिलचस्पी है।

क्यों दिलचस्पी है? मैं किसलिये तुम्हारी दिलचस्पीका तूफान उठाये घूमता हूं?—

तुम्हारी आंखोंमें आत्माका दिव्य प्रकाश, दिनकी निर्मलता और रातकी काली अंधियारी है—

क्या कहें तुम्हारी आँखोंको
चालाक भी हैं, हुशियार भी हैं।
सीधी हैं कभी, तिरछी हैं कभी,
यह तीर भी हैं, तलवार भी हैं।

मैं तुम्हारी आंखोंमें जलवये-कुदरत देखता हूं, कयामत देखता हूं, प्रेमका नशा देखता हूं।

तुम्हारे हृदय में जो भावनायें उत्पन्न होती हैं, उनका तेजस्वी प्रकाश आँखोंके ही द्वारा प्रदर्शित होता है। आँखें हृदयकी तालिका हैं।

तुम्हारे चारों तरफ हर समय कीमती चीजें चमकती चली जाती हैं; मगर तुम न तो उन्हें पहचानते हो, न अपनी ओर आकर्षितकर सकते

हो। यह क्यों ? मैं कहूंगा—"तुम आँखें खोलकर नहीं चलते। तुम्हारी आँखोंमें जो जादू हैं, उसका सही तरीकेसे प्रयोग नहीं कर सकते।"

संसारमें सौ में नब्बे आदमी आँखें खोलकर नहीं चलते। उन्हें इस बातका पता नहीं कि हमारी आँखोंमें क्या जादू है और उसके जरिये हम कैसे विश्वविजयी बन सकते हैं।

मैं कहता हूं, सुखकी प्रतीक्षामें आंखोंको पत्थर न बनाओ। उन्हें खूब-सूरतीके बाजारमें टहलने दो। न मालूम किससे तुम्हारी आंखें लड़ जायँ और एकाएक तुम्हारी तकदीर जाग उठे!

आंखें आत्माकी रोशनी हैं। आंखें खोलकर चलो! तुम्हारी जिन्द-गीका भेद आईने की तरह तुम्हारे सामने खुल जायगा।

संसार एक सुन्दर कली है। सूर्योदय होते ही वह फूलकी तरह खिल उठता है। विश्वासपूर्वक निगाहोंकी सर्चलाइट चारों तरफ घुमाओ। दिनको सूर्योदयका रङ्गीन दृश्य देखो, रातको चांदनी रातका मौन सङ्गीत सुनो। आँखोंमें जादू उत्पन्न करनेको यह वैज्ञानिक कला है।

कमजोर आदमी इन शिक्षाओंसे घबराते हैं। वे सारी जिंदगी बहस और बहममें बरबाद कर देते हैं। उनके जीवनमें हमेशा दुख और शोककी काली घटायें घिरी रहतीं हैं। मगर उन्नतिशील मनुष्य भूतकालकी तरफ ध्यान नहीं देते। वे वर्तमानके भक्त बनते हैं और भविष्यको भगवानके रूप में पूजते हैं। उनकी आँखोंका जादू वर्तमान और भविष्य दोनोंपर चलता है। वे हर वक्त अपने सिद्धान्तोंकी जड़ मजबूत करते हैं और असम्भव ताकतोंके प्रति चैलेञ्ज देकर कहते हैं:—

छुपने को छुपो सौ परदोंमें,
इस छुपने से क्या होता है ?
हम ढूढ़ निकालेंगे उनको,
हम खोजमें उनके रहते हैं।

मजनूसे एक बार किसीने कहा—"लैली बड़ी बदसूरत है। तुम उसपर दिवाने क्यों हो ?"

मजनूने जवाब दिया—"उसे मेरी आँखोंसे देखो—सब समझमें आ जायगा।"

मैं समझता हूं, मुसीबतोंका तमाशा देखते-देखते तुम्हारी आंखें बेजार हो गई होंगी। अतएव अपनी इच्छित वस्तुओंको मजनूकी आँखोंसे देखो। बाहरी दुनियाकी समस्त विद्या आंखों द्वारा प्राप्त होकर दिमागमें हलचलकी सृष्टि करती है और हमारा चेहरा रेशमकी तरह चमक उठता है।

तुम चाहे देहातमें रहते हो या शहरमें। आँखोंको सर्चलाइट अपरिचित मार्गोंमें फैलाओ। स्त्री-पुरुषोंको दिलचस्पीसे देखो। एक-एक मनुष्य के चेहरेमें एक-एक विचित्र संसार छिपा है, जिनके रहस्योंको समझकर जीवनके बड़े-बड़े आविष्कार किए जा सकते हैं।

तुम अपने शहरकी उन खूबसूरत सड़कोंपर चक्कर काटो—जहां सभ्य, पढ़े-लिखे, और सुन्दर स्त्री-पुरुष आते जाते हैं। खास आदमियोंकी पोशाकोंका अध्ययन करो। उनके चेहरेको बनावट देखो—आंखोंकी सञ्चालन क्रिया पहचानो। एक मनुष्यको दूसरे मनुष्यके साथ तुलना करो। ज्यों-ज्यों तुम मनुष्योंका दिलचस्पीके साथ अध्ययन करोगे—त्यों त्यों उनके नज-

दीक पहुंचते जाओगे। उनके गुण, सौंदर्य जिन्दगीके खजानेमें भरते जाओ। आँखों द्वारा जीवनमें जादू भरनेका यह आकर्षक तत्व है।

यह क्या बात है, कि कवि, दार्शनिक, आध्यात्मिक और वैज्ञानिकोंकी आंखोंमें विशेष जादू होता है। वे साधारण मनुष्योंसे ज्यादा हर चीजमें सौंदर्य प्राप्त करते हैं। असलमें वे चुम्बक तत्वोंके महारथी हैं। उनका मार्ग आत्माकी सत्य ज्योतिसे जगमगाता है। तुम अपनी आत्मामें, अपने संसारमें इस सत्य प्रेमको ढूंढ़ो। महापुरुषोंमें बगैर सत्य प्रेमके महानता नहीं होती।

यदि कोई तुम्हें उपदेश देता हो, तो आंखें बन्दकर लो, पर कान खोल दो। यदि कोई बुरी बात कहता हो, तो कान बन्दकर लो—आंखें खोल दो।

संसार और मनुष्यको लोग दो तरहसे देखते हैं। एक आंखसे, दूसरा मनसे। दोनोंमें निराले रङ्गका आविष्कार करो। आज मैंने फलां विलक्षण चीज देखी, 'उसने' मेरे दिलको चुम्बककी तरह अपनी ओर खींच लिया। हर रोज रातको सब बातोंपर विचार करो और फायदेमें आनेवाली चीजोंसे लाभ उठाते जाओ।

क्रूरता, निर्भयता, बेईमानी, प्रेम, दया धर्म इत्यादि हर बातोंका पता आंखों द्वारा लगाया जा सकता है। आंखें मनुष्यके दिलका अफसाना हमारे सामने पेश करती हैं।

तुमने सुना होगा—जंगलमें मंगल करने वाले साधूसंतोके पास खूंखार शेर आते हैं और बिल्ली बनकर चले जाते हैं। इसमें क्या रहस्य है?

असलमें इन महर्षियोंकी आँखोंमें ऐसा मनोहर जादू रहता है, कि बेचारा शेर उनकी शक्तियोंके आकर्षणसे बलहीन हो जाता हैं। उसका हृदय आनन्द प्रेमसे नाच उठता है। साधूसंतोंका यह सुन्दर जादू प्रत्येक मनुष्यके पास है। उसे अपने पवित्र हृदयमें ढूंढ़ो। जब तुम उसे अपना लोगे, तुम्हारा जीवन विश्वासके रत्नोंसे चमक उठेगा। उस समय तुम भयानकसे भयानक चेहरेको देखकर भयभीत न होगे। किसीसे खुलकर बातें करनेमें जरा भी संकोचका सामना न करना पड़ेगा। दुनियाके हर मनुष्य तुमसे प्रेम करेंगे —फिर कमी किस बातकी रहेगी ?

यदि तुम्हें किसी आदमी पर प्रभाव डालना है, किसी खास आदमीसे दोस्ती गाठनी है, तो जब उससे बातें करो—उनकी नाकके बिचले भागमें, ठीक भावोंके बीच, अपनी आँखें जमा दो, पलकें न मारो और खूब मस्तीसे बातें करते रहो, चन्द मिनटोंमें तुम्हें मालूम होगा कि तुम्हारा उस मनुष्यपर पूर्ण प्रभाव पड़ रहा है। वह तुम्हारे प्रति आकर्षित होकर तुम्हारा प्रेमी बनता जा रहा है। मगर होशियार! बातें करते समय आंखोंको न तो काढ़ो, न ज्यादा फैलाओ; नहीं तो उस आदमीके मनमें सन्देह उत्पन्न हो जायेगा और तुम्हारा वैज्ञानिक जादू काफूरकी तरह उड़ जायगा। बातें करते समय मौके-बेमौके पलकें भरनेके लिये नजर को होशियारीसे पलटते रहो। कमरेकी छतों और दिवालोंपर टँगी हुई तस्वीरोंको देखो जमीनकी चीज न देखो, जो उस मनुष्यकी आँखोंके नीचे हैं। आँखोंकी ऊपर वाली चीजोंको मौजसे घूरो, आँखें घुमाओ और उन्हें पुनः उनकी भवोंके बीच जमा दो—वह मनुष्य तुम्हारा भक्त बन जायगा।

आकर्षण-शक्ति

यह कोई धोखेबाजी नहीं, आत्माकी रोशनीका परस्पर आदान-प्रदान है, मनुष्योंमें पवित्र प्रेम उत्पन्न करनेका कीमती अभ्यास है। इस अभ्यासमें वही सफल हो सकते हैं, जिनका हृदय सचाई की ललित तरङ्गोंसे लहराया करता है। खूनी, विश्वासघाती, चोर, डकैत इन अभ्यासोंमें सफल नहीं हो सकते, क्योंकि उनकी आत्मा अपवित्र होती है।

मैं कहता हूं—आखोंसे बड़ी-बड़ी बूंदें बरसाकर उन्हें सुर्ख न बनाओ। उनमें प्रेमका काजल लगाकर बाजारेहुस्नमें टहलने दो, तुम्हारी तेजस्वी निगाहोंसे महफिलकी प्रत्येक आंखें तुमपर झुक जायँगी। किसीने क्या खूब कहा है:—

"आँखोंमें समा जाना,
पलकोंमें रहा करना।
दरिया भी इसीमें है,
मौजोंमें बहा करना।"

इसलिये मेरी हार्दिक कामना है, तुम आँखोंके द्वारा शक्तिशाली और आकर्षक बनो.........तुम्हारी नेत्रज्योति अमर हो!

कानोंका रहस्य

कान हमारे गुरुदेव हैं। यह हमें जीवनी शक्ति प्रदान करते हैं और चरित्रको ऊँचा उठाते हैं।

यदि हम संसारमें आँखें खोलकर चलते हैं और कानोंसे ठीक ठीक सुनते हैं तो इसका यह मतलब हुआ कि हम असंख्य शक्तियोंपर कब्जा कर रहे हैं, अपनेमें सैकड़ों गुणोंकी उत्पत्तिके रहस्योंको जगा रहे हैं, हमारी आत्मा आनन्द लोकमें प्रवेश कर रही है—और हम ठीक उसी तरह आनन्दमें मत-वाले हो रहे हैं, जिस तरह ऊषाकी स्वर्ण किरणें पड़ते ही गुलाब अपने दलों को खोलकर खिल उठता है, वसन्तके आगमनसे पक्षी चहचहा उठते हैं।

हमारे कानोंमें मधुर या कर्कश, छोटी या बड़ी—जितनी आवाजें आती हैं—सबमें आश्चर्य जनक सनसनी रहती है। मगर तुम उस सनसनीसे फायदा इसलिये नहीं उठा सकते कि तुम्हें पता नहीं—हमारे कानोंकी क्या खूबियां है। तुम उनकी तरफ कभी ध्यान भी नहीं देते।

जिस समय तुम संसारमें कान खोलकर चलोगे, उस समय तुम्हारी आंखोंके सामने आश्चर्य बातोंसे भरी हुई एक ऐसी किताब खुल जायेगी कि तुम उसे पढ़कर जीवन रहस्योंको सुगमतासे समझ लोगे।

कानोंकी अद्भुत शक्तियां जगानेके लिये मधुर संगीत सुनो, समुद्रके

किनारे टहलो और उसकी गर्जना का आनन्द लो। जङ्गलमें दरख्तोंकी पत्तियोंकी खड़ाखड़ाहट, पशुओंकी विचित्र बोलियाँ और चिड़ियोंके चुटीले राग दिलमें भरो। गङ्गाकी कलकल निनादोंकी बहारें लूटो। बिजलीकी कड़कती आवाजें, बादलोंकी रणभेरियां, निशीथ तारोंके मौन संगीत, कान-शक्तियों को जगाते हैं, और दिमागमें शक्तिशाली विज्ञान भरते हैं।

यदि तुम्हारे कानोंमें किसी शक्तिकी सनसनाहट नहीं, उनमें तुम्हें कोई रहस्य नहीं मालूम होता—तो सोयी शक्तियोंको जगानेके लिये संगीतके प्रेमी बनो। संगीतका प्रभाव बड़ा विचित्र है। जंगलीसे जंगली मनुष्यसे लेकर सभ्यातिसभ्य मनुष्य उसके प्रभावके वशीभूत हो जाते हैं।

फारसमें मिरजा मोहम्मद नामके एल सज्जन बीणा बजानेमें उस्ताद थे। जब वह बीणा बजाते, आसपासके दरख्तोंमें बुलबुलें फुदकने लगतीं। उन पर वीणाकी मधुर ध्वनिका विशेष प्रभाव पड़ता। वे आनन्दके आवेशमें गिर पड़तीं और बेहोश हो जाती। वे सब उस समय तक बेहोशीको हालतमें पड़ी रहतीं, जब तक कि वह दूसरे स्वरका प्रयोग न करते। ज्यों ही वह स्वर बदलते, बुलबुलें होशमें आकर उड़ जाती थीं।

साँप जैसे जहरीले जानवरको मदारी किस तरह तोंबीके स्वरमें आकर्षित कर लेते हैं, इसका सबको पता है।

दरअसल संगीत सुननेके लिये अचल सचल सभीके कान होते हैं। जब बैजू बावरा मेघ मल्लार राग गाते, तो बादल पानी बरसा देते थे। वह जब दीपक राग अलापते तो दीपक आपसे आप जल उठते थे। बात यह

है कि सङ्गीतका प्रभाव अद्भुत है। भगवान स्वयं संगीतके उपासक हैं। वे कहते हैं—"मैं न तो बैकुण्ठमें रहता हूं, न योगियोंके मनमें। मुझे तो वहां रहनेका अभ्यास है, जहां भक्त संगीत द्वारा मेरी उपासना करते हैं"।

नौ-दस वर्ष पहलेकी बात है। मेरे एक बी० ए० पास मित्रके पिताजीके हृदयकी गति रुक जानेसे देहान्त हो गया। परिवारमें चार-पांच विधवा औरतें और सात आठ छोटे बच्चे थे। उनपर विपत्तियोंका पहाड़ आ टूटा। घरमें पैसोंका अभाव। गृहस्थीका खर्च कैसे चले? वह कमजोर दिलके आदमी थे, बहुत ज्यादा घबरा गये। पासमें ऐसी पूंजी भी न थी कि कोई छोटा-मोटा रोजगारकर लेते। बेचारे नौकरीकी तलाशमें दर-बदर की ठोकरें खाने लगे; मगर लाख कोशिशें करने पर भी उन्हें नौकरी न मिली। उनकी योग्यता, बेचैनी और घबराहटके प्रति किसीने सहानुभूति न दिखायी। जहां जाते, अपमानित होते और कुत्तेकी तरह दुतकारे जाते। फूलको छूते तो कांटा हो जाता और सोनेकी तरफ उँगली उठाते तो मिट्टी का ढेर नजर आता।

इस मुसीबतमें उन्हें छः महीनेसे ज्यादा बीत गये। उनकी सूरत बरसों जेलमें पड़े हुए कैदीकी तरह हो गयी। आंखोंमें निराशा और भयके भाव भर गये।

एक दिन वह इसी अवस्थामें घरसे एक ग्लास चुरा लाये। बाजारसे अफीम खरीदी, पार्कमें घुस गये और सन्नाटेमें अफीमको ग्लासमें घोल डाला उन्हें इस समय सब मुसीबतोंसे उद्धार पानेका एक ही मार्ग दिखाई दे रहा था—आत्महत्या!

आकर्षण-शक्ति

सन्ध्याका समय था। सूर्यदेव इस नवयुवककी बेवकूफीको घृणाकी दृष्टि से देखते हुए अस्ताचलकी ओर जा रहे थे। चिड़ियां बसेरा लेनेके लिये आपसमें चोंचें चला रही थीं। मेरे मित्रने अफीम से भरा हुआ ग्लास उठाया—उसे छाती तक ले गये, फ़िर धीरे-धीरे मुंहके पास। वह ज्योंही उसे पीनेको तैयार हुए—उनके कानोंमें एक संगीत ध्वनि सुनाई दी। जिसका भाव यह थाः—

"तुम्हारे आसपास राम रम रहे हैं। तुम उन्हें ढूंढ़ो। उनके दर्शन-आनन्दसे तुम्हारे सब संकट दूर हो जायेंगे।"

इस संगीतमें मिठासका-सा जादू था। उसमें स्वरोंका इतना प्यार और रागोंका ऐसा आनन्द उछल रहा था कि मेरे मित्र मस्त हो गये। उनके हाथसे ग्लास छूटकर जमीनपर गिर पड़ा और अफीमके सारे जहरको पृथ्वी पी गयी!

मेरे मित्र उस संगीत-ध्वनिपर पागलसे हो गये। आत्महत्याकी जगह कानोंने उनके मनमें प्रेमकी दरिया बहा दी। वह शराबीकी तरह लड़खड़ाते हुए उठे—पार्कसे निकलकर सड़कपर आये। कुछ दूर भिखमंगोंकी छोटीसी टुकड़ीके बीच एक दस ग्यारह बर्षकी बदसूरत लड़की उपरोक्त गाना गा रही थी। एक आदमी हारमोनियम बजा रहा था। चारों तरफ तमाशबीनोंकी भीड़ थी।

मेरे मित्र भीड़ चीरकर लड़कीके सामने जा खड़े हुये। लड़कीने उन्हें देखा और भयसे चीखकर हारमोनियम बजानेवालेसे चिपट गयी। संगीत बन्द हो गया। भीड़में कोलाहल मच गया। एक तरफसे आवाज आयी

मारो। दूसरी तरफसे एक आदमीने कहा—गुण्डा है। हारमो-नियमवालेने न आव देखा, न ताव—एक गहरा तमाचा मेरे मित्रके मुंहमें जड़ दिया!

तमाचा तेज था; मगर मेरे मित्रपर उसका उल्टा असर हुआ। वह आनन्दसे झूमने लगे और खिलखिलाकर हँसते हुए लड़कीको पकड़ने दौड़े।

भीड़में और तहलका मचा। लोगोंने इसे बदमाशी समझकर लात-घूंसोंसे मेरे दोस्तकी पूजा शुरू कर दी।

उसी तरफसे एक फ्रेंचकट दाढ़ीवाले सज्जन जा रहे थे। उन्होंने बड़ी मुश्किलसे भीड़के चंगुलसे मेरे मित्रको छुड़ाया। वह किसी कालेजके प्रोफे-सर थे। उन्होंने मेरे मित्रसे इस मारका सबब पूछा। मित्रने लड़खड़ाती जबानसे अपनी समस्त रामकहानी कह सुनाई।

प्रोफेसर साहबको बड़ा ताज्जुब हुआ, मगर किसीको विश्वास न था। लोग पार्कमें आये। पागलने अपनी सचाईका प्रमाण उंगलीके इशारेसे दिखा दिया। प्रोफेसरने काले पदार्थको सूंघकर देखा—वह अफीम थी।

प्रोफेसर साहब दार्शनिक थे। उन्हें इस युवकपर बड़ी दया आयी। वह उसे अपने घर ले गये। दो दिन बाद मैंने इस घटनाको धड़कते दिलसे सुना। उस समय मेरे मित्र साहबी लिबासमें एक सोफेपर बैठे मेरी खातिरदारीका इन्तजामकर रहे थे। उन्हें सौ रुपये महीनेकी नौकरी मिल गयी थी। वह प्रोफेसर साहबके प्राइवेट सेक्रेटरी थे!

ऐसा है विचित्र कानोंका रहस्य। कान संगीतकी सनसनी द्वारा हमें कीमती आविष्कारोंका पता देते हैं।

बच्चे आमकी गुठली बजाते हैं, पहले घिसते हैं—फिर बजाते हैं। घिसते घिसते जब स्वर बज उठता है, तब वे उन्हें और नहीं घिसते। अधिक घिसनेसे वह और बजेगी क्यों? मनुष्य भी जब संगीत सुनकर अपनी दुःख गाथाओंको क्षय कर डालते हैं—तब उन्हें आत्महत्या जैसे पापकी आवश्यकता नहीं पड़ती। वे अपने चारों तरफ आत्माकी आवाज सुनते हैं—उस आवाजके आघातसे वे जाग उठते हैं।

यदि तुम सूखी तबियतके हो, संगीतसे घृणा करते हो तो मनुष्योंकी भीड़का कोलाहल सुनो। किसी मीटिंगमें चले जाओ, व्याख्यान सुनो। घड़ीकी टिक्टक् आवाज़, टेलिफोनकी घण्टी, मोटरका हार्न, जहाज़ या रेलकी सीटी तथा किस्म-किस्मके बाजोंकी ध्वनि भी फ़ायदेकी चीजें हैं। यह सब तुम्हारी मानसिक मुसीबतोंके जङ्गलको काटकर साफ कर देंगी और उसकी जगह छोड़ देंगी—बासन्ती उपवन और किस्म किस्मके खिले हुये फूलोंके झुण्ड! जिनकी मतवाली खुशबूसे तुम्हारा दिमाग हर समय ताज़ा और नया रहेगा।

सुननेवाले मनुष्य यदि बेवकूफ़ीसे अपने कान बन्द कर लेते हैं, तो इसके यह माने हुए कि वह आलस्यरूपी साँपको दूध पिलाकर पालते हैं, क्योंकि आलस्यके चिरसंगी हैं—निर्धनता और अपमान; जो मनुष्य जीवनकी स्फूर्ति, तथा जागृतिको नाशकर देते हैं। इसलिये कानोंके कपाट खोलनेके लिये जागो और ब्रह्मचर्य पालन करो। ब्रह्मचर्यके माने हैं ईश्वरके साथ चलना। इस बलसे तुम्हारे अन्तः शरीरमें महाशक्ति आ जायगी, दुर्वलताओंके बन्धन

टूट जायँगे और तुम मनुष्योंमें प्रकाशमयी शक्तियाँ पहुँचानेके प्रधान साधन बन जाओगे।

सच्चा ज्ञान हमें आंखों और कानों द्वारा प्राप्त होता है, जो अन्धकारके कैदखानेसे निकलकर प्रकाशकी दुनियामें घूमनेकी आजादी देता है। इसलिये कानके रहस्योंको समझनेमें ज्यादेसे ज्यादा दिलचस्पी उत्पन्न करो।

तुम जागते हो, परन्तु नींदसे ज्यादा बेहोश हो। सब कुछ सुनते हो, मगर इस कानसे सुनते हो, उस कानसे निकाल देते हो। मैं कहता हूं, जब तुम्हारे कानोंकी सभी तन्त्रियोंके स्वर ठीक हो जायेंगे, तुम्हारी हृदय-वीणा झनझना उठेगी और तब उसकी सफलताओंके अमर संगीत तुम्हें मुग्ध करने लगेंगे।

जिस तरह सन्ध्या शान्त होकर मूक वृक्षोंके बीच अपने सौन्दर्य—आनन्दका तमाशा दिखाती है, उसी तरह अपने शोक और दुःखोंमें शान्त रहकर तुम भी मनुष्यताके चमत्कारोंको संसारमें फैलाओ। चिन्ताओंका स्वागतकर यदि तुम अपने कान बन्द कर लोगे, तो जीवनकी उन्नतिका संगीत भी न सुन सकोगे, और तुम्हारा मनुष्य जीवन असमयमें ही मुर्दा हो जायगा।

———

लक्ष्य या सिद्धान्त

तुम्हारा जीवन कुरुक्षेत्रका मैदानजंग है। इसमें रोज ही विषाक्त गैसें चलती हैं, सनसनीखेज वायुयान उड़ते हैं, और भीषणसे भीषण बम्बार्ड होते रहते हैं। जिन्दगीके इस महासंग्राममें जो कायर, निकम्मे, और सिद्धान्त-हीन हैं—कुत्तोंकी मौत मरते हैं; परन्तु कर्मवीर सैनिक झुण्डके झुण्ड इस महासमरमें अवतीर्ण होकर आगे बढ़ते हैं। इन्हें कुरुक्षेत्रका युद्ध क्या, संसारका कोई भी महासमर नहीं परास्तकर सकता। यह अपने लक्ष्यपर बेचूक निशाना मारते हैं और विजयके स्वर्ण-सिंहासनपर जा बैठते हैं।

यदि तुम जिन्दगीको सोनेकी तरह चमकाना चाहते हो, संसारके सिरमौर बनना चाहते हो, तो किसी सिद्धान्तको चुनो। सच्ची लगनके साथ कार्य-क्षेत्रमें उतरो। तुम्हारा सौभाग्य-सूर्य चमकनेकी प्रतीक्षाकर रहा है।

तुम्हारा लक्ष्य क्या होना चाहिये ?—कोई अनोखी कामना, कोई अभि-लाषा। यदि तुम कलाकार, कवि, दार्शनिक या वैज्ञानिकोंकी श्रेणीमें, आना चाहते हो, व्यापारकी दुनियामें चमकनेका इरादा है, जज, इन्जीनियर, डाक्टर, प्रोफेसर और ऐसी ही किसी दूसरी ऊँची कुर्सीपर बैठनेका खयाल है—अमीर बनना चाहते हो, तो अपने लिये कोई दिलचस्प काम चुनो। उसके 'प्लान' बनाओ और आत्मबल, उत्साह, तथा मानसिक ताकतोंके साथ आगे बढ़ो, सफलता तुम्हारे चरण चूमेगी।

लक्ष्य या सिद्धान्त

यदि तुम विचारपूर्वक देखो तो जिन्दगीकी दिलचस्पी तुम्हें लक्ष्य या सिद्धान्तमें मिलेगी। मनुष्योंकी उन्नतिके इतिहास पढ़ो। योद्धा, साहित्यिक, व्यापारी, तथा धनी-मानी पुरुषोंके जीवनचरित अध्ययन करो। तुम्हें मालूम होगा कि उनकी सफलताका महान वैज्ञानिक तत्व था—लक्ष्य या सिद्धान्त। वे किसी न किसी उद्देश्यको लेकर हो कार्यक्षेत्रमें अवतीर्ण हुये थे। मुसीबतके काँटोंको उन्होंने फूलसे अधिक कोमल समझा। और वे जीवन-संग्राममें हमेशा मैदान सर करते गये।

आज भी इस चिन्ताशील जगतमें सैकड़ों हजारों औरत-मर्द ऐसे मिलेंगे, जो किसी न किसी सिद्धान्तको लेकर ही जोवनकी कठिन मंज़िल तय कर रहे हैं। उन्हें दिलचस्पीसे देखो, होशियारीसे पहचानो। उनके श्रीमुखमें आत्माभिमानकी अमर ज्योति जगमगा रही है। अखबारोंमें उनके नाम निकल रहे हैं। समस्त भूमंडल उनके सिद्धान्तोंका भक्त है—

यह सत्य है कि बगैर सिद्धान्तके सिद्धि नहीं मिलती। आज हज़ारों लाखों स्त्री-पुरुषोंके दिल टटोलकर देखो—उनके जीवनका कोई सिद्धान्त नहीं। वे लक्ष्यहीन हैं। दुनियामें पैदा होते हैं, खाते कमाते हैं और सोकर हमेशाके लिये अनन्तके गर्भमें अन्तर्द्धान हो जाते हैं। इन्हींकी देखादेखी, इन्हींके चरण-चिह्नोंपर चलकर आज हम मूर्ख और निकम्मे मनुष्य मुसीबतोंके हाहाकारमें अपनी अमूल्य ज़िन्दगीको मिट्टीमें मिला रहे हैं। हमारी नादानीका इससे बड़ा सबूत और क्या मिल सकता है?

ज़िन्दगीमें किसी लक्ष्य या सिद्धान्तका न होना दुर्भाग्यकी बात है। किसी एक सिद्धान्तकी उपासना करो। जब तक एक न पूरा हो दूसरेकी

तरफ़ नज़र न उठाओ। नहीं तो वही कहावत चरितार्थ होगी—"दुबिधामें दोनों गये, माया मिली न राम।" दो नावोंमें पैर रखनेवाले मनुष्य डूब जाते हैं।

अब तुम्हें यह जान लेना जरूरी है कि तुम्हारे जीवनका सिद्धान्त शक्तिशाली और अकेला होना चाहिये। यह नहीं कि तुम शेखचिल्लीकी तरह सोचने लगे—"मैं मज़दूरीकर चार पैसे कमाऊँगा, पैसोंको मुर्गियां खरीदूंगा, मुर्गियां सोनेके अण्डे देंगी—अण्डे बेचकर महल बनाऊँगा, इत्यादि।" यह कोई लक्ष्य या सिद्धान्त नहीं, विचारोंकी निरर्थक लहरें हैं—जो आंधीकी तरह दौड़कर जीवनकी चट्टानोंसे टकराती हैं और फौरन उलटे पैरों लौट जाती हैं। ऐसी निर्जीव विचारधाराओंसे कोई फायदा नहीं। इनसे मन घूमने लगता है, ध्यानशक्ति कई भागोंमें बँट जाती हैं और तुम किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाते हो।

सिद्धांत दो तरहके हैं—अच्छे और बुरे। बुरे सिद्धान्तों को दिलमें जगह मत दो, क्योंकि उनकी सनसनाहट से जिन्दगीका सारा रस सूख जाता है और तुम फौरन मैदान छोड़ भागते हो। अच्छे सिद्धान्तोंको ग्रहण करो। जो आत्मा अच्छे सिद्धान्तोंको जानती है, वह जीवन-संग्राममें अपनेको कभी अकेला नहीं देखती। वह अपनी तकलीफोंको एक ओर पटक देती है और ऐसी उन्नतशील शक्तिको पकड़ती है, जिसका पहले उसे ज्ञान तक न था।

तुम्हारी आँखोंके सामने दुनियामें जो चीज़ हैं, जिसे तुम हासिल करना चाहते हो, जो तुम्हारे दिलमें प्यारके पौधेकी तरह लहलहा रही है—एक न

एक दिन तुम्हें अवश्य मिलेगी। हाँ, तुम्हें सिद्धान्तके तपस्याको जरूरत है—सच्चे दिलसे उसीके नामको माला फेरनेको आवश्यकता है।

यह न सोचो—"मैं भला क्या कर सकता हूं ?" उलटे यह भावना बनाओ—"मैं क्या नहीं लर सकता !" तुम प्रायः ऐसे जन्मान्ध आदमियों को देखते होगे, जिनमें कोई न कोई ऐसा महान गुण होता है, जिसे देखकर सबको चकित रह जाना पड़ता है। तुम सोचोगे—इस बिना पढ़े-लिखे, बिना दुनिया देखे अन्धेमें इतनी करामात कहांसे आ गयी ? इसमें अवश्य कोई न कोई दैवी शक्ति है। हां, सचमुच उसमें दैवी शक्ति है। अन्धा होनेके कारण वह आत्म संसारमें रहता है और उसे आत्म-चिन्तनसे अपना लक्ष्य बोध होने लगता है, तब वह एक महान गुण लेकर हम लोगोंके सामने प्रकट हो जाता है।

सिद्धान्तोंकी सफलताके लिये हमें अपनी मङ्गलमयी आत्माको पहचानना होगा। यह आत्मा दैवी निधियोंकी कल्याणी है। जिस तरह दैवी शक्तिमान है, उसी तरह आत्मा भी हममेंसे प्रत्येकको दैव विभूति प्रदान करती है। यदि तुम आत्माके विश्वासको लेकर कर्तव्य-पथपर अग्रसर होगे, तो तुम्हें नदी भी मार्ग दे देगी; पर्वत भी सिर आंखोंपर उठा लेंगे। लक्ष्य या सिद्धान्तसे जीवनकी कोई ऐसी ग्रन्थि नहीं, जो खोली जा सके।

तुम्हें ऐसे सैकड़ों उदाहरण मिलेंगे, जिनसे ज्ञात होगा कि जिनकी गणना पहले गरीब, मूर्ख और कमजोरोंमें होती थो, वहीं सिद्धान्तको लेकर अमीर, विद्वान और बहादुर बन गये। गोल्डस्मिथको लो—उनकी गँवारोंमें गिनती थी; पर Vicar of the Weak field और Deserted

Village उन्हींके दिमागकी रचना है । लार्ड क्लाइव स्कूलमें सबसे ज्यादा कमजोर और मूर्ख समझे जाते थे; पर इतिहासके पन्नोंमें वह अंग्रेज जाति-के गौरव हैं। स्काट, बायरन, कालिदास—सभी मूर्ख समझे जाते थे; पर उनकी प्रतिभा सिद्धान्तोंको लेकर बादमें चमकी। किसीने ठीक ही कहा है—"जिसने अपनी योग्यताको चमकानेका कोई उद्देश्य बना लिया है, दुनिया में वही धन्य है।"

बहुतसे लोग परिश्रम करते हैं, मगर उन्हें सफलता नहीं मिलती। यदि उनसे पूछा जाय कि तुम्हारा सिद्धान्त क्या है, तो वह मुंह बिगाड़कर कहेंगे—"सिद्धान्त फिद्धान्त मैं नहीं जानता। मुझे मेहनतमें विश्वास है कुछ न कुछ हो ही जायगा।" ऐसे लोग बड़े हजरत होते हैं। इनके जीवनका कोई लक्ष्य नहीं। इन्हें तो बस फावड़ा चलानेसे मतलब—जमीन से चाहे कुछ निकले या न निकले। अब तुम्हीं बताओ, जिस मल्लाहको यह खबर नहीं कि उसे किस बन्दरगाहमें पहुंचना है, उसकी आंधी और तूफानमें क्या हालत होगी?

कारलाइलने लिखा है—"कमजोरसे कमजोर आदमी भी अपनी शक्तिको लक्ष्यपर रखकर कुछ न कुछ कर दिखाते हैं; पर ताकतवरसे ताकतवर अपनी शक्तिको छिन्न-भिन्न कर कुछ नहीं कर पाते।"

डिकेन्ससे उनकी सफलताका रहस्य पूछा गया, तो आपने फरमाया—"मैं ऐसा कोई काम नहीं करता, जिसमें मैं अपने आपको दृढ़तासे न लगा दूँ।" सर जगदीशचन्द्र बसुकी गणना सफल व्यक्तियोंमें की जाती है, क्योंकि उन्होंने संसारकी ज्ञानवृद्धिके लिये अपना जीवन दरख्तों और पौदों के अध्ययनमें बिता दिया।

सिद्धान्तको ऊंचा रखो। जीवनमें नवीन ज्योति जगाओ। निशाना ताककर तीर फेंको। कुतुबनुमाकी सुई, कितना भी प्रयत्न किया जाय, एक ही सिद्धान्तको बतलाती दिखाई देगी। फिर हम क्यों न उसे अपना गुरु बना लें ?

आज ज्यादातर नवयुवकोंका पतन क्यों हो रहा है ? इसका कारण यह है कि वे लक्ष्य पथसे हटकर बुरी भावनाओंके उपासक हो रहे हैं। उनका मन परिश्रमसे हिम्मत हारकर बैठ जाता है। आत्मा उत्साह हीन होकर दब जाती है। यदि तुम्हें आत्माका शरीरपर शासन करना है, मनको इन्द्रिय रूपी घोड़ोंका सारथी बनाना है, तो उसे स्वस्थ्य रखनेके लिये कोई सिद्धान्त बनाना चाहिये। आत्माको—दैनिक भोजन, सनसनी उत्पन्न करनेवाले समाचार-पत्रों, चटपटे मनोरञ्जनों, जोशीली गपशप और दिखावटी दिलचस्पियोंसे ज्यादा आगे बढ़ाओ। फिर देखो, इसकी शक्ति किस तेजीसे आगे बढ़ती है।

दरख्त अकेला मैदानमें खड़ा है, उसपर कड़ी धूप पड़ती है, मूसलाधार बारिश होती है, तूफानके झोंके झकझोरते हैं। मनुष्योंके झुण्ड ढेले मार-मारकर उसके फलोंको तोड़ते हैं, फिर भी वह सर्द आहें नहीं भरता, किसीसे अपनी मुसीबतें नहीं रोता। उसे परमात्माने जिस उद्देश्यके लिये पैदा किया है, वह अपने उसी उद्देश्यको पूरा करनेमें तल्लीन है। तुम दरख्तोंसे अपना लक्ष्य पूरा करनेकी कला सीखो। मगर इस चिन्तामें कभी न डूबो—दुनिया मुझे क्या कहेगी ?

अपना काम किये जाओ—दूसरोंकी न सुनो। दुनियामें हर मनुष्य

अपने दुःख-सुखका साथी आप है। जिस कामको करनेमें तुम्हें दिलचस्पी हो, फायदा हो, आराम हो—वही करो। दुनिया बके, बकने दो। तुम हरएकको खुश नहीं रख सकते—न कोई आजतक दुनियाके हरएक चलते-फिरते इन्सानको खुश रख सका है। लोग परमात्मा तकमें दोष निकालते हैं और उसे गालियां देते हैं।

तुम अपने सिद्धान्तके आगे लोक भय, समाज भय और मृत्यु भयको दिमागसे निकाल दो। चिन्ता किस बातकी ? तुम्हारे सिद्धान्त-रथके सारथी स्वयं कर्मयोगी श्रीकृष्ण हैं।

हिम्मत करो और किसी सिद्धान्तको लेकर आगे बढ़ोः—

"सामिलमें पीरमें शरीरमें न राखै भेद,
हिम्मत-कपाटको उघारै तो उघरि जाय।
ऐसी ठान ठानै तो बिनाहू किये जंत्र मंत्र,
सांपके जहरको उतारै तो उतरि जाय॥
ठाकुर कहत कछु कठिन न जानो जग,
हिम्मत कियेते कहो काह ना सुधरि जाय।
चारि जने चारिहू दिसा ते चारो कोन गहि,
मेरुको हिलायके उखारैं तो उखरि जाय।"

समयका चिन्ह

रुपये कमानेमें व्यस्त रहनेवालों का कथन है—

Time is money याने समय रुपया है। बात सच है। यदि विचारपूर्वक देखा जाय, तो समयकी कीमत रुपयेसे भी ज्यादा है। समयका सदुपयोग करनेसे मनुष्यके ज्ञान, स्वभाव और चरित्रको उन्नति होती है। उसमें नियमबद्धता आ जातो है और उसे लोकप्रिय होते देर नहीं लगती। इसे हमेशा ध्यान रखो, ज्यों-ज्यों समय बीतता जा रहा है, त्यों त्यों आयुको घड़ियां समाप्त होती जा रही हैं।

समय क्या है? समय शुभ जीवन और लक्ष्मीका अक्षय भंडार है। परमात्माने हमें सब कुछ दिया है, मगर उसने 'समय' देनेमें कंजूसी की है। वह दो क्षण या दो दिन भी एक साथ नहीं देता। जब पहला दिन देकर छीन लेता है; तब दूसरा दिन देता है; मगर तीसरे दिनको अपने ही कब्जे में रखता है—इसलिये कि मनुष्य आंखें खोलकर चले और समयकी कीमत पहचाने। जो मनुष्य आजके दिनका मूल्य समझता है, उसके लिये कलका दिन और भी कीमती हो जाता है। महात्मा तुलसीदासने अपने अमूल्य समयके नष्ट होनेपर पश्चात्ताप करते हुए कहा है:—

"अब लौं नसानी अब ना नसैं हौं।

मगर हम अँधेरेमें सो रहे हैं। समयके चिन्होंको नहीं पहचानते।

यदि महात्मा तुलसीदासकी तरह व्यर्थ समय नष्ट होनेपर आंखोंमें पश्चात्तापके आँसू उमड़ आयें, तो जीवन आनन्द मार्गपर अटल हो जाये।

एक अंग्रेज कविने समयकी उपमा बेगवती नदीसे दी है। उसकी गूढ़ताको देखिये। वह कहता है—"वेगवती नदी जैसे अनन्त सागरमें चुपकेसे जाकर मिल जाती है, वैसे ही समय भी अपना एक-एक पल अनन्त कोषमें सञ्चित करता जाता है। नदीकी धारा बह जानेके बाद फिर नहीं लौटती। समय भी बीत जानेपर हाथ नहीं आता। परन्तु इतनी समता होते हुए भी दोनोंमें एक भेद बड़ा गहरा है। नदीके दोनों ओरकी भूमि उपजाऊ और लहलही होती है; किन्तु समयका प्रवाह जिधरसे बह निकलता है, उधर अपने पीछे केवल मरुस्थल ही छोड़ता जाता है।

कविकी इस मार्मिक उक्तिमें कितना गहरा तत्व है, यह समय की कीमत जाननेवाले मनुष्य ही समझ सकते हैं। सब लोग यदि सिर्फ इतना ही सोच लिया करें कि समयका सदुपयोग करने से अनेकों लाभ होंगे, तो बहुत कुछ उपकार हो सकता है लेकिन आजके मनुष्यकी दशा यहाँ तक गिरी हुई है कि वे अपने मतलब की बात तक नहीं समझते। उलटे समयका दुरु-पयोग किया करते हैं। देखिये न, प्रतिदिन लोग ढेरके ढेर मुर्दे श्मशानकी तरफ जाते देखते हैं; मगर जो जीते हैं, वे समझते हैं—हम हमेशा जीते रहेंगे। इससे बढ़कर आश्चर्यकी बात और क्या होगी?

समयका वेग अबाधित है। यह न दिन देखता है, न रात। एक-एक सेकेण्डसे शताब्दियां बनाकर अनन्त पथपर चला जाता है। इसलिये जो समयको गलेसे लगाते हैं। भविष्य उन्हीं के दोनों हाथों में लड्डू देता है।

समयका चिन्ह

लार्ड सिनहासे किसीने पूछा कि आपको सफलता कैसे प्राप्त हुई ? उन्होंने कहा कि सिर्फ योग्यतासे ही सफलता नहीं मिलती। उपयुक्त समय का प्रयोग सफलताके लिये सजीव साधन है। संसारमें प्रत्येक मनुष्यके साथ उसका कार्य भी उत्पन्न होता है ; पर जब तक कोई चेष्टा नहीं की जाती, कोई काम सफल नहीं होता। समय देखते रहने की मुस्तैदी, समयको काममें लाने की होशियारी, समयसे मुमकिन कार्य निकालनेकी सामर्थ इत्यादि ऐसी बातें हैं, जिनसे कामयाबी हासिल होती है। कोई वक्त ऐसा नहीं, कोई दिन ऐसा नहीं, जब कोई न कोई अच्छाई करनेका मौक़ा न पेश आये।

वैंजामिन फ्रैंकलिन जैसे महापुरुषने कहा है—"यदि तुम्हें जीवन बहुत प्यारा हो, तो समय बरबाद न किया करो। क्योंकि समय के खम्भेपर ही ज़िन्दगीकी इमारत टिकी है।"

इतिहासमें उन मनुष्योंके हज़ारों उदाहरण मिलेंगे, जिन्होंने समयको हाथसे नहीं जाने दिया और असम्भव कार्योंमें सफलता पाई। तुम असाधारण समयकी प्रतीक्षामें क्यों वक्त बरबाद करते हो ? मामूली समयका उपयोग करो और उसे बड़ा बनाकर दिखाओ। कमज़ोर आदमी समयका इन्तज़ार करते हैं। पर सामर्थ पुरुष उसे पैदा करते हैं। खुली आंखोंसे समय दिखाई दिये बिना नहीं रह सकता। खुले कान समयकी आवाज़ सुने बिना नहीं रह सकते। खुले दिलोंके वास्ते काम करनेके लिये बढ़िया वक्त आये बग़ैर नहीं रह सकता।

पश्चिमी नई दुनियां कब नहीं थी ? वह कौनसा मल्लाह था, जिसके आगे यह समय मौजूद न था; पर अमेरिका ढूंढ़ निकालनेका श्रेय कोलम्बस

को ही प्राप्त हुआ। पेड़ोंसे सेव गिरते किसने नहीं देखे? पर सेवोंका गिरना देखकर प्रकृतिके नियमोंको पहचानने का यश न्यूटनको ही मिला। बिजली चमकती किसने नहीं देखी? पर उसकी उपयोगिता सिद्ध करनेका श्रेय फ्रेंकलिन को ही था।

हम जिस दिन समयका मूल्य समझने लग जायँगे, हमारी उन्नतिके मार्गमें रोड़े नज़र न आयेंगे। समयमें उन्नतिका रहस्य छिपा है। समय का ही दूसरा नाम जीवन है। जीवनकी सार्थकता इसीमें है कि तुम एक मिनट भी व्यर्थ बरबाद न करो। नित्य नये 'चान्स ढूंढ़ो और जिन्दगीमें नये परिवर्तन करो। याद रखो, हम इसी जन्ममें अनेकों अवतार ले लेते हैं।

समय 'विलपावर' का प्रश्न है। जो लोग समयके चिन्होंको नहीं पहचानते, उनके 'विलपावर' में मोर्चा लग जाता है और वे अपनेमें कोई चमत्कार नहीं पैदा कर सकते।

जिन्दगीको रोज चेक करो। मैंने कितनी उन्नति की? मैं कहां तक पहुंच गया? कल मेरा दिन कैसा था, आज कैसा है? रोज रात को इसका पूरा हिसाब कर डालो। परिश्रमका फल अपने आप मिल जायगा।

यदि तुम्हें यह सब काम करनेमें कठिनाई हो, तो एक रोजाना या साप्ताहिक 'टाइम टेबुल' बनालो और उसीके अनुसार समयका सदुपयोग करो। वह तुम्हें पथप्रदर्शकका काम देगी। यदि तुम समयको ठुकरा दोगे, तो गलीके ठींकरे ही रह जाओगे, और तुम्हें कोई न पूछेगा।

समयके सदुपयोग और दुरुपयोगके विषयमें एक शायर फरमाते हैं:—

"नफेकी क्या खाक हो उम्मीद हमको बर्फमें,
देर बिकनेमें लगी तो गलके पानी हो गया।"

समयका चिन्ह

समयकी दशा ठीक बर्फकी सी है। यदि तुम उसका सही उपयोग न कर सके, तो एक अमूल्य सम्पत्तिके लाभसे वंचित रह गये !

मैंने अपने बहुतसे दोस्तोंको देखा है, वे सूर्यकी रोशनीमें टांगे पसारकर सोते हैं। कुछ व्यर्थके तर्क, मनुष्योंकी निन्दा स्तुति और झगड़े फसाद में अपना कीमती समय बरबाद करते हैं। होटलोंमें, चायखानोंमें, शराब और अफ़ीमके अड्डोंमें, बैठकखानोंमें देखो, हजारों बे-परके कबूतर उड़ते दिखाई देंगे। यदि इन कबूतर उड़ानेवालोंसे कहो—भाई, कोई अच्छा काम करो, दुनियामें नाम कमाओ—अखबार और अच्छी-अच्छी किताबें पढ़ो, तो वह मुंह बनाकर उत्तर देंगे—मुझे समय नहीं मिलता ! ऐसे मनुष्य दयाके पात्र हैं। जरूरी, विश्वासपूर्ण ऊंचे दर्जेके कामको हाथमें लेनेके अयोग्य। एक बार वाशिंगटनके सेक्रेटरी साहब को ठीक समयपर कामपर पहुंचनेके लिये देर हो गई ? आपने अपनी इस गलती के लिये उनसे मांफी मांगते हुए कहा—"मेरी घड़ी सुस्त चलती थी, देर होनेका यही सबब है।" वाशिंगटनने प्रेमपूर्वक उत्तर दिया—"कलसे या तो आपको अपनी घड़ी बदल देनी होगी या मुझे दूसरे सेक्रेटरीका इन्तजाम करना पड़ेगा।"

मनुष्य के पास जब रुपया रहता है, वह उसे पानीकी तरह बहाता है, मगर जब रुपयोंका स्रोत सूख जाता है तो उसे रुपयोंकी असली कीमत मालूम होती है। यही बात उन आदमियोंपर भी लागू है, जो समयका मूल्य वक्त चले जानेपर समझते हैं, हाथ मलमलकर पछताते हैं, तथा मरनेके कुछ घण्टे पहले समयके सदुपयोगकी बातें सोचते हैं और पश्चात्ताप करते हैं—हाय, मैंने कितना ही समय व्यर्थ खो दिया !

आकर्षण-शक्ति

समय की एक-एक घड़ी जागरणकी बिगुल-ध्वनि है। समयका एक-एक जर्रा ज्ञान-विज्ञानका चमत्कार है। समयका एक-एक सेकेण्ड मौतका काला पैगाम है :—

सुबह होती है शाम होती है,
उम्र यों ही तमाम होती है।

रोज एक घण्टा फिजूल बरबाद करनेसे बचाकर एक साधारण आदमी भी किसी विज्ञानका ज्ञाता हो सकता है। एक घण्टा प्रतिदिनके अध्ययनसे एक मूर्ख व्यक्ति बुद्धिमान बन जाता है। एक घण्टा रोज पढ़नेसे कोई भी विद्यार्थी एक सालमें दस हजार पेज पढ़ सकता है। एक घण्टा रोज काम करनेसे भूखों मरता आदमी रोजी कमा सकता है। एक घण्टा रोजके उद्योगसे एक अज्ञात व्यक्ति सुप्रसिद्ध हो सकता है। इसी तरह यदि सुकर्मोंमें हमारा सारा समय व्यतीत होता रहे—तो जीवनलता रसीले फूल-फलोंसे लद जाय और हमारा मनुष्य जन्म सार्थक हो।

समयका उचित उपयोग न करनेसे हरदम दिक्कतें उठानी पड़ती हैं। यदि तुम अपना काम पूरा करना चाहते हो, तो उसे अपने हाथोंसे करो—यदि पूरा नहीं करना चाहते, तो दूसरोंको सौंप दो।

सफलताके लिये समयकी पाबन्दी और उपयोग आवश्यक हैं। देर लगाने या टालमटोल करनेसे संसारमें अनर्थ हो गये और होते रहते हैं। इसकी एक-एक घड़ी भाग्यशाली है, इसका एक-एक पल बीत जानेसे निश्चित कार्य फिर नहीं हो सकता। जैसे लोहा ठंडा हो जानेपर पीटनेसे कोई लाभ नहीं, इसी तरह जो कार्य कलपर टाल दिया जाता है, फिर

वापस नहीं आता। कौन विद्यार्थी नहीं जानता कि परीक्षा के समय देरसे आनेपर क्या हानि होती है ? कौन विद्यार्थी एक बारमें उतीर्ण न होकर यह चाहेगा अब कि देखा जायगा, और अबकी दफा जो देखने वाले हैं, उन्हें सफल होते कभी नहीं देखा गया।

हम चारों तरफ अपनी मुसीबतोंका रोना रोते हैं कि हम गरीब हैं, हमारे बाल-बच्चे भूखों मर रहे हैं। यह कमजोरियां है। दुनियामें विशाल कार्यक्षेत्र पड़ा है। चारों तरफ कारूँका खजाना चमक रहा है, मगर उसे प्राप्त करनेवाला चाहिये। हमारी सबसे बड़ी कमजोरी यह है कि हम जानते हुए भी समयका प्रयोग नहीं करना चाहते। हम धन, नाम या योग्यता प्राप्त करनेके लिये किसी असाधारण समयकी प्रतीक्षा करते हैं, और कर्ज लेकर धनवान बननेकी इच्छा रखते हैं।

यह भयानक भूलें हैं। किसी खास समयकी प्रतीक्षा न करो, बल्कि उसे पैदा करो। सुनहरे मौके सुस्त आदमीके लिये कुछ भी नहीं; पर मिहनती मनुष्यके मामूली काम भी सुनहरे मौकोंके समान हैं। गया वक्त फिर हाथ नहीं आता। खोया हुआ धन कंजूसी और परिश्रमसे, खोया हुआ ज्ञान पढ़ने और अध्ययनसे, खोया हुआ स्वास्थ्य अनुपान और औषधिसे फिर मिल सकता है ; पर खोया हुआ समय हमेशाके लिये हाथसे निकल जाता है। किसीने ठीक कहा है :—

"काल करै सो आज कर, आज करै सो अब्ब।
पलमें परलै होयगी, बहुरि करोगे कब्ब ?"

तुमने जिस आदमीसे जिस समय मिलनेका वादा किया हो—सौ काम

छोड़कर उससे ठीक 'टाइम' पर मिलो। यदि ऐसा न करोगे, तो लोगोंमें तुम्हारी तरफ से विश्वास उठ जायगा।

यदि तुम किसी मीटिंग, कान्फ्रेन्स, थियेटर, क्लब या बायस्कोपके संचालक हो तो उन्हें ठीक समयपर आरम्भ करो। बहुतसे लोग स्टेशनपर उस समय पहुंचते हैं, जब गाड़ी छूट जाती है।

समय प्रकृतिका कानून है। प्रकाण्ड सूर्यसे लेकर धूलिकण तक, अनन्त नक्षत्रसे लेकर जुगनू मंडल तक, पशु, पक्षी, कीट, पतंग, जल, अग्नि, वायु—सब समयके नियमोंका पालन करते हैं। देखो, सूर्य ठीक समय पर उदय होता है और ठीक समयपर अस्त। उसमें क्वार्टर सेकेण्डका भी हेर-फेर नहीं पड़ता। आजकी बताई तारीखसे ठीक पचास वर्ष बाद भी 'ग्रहण' का वही समय होगा—उसमें जरा भी फर्क न पाओगे।

समयका ठीक-ठीक उपयोग करो। उसके चिन्होंको पहचानो। समय सागरके पास आकर प्यासे न लौटो। श्वांस-श्वासमें इस परमानन्द-रसका पान करो। जब चिड़ियोंका झुण्ड हरा-भरा खेत चुन जायगा, तब पछतानेसे कोई फायदा न होगाः—

"दीबो अवसरको भलो, जासों सुधरै काम।
खेती सूखे बरसिबो घनको कौने काम?"

———

असली और नकली मनुष्य

ईश्वर वर्तमान समयका सबसे बड़ा इंजीनियर, गणितज्ञ और वैज्ञानिक है। उसकी रचनायें मौलिक चमत्कारोंसे भरी हैं। उसकी लीलायें, विशाल और अखण्ड हैं। परन्तु मनुष्य—?

मनुष्य ईश्वरकी सृष्टिका सर्वश्रेष्ठ, होशियार और सुन्दर प्राणी है। ईश्वर ने उसे प्रकांड बुद्धि प्रदान की है। पृथ्वी, वायु, तेज और आकाशके तत्वोंसे उसकी रचनाकर वह स्वयं उसकी आत्मामें परमात्मा बनकर समा गया है। यहींसे वह मनुष्यके प्रत्येक कार्यकी रिपोर्ट लेता है। वह मनुष्यको जगानेके लिये उसपर मुसीबतें ढाता है। उसने मनुष्यको इस बिशाल पृथ्वीपर इसलिये भेजा है कि वह उसकी बनाई हुई समस्त चीजोंका आनन्द ले; जीवन रहस्य भेदोंको समझे और मानसिक शक्तियों द्वारा भाग्यका स्वयं संचालन करे।

लेकिन मनुष्यकी विचित्रतायें देखो—वह संसारमें आते ही दो भागोंमें विभक्त हो जाते हैं। एक असली रास्ता चुनता है, दूसरा नकली। दोनों अपनी जीवन-नौका संसार-सागरमें खेते हैं, मगर दोनोंमें भेद भारी है।

असली मनुष्य वे हैं, जो अपने जन्म-रहस्य और कर्म-तत्त्वोंको समझ गये हैं। ये विद्याप्रेमी, साफ तबीयत, सत्यके अन्वेषक, उदार और सरल हैं। समदर्शी इतने कि संसारके प्रत्येक मजहबको, हरएक मनुष्यको—एक

निगाहसे देखते हैं। इनके लिये कुत्ते और हाथीका वजन बराबर है। ये असम्भबको सम्भवकर दिखाते हैं। ईश्वर अपने इन असली प्रतिनिधियोंके वर्तमान तथा भविष्य को सुनहरी किरणोंसे सजाया है और इनकी इतनी आकर्षक सहायता करता है कि लोग देखकर दंग रह जाते हैं।

दूसरे नकली मनुष्य हैं। उन्हें ईश्वरकी जरा भी परवा नहीं। इनके लिये जीवनके कानून-कायदे फिजूल हैं। ये जरूरतसे ज्यादा घमण्डी, स्वार्थी झूठे, और दूसरोंकी उन्नती देखकर जलनेवाले होते हैं। इन्हें मानसिक शक्तियोंका जरा भी ज्ञान नहीं। उठाईगीरी, दगाबाजी और बुराइयों से लबालब भरा हुआ है इनका मन। ये स्वार्थके लिये मनुष्योंका खून करते हैं। क्रूर कामनाओंसे इनका मन पागल होकर चारों तरफ घूमा करता है। ये मनके कपटी हैं, जबानके मीठे। ईश्वर इन नकली मनुष्योंको प्राकृतिक घटनाओं के इशारोंसे सदा सावधान करता है, मगर ये अपनी मस्तीमें इस कदर चूर रहते हैं कि उस तरफ इनका ध्यान ही नहीं जाता।

देखा तुमने ? जो असली मनुष्य हैं, वह स्वयं अपने भाग्यके बिधाता हैं। जो नकली हैं, वे भाग्यके हत्यारे, बेवकूफ, और अपराधी !

प्रत्येक मनुष्यके चेहरेको गौरसे देखो। कितने ही आदमी दो-दो तीन तीन तरहकी शक्लें रखते हैं। किसीका चेहरा सुर्ख है किसीका पीला। कोई रोनी सूरत लिये घूमता है, किसीके चेहरेमें हँसी खिलखिला रही है। प्रत्येक मनुष्य अलग अलग रंग रखते हैं। इनमें असली और नकली दोनों तरहके मनुष्य हैं। चतुराईसे इनका अध्ययन करो। ईश्वर और

संसार दोनों ही असली मनुष्यके ग्राहक हैं। इनके हृदय—मन्दिरमें नकली मनुष्योंके लिये कोई जगह नहीं।

यदि कोई मनुष्य यह दावा करता हैं कि मैं ईश्वरको प्यार करता हूं—परन्तु व्यवहारमें वह अपने किसी मनुष्य भाईसे घृणा करता है—तो वह झूठा है क्योंकि जब वह अपने मनुष्य भाईसे, जो कि दृश्य है, प्यार नहीं कर सकता तो वह ईश्वरसे, जो कि अदृश्य है, किस तरह प्यार कर सकता है? ईश्वरका आदेश है मुझसे प्यार करनेके पहले अपने मनुष्य भाईका प्यार करो।

मैं पूछता हूं, इतनी महान आत्मा पाकर तुमने क्या किया? जिस मनुष्य ने कर्त्तव्य पूर्ण करनेकी शिक्षा प्राप्त की है, वह संसारमें सब कुछ कर सकता है। संसारमें रहकर कैसे जीना है, यही सच्ची शिक्षा है। पहले मनुष्य बनना है—पीछे कुछ और।

दोनों ही तरहके मनुष्य विपत्ति पड़नेपर सावधान होते हैं और उन्हें ज्ञान प्राप्त होता है। जब तक मनुष्य ठोकरें नहीं खाता, दुःखोंके बोझे सरपर नहीं ढोता, तब तक वह जीवनके चमत्कारोंकी कीमत नहीं समझता। आफतरूपी धक्के से सचेत होकर मनुष्य ज्ञानी होता है और सहसा अपने आप प्रश्नकर बैठता है मेरे जीवनका यथार्थ लक्ष्य क्या है—मैं इस पृथ्वीपर क्यों आया हूं?

कुछ लोग मनुष्य जीवनको माया कहते हैं। मगर वह माया नहीं, आत्म—सौंदर्य है। कुछ लोग कहते हैं—चार दिनकी चाँदनी है, जीवन चन्द रोज है, तो इसके यह माने नहीं हुये कि हम जड़ बनकर खामोश हो

जायं। चार दिन और चन्द रोज अत्यन्त पवित्र शब्द हैं। इनके द्वारा इन्सान जीबनके गूढ़ रहस्योंको समझ सकता है। यदि तुम किसी सिद्धांत-कोलेकर आगे बढ़ोगे, तो जिस तरह कमल पानीमें रहकर नहीं भींगता उसी तरह मुसीबतोंकी मूसलाधार वृष्टि तुम्हें न भिगो सकेगो।

फ़रिश्ते से बढ़कार है इन्सान होना,
मगर इसमें पड़ती है मिहनत जियादा

कौन कहता है, अयोध्या है—मगर उसमें राम नहीं। समयके चिन्ह पहचानो। मनुष्य और जमाने को देखो। भगवान रामचन्द्र आज जीवित रहकर करोड़ों स्त्री-पुरुषोंके हृदय-सिंहासन पर राज्य कर रहे हैं। जहां हृदयके साथ हृदयका सम्मिलन है, आत्माके साथ आत्माका प्रेमालाप है—वहां आज, इस समय भी सांवलिया श्री कृष्णकी मोहिनी बांसुरी बज रही है, सरस्वतीकी मधुर बीणा झंकृत हो रही है।

गौरसे चमकते हुए शीशेमें, अपना मुंह देखकर सोचो—"मैं कौन हूं—असली या नकली मनुष्य?"

प्रेमका तपोवन

यह प्रेमका तपोवन है !—हां प्रेमका तपोवन ।

यह वही प्रेम है, जिसमें आकर्षण है, वेदना है, और है अमृत-सी मिठास । इसका एक घूंट पीकर सती सीताने भगवान रामचन्द्रके मुखचन्द्र की उपासनाकी थी; पार्वतीने प्रलयंकर शंकरकी मूर्तिपर मानस-प्रसून चढ़ाये थे; सावित्रीने सत्यवानके दर्शन किये थे; मजनूं लैलीपर फ़िदा हो गया था और फरहाद शीरीपर मर मिटा था ।

संसारका यही सबसे बड़ा सार तत्व है, धर्मकी यही मजबूत जड़ है । इस पुण्य तपोवनमें आकर मनुष्य-जीवनके समस्त पाप-ताप नष्ट हो जाते हैं, शोक कालिमायें धुल जाती हैं और दुःख-दैन्यके स्थानपर आनन्दका शीतल झरना झरने लगता है ।

शक्तिकी इसी सुधाको पीकर महाकवि कालिदासने शकुन्तलाकी रचनाकी थी; उमरखय्यामने रुबाइयोंकी दीपमालिका जलाई थी; शेक्सपियर हैमलेटपर मुग्ध हो गये थे और जयदेव गीतगोविन्दकी रसीली बाँसुरी बजानेमें मस्त थे ।

प्रेम अनोखा शान्ति-निकेतन है । इसे पाकर नास्तिकोंके मनमें परमात्माके प्रति श्रद्धा उत्पन्न होती है । यहाँ पंडित-मूर्ख, अमीर गरीब, छोटे-

बड़े, मुसलमान-ईसाई—सब समान हैं। यहां जो रामका मतलब है, वह रहीमका। ईसा और मूसामें कोई भेद नहीं। यहां जो स्थान महात्मा तुलसीदासका है—वही भवभूति, वेद व्यास, गालिब और जौकका। यहां एक रस है, एक नशा। सब आनन्दविभोर होकर झूमते हैं, एक ही राग अलापते हैं, प्रेम, मुहब्त, लाभ! ओह! यहां आकर मैं प्रेमका पागल बन गया। क्या कहने जा रहा था और क्या कहने लगा!

हां यह प्रेमका तपोबन है।

यहांके स्वर्गीय सुखोंको देखकर मन न जाने कैसे-कैसे हो रहा। यहां सब सुन्दर हैं, सब पवित्र। दूसरी जगह बादशाह होनेको अपेक्षा यहां एक परवाना, एक पतिंगा होना करोड़ दर्जे अच्छा है। यहां सबके होठोंपर हंसी नाच रही है। हृदय-सागरमें प्यासके तूफान लहरा रहे है। दुश्मनों को भी प्यार करनेकी इच्छा होती है।

यहां हृदयाकाशमें चन्द्रमा उदय हो रही है, मरु-जोबन सुगन्धित फूलोंसे भर गया है, सौन्दर्य आंखोंमें सुर्मेकी तरह समा गया है। मैं इस तपोवन को देखूंगा, जी भरकर देखूंगा, देखते-देखते पागल हो जाऊँगा और रोने लगूंगा। मेरे पास यही कीमती धन है। मगर मैं भी कैसा भुलक्कड़ हूं—क्या कहने जा रहा था और क्या कहने लगा!

हां, यह प्रेमका तपोवन है।

महाकवि दाग फरमाते हैं:—

"मैं तो हर अन्दाजे माशुकानाका दीवाना हूं।

गुल पै बुलबुल हूं अगर तो शमापर परवाना हूं

जिस पै आशिक है सबा उस खाकका जर्रा हूं मैं,

वर्क जिसपर लोट है उस खेतका दाना हूं मैं।"

उनकी आँखें हर तरफकी मस्ती बटोर रही हैं। वह कहते हैं—

"हर रंगमें जलवा है तेरी कुदरतका,

जिस फूलको सूंघता हूं बू तेरी है।"

यहां हर समय खुशीकी दरिया बहती है।

यहां फकीर भी मस्त—अमीर भी मस्त—

"फाखता हूं गुल-सी सूरतका,

सर्वे आजाद हूं मुहब्बतका।"

हम बाहरी दुनियामें परस्पर अपरिचित थे, किन्तु यहां आते ही एक दूसरेके प्रियपात्र बन गये। यहांके स्त्री-पुरुषोंमें देवताओंको आभा झलक रही है। यहांकी समस्त चीजोंको मैं हृदयके खजानेमें बटोरकर रखूंगा। वे स्वर्गीय हैं, सुन्दर हैं, विचित्र हैं।

जीमें आता है, यहां वसंत-माधुरीके साथ कामदेव बनकर होली खेलूँ। मुझमें आकर्षण शक्ति जागृत हो रही है। उफ, मैं कितना पागल, और खब्ती हूं। क्या कहने जा रहा था और क्या कहने लगा!

हां, यह प्रेमका तपोवन है।

एक दिन इसी तपोवनमें आकर मैं प्रेमका पागल बन गया था। उस दिन आज की तरह न मुझमें मस्ती थी, न मुहब्बतका नशा। उन दिनों मैं टक्कर खा रहा था। जिन्दगी मुसीबतोंका पहाड़ बन गई थी संसारसे घृणा

थी, मनुष्योंसे नफरत। मेरी आँखोंके सामने एक-एक मनुष्यका चेहरा भूत प्रेत और जिन्न की तरह चल फिर रहा था। जीवनके तार टूटकर छिन्न-भिन्न हो गये थे। मैं आत्महत्याके लिये भटक रहा था।

एकाएक किसी दैवी शक्तिने, किसी गुप्त हलचलने मुझे इस तपोवनकी प्यारी मिट्टी पर ला पटका। मैंने देखा—वहाँ एक कीमती हीरा चमक रहा है। आँखोंमें लालच और दिलमें प्रेमका महासागर उमड़ आया। मैंने झुककर उसे उठाया और कङ्गालके धनकी तरह दिलकी तिजोरी में छुपाकर रख दिया। बस, फिर क्या था?—

"मैं के क़तरे क्या थे, जब तक खुममें थे सागरमें थे।
मेरे होठों तक पहुंचना था कि तूफां हो गये।

देखते-देखते घृणाके अंधकारमय आकाशमें प्रेमका इन्द्रधनुष उदय हो गया। निराशाके रहस्यमय पर्देको भेदकर आशाके रंग विरंगे आलोक जगमगा उठे। प्राण-कुंजमें कोकिलायें कूकने लगीं, दिलमें गङ्गा-जमुनाकी पवित्र तरंगें उछलने लगीं, कानोंमें जैसे किसीने अमृत-उँडेल दिया। मनमें अमर होनेकी इच्छा उत्पन्न हो गई। जीमें आया पपीहा बनकर उड़ जाऊँ और नीले आकाशके एक छोरसे दूसरे छोर तक प्रेमसङ्गीतका मधुर राग अलापूं।

उस समय सारी मलिनता धुल गई, अपवित्रता नष्ट हो गई। उस रत्न को पाकर मैं सब कुछ पा गया, मनुष्य जीवन धन्य हो गया। किन्तु मैं भी कैसा रमता योगी और बहता पानी हूं—क्या कहने जा रहा था और क्या कहने लगा।

यह प्रेमका तपोवन है। यहां किसीको मुस्कुराते देखकर आसमानमें

बरसातकी घटायें घिर आती हैं। बहारोंके खजाने बँटने लगते हैं। मयकी प्यालियां नई दुलहिनकी तरह दिलमें तासीरे इश्क़ पैदा करती हैं।

आज साक़ी बादये खुश रङ्ग दे जो खोलकर
कल खुदा जाने क़हां जाये घटा बरसातकी।

यहां हमारे पैमानेमें माशूक़की अँगड़ाइयोंका अक्स है। एक-एक पैमानेमें एक-एक तूफ़ान बन्द है। यहां मौत भी मस्तीसे ज़िन्दगीके मजे ले रही है। और लोग जमीनपर आसमान बनकर चलते हैं।

नजर आता है आलम हुस्नका एक-एक ज़र्रेमें,
खुदाने बिजलियां मिट्टीमें भरदी हैं कयामतकी।

मगर मैं भी कैसा भुलक्कड़ हूँ, क्या कहने जा रहा था और क्या कहने लगा।

हाँ, यह प्रेमका तपोवन है।

आओ, हम हुस्नके बाजारमें घूमें। यहाँ असंख्य सुन्दर चीजे हैं। हम ढेरका ढेर हुस्न खरीदेंगे, खोई जवानीका सौदा करेंगे।

सब इस बाजारमें बिक रहे हैं।—बिना मूल्य। यहां आकाशका चन्द्रमा खरीद लो, प्रभातकी सुनहरी किरणें मोल लेलो; तारोंको झोलीमें भरलो और निगाहके तीरोंसे मुहब्बतके दीवानोंको घायल कर डालो।

यहां जिस रूपको हम प्यार करते हैं, वह रूप इस संसारका नहीं। जहां शोककी घटायें घिरती हैं,' चिन्ताकी चितायें जलती हैं। जहां अभिमान स्वार्थ छल, कपट, का दौर दौरा है। जहां मनुष्यको मनुष्य खा रहे हैं, जहाँ अपवित्रता है, पाप है—यह रूप उस संसारका नहीं। यह रूप किसी दूसरे

लोकसे, किसी खास चीज़ की खोजमें रास्ता भूलकर हमारे सामने चमक उठा है। इसीलिये कहता हूं—प्रेम! तुम धन्य हो।

रूखा सरवर त्याग कर, हँस कहीं ना जाय।
पहली प्रीति बिसारिके, पत्थर चुन चुन खाय॥

प्रिय मित्र, जब मेरी मृत्यु हो जाय—तुम मुझे प्रेमके तपोवनकी धूलका एक कण बनाकर उसे रास्तेमें फेंक देना, जहां तुम्हारे चरण चलते हों। मैं तुम्हारी प्रभुतामें अपनेको खो दूंगा—बिलीन कर दूंगा।

मेरे जीवनका एक मात्र आधार है—प्रेम!

————

खतरनाक दुश्मन

मनुष्य जीवन देवताओंकी कतारमें बैठने लायक होता, यदि उसमें कुछ खतरनाक दुश्मन न बैठे होते।

यह कौन हैं? मैं कहूंगा—ईर्ष्या, क्रोध, घृणा, घमण्ड, सन्देह और निराशा।

इनके अलग-अलग रूप देखो और सावधान रहो।

ईर्ष्या:===

ईर्ष्याकी लाल लपटें अधिक उग्र और क्रान्तिकारिणी होती हैं। दूसरोंको नीचा दिखाने, दूसरोंको उन्नतिसे कुढ़ते रहनेकी आदतसे मनुष्य अपने जीवनको आप जलाता है। क्या इसकी जरूरत हैं?

राजा भोजके यहाँ कुछ लोग एक जर्जर रोगीको पकड़ लाये। राजाने उससे पूछा—"तुम्हारी यह दशा क्यों है?" रोगीने कहा—"बचपनमें हम तुम एक साथ पढ़ते थे। तुम्हारी योग्यता और बुद्धिमानीसे मैं ईर्ष्या करता था। यह ईर्ष्या मुझमें उस समय और भी बढ़ गई, जब तुम राजसिंहासनपर बैठ गये। आज जब मैं तुम्हारा इतना वैभव देखता हूं, बदनमें आग लग जाती है।"

राजा भोजने उसे रहनेके लिये बढ़िया मकान और सेवाके लिये कई

सेवक दिये। वह हाथी घोड़े पर चलने लगा और एक परमा सुन्दरीसे उसकी शादी भी हो गई। कुछ दिनों बाद राजाने उसे बुलाकर देखा, तो वह पहले ही की तरह जर्जर और रोगी था। कारण पूछनेपर उसने कहा—"मेरे पास सब सुख-सामग्री है, सिर्फ अधिकारोंसे वंचित हूं।"

राजाने उसे ऊँचे पदपर नियुक्तकर उसको यह इच्छा भी पूरीकर दी। पर इससे भी उसकी दशा न बदली। उसने कहा—"मेरी हालत उस समय पलटेगी, जब मैं उज्जैनके राजसिंहासनपर बैठूँगा।"

राजाने समझ लिया, ईर्ष्याके कारण इसका जीवित रहना कठिन है। रक्षाका कोई उपाय नहीं। अन्तमें हुआ भी वही—वह मनुष्य ईर्ष्याके कारण कुढ़-कुढ़कर मर गया!

संसारमें इस तरह कुढ़-कुढ़कर मरनेवालोंकी संख्या कम नहीं है। देहातोंमें ईर्ष्या-द्वेषका बोलवाला है। शहरोंमें, आफिसोंमें, होटलोंमें, कल कारखानोंमें, ईर्ष्याकी खचाखच छुरियां चल रही हैं। मनुष्य मनुष्यको खाये जा रहे हैं। किसोने दो पैसे कमा लिये—पड़ोसी जलता तवा बन गया। किसीने नौकरीमें तरक्कीकर ली—दूसरोंका खाना-पीना हराम हो गया। कोई ऊँचे चढ़ गया, तो लोग द्वेषकी लाठियां लेकर दौड़े—इसकी जिन्दगी खाक कर दो।

कैसी भयानक मूर्खतायें है। क्या तुम ऐसा जीवन पसन्द करते हो? याद रखो, ईर्ष्यासे हम अपनी क्षुद्रताका परिचय देते है; किन्तु अपनी इष्ट-सिद्धि नहीं कर पाते। कभी कभी जिससे हम ईर्ष्या करते हैं—उलटे उसीको हमारी ईर्ष्यासे लाभ हो जाता है।

हाँ, ईर्ष्या न होते हुये भी कभी-कभी हमें दूसरोंकी ईर्ष्याका शिकार बन जाना पड़ता है। किन्तु यदि हम जीवनके असली सुखको समझ लें, तब कोई भी ईर्ष्या हमारा पीछा नहीं कर सकती। नूरजहांने ऐसे ही ईर्ष्यापूर्ण वायुमंडलसे ऊबकर अपने प्रथम प्रियतम शेरखांसे कहा था—"चलो नाथ! हम इस हिंसापूर्ण संसारको छोड़कर भाग चलें, बहुत दूरके किसी जंगली गांव-में जाकर किसानोंकी तरह जीवन व्यतीत करें, जहां सम्राट् जहांगीरका डाह इतने नीचे उतरकर हम लोगोंका पीछा न कर सकेगा।"

ईर्ष्या वह काली नागिन है, जो समस्त पृथ्वीमंडलमें जहरीली फुफकारें छोड़ रही है। यदि तुम गौरकर देखो, तो मालूम होगा कि यह गलतफहमियोंकी एक गर्म हवा है, जो शरीरके अन्दर 'लू' की तरह चलती है और मानसिक शक्तियोंको झुलसाकर राख बनाती है।

इस 'लू' ने लाखके घर खाकमें मिला दिये। तुम दूसरोंकी बढ़ती देख-कर कभी न जलो। जो लोग ईर्ष्याकी चपेटमें पड़ जाते हैं, वह अपने घरमें अपने ही चिरागसे आग लगाते हैं। खुद शीशेकी झोपड़ीमें बैठकर दूसरोंके महलपर पत्थर फेंकते हैं।

तुम इसकी परवा मत करो कि दूसरे तुम्हें देखकर जलते हैं। तुम स्वयं सोचो कि तुम क्या हो। जब तक तुम आत्मविश्वासी न बनोगे, दुनियामें कुछ न कर सकोगे।

क्रोधः—

क्रोध भी क्या अजीब 'शै' है। यह मनुष्य शक्तिको पशुताके हाथोंमें

दे देता है। उस समय मनुष्य बाघसे ज्यादा भयानक और साँपसे ज्यादा जहरीला हो जाता है। गीतामें भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं :—

"क्रोधसे अविचार होता है। अविचारसे भ्रम, भ्रमेसे बुद्धिनाश और बुद्धिनाशसे सर्वनाश होता है।"

क्रोध याने गुस्सा वह शैतान है, जो मनुष्य-शरीरके कोने कोनेमें ताण्डव नृत्य करता है। उसकी सुर्ख आंखें मौकेको ताड़ती हैं। जहाँ दिमागका पारा गर्म हुआ, यह सरपर भूतकी तरह चढ़ बैठा। अब तुम काँपते हो, मित्रोंका अपमान करते हो, मनुष्योंका गला दबाते हो और न जाने क्या-क्या अनर्थकर बैठते हो। किसीने गलती की—तुम आंखें लाल-पीली करने लगे। आनन्द रूपी कपूरके टुकड़े-टुकड़े कर उसे ऊसरमें बो दिया, देवतुल्य जीवन नष्ट हो गया। मनमें अप्रसन्नताओंका विष भर गया—सारी आकर्षण-शक्ति समाप्त हो गई।

क्रोध वास्तवमें हृदय-सागरका तूफान है। यदि तुम इसपर विजय प्राप्त करना चाहते हो, तो आत्मबलके साथ जीवनकी किस्ती पर खड़े रहो। क्रोधके असंख्य झोंके आयेंगे और टकरा कर हवामें विलीन हो जायंगे। किन्तु जहाँ तुम इसकी चपेटमें पड़े—तुम्हारा संसार मुसीबतोंमें पलट जायगा। और तुम स्वयं पैनी कुल्हाड़ियोंसे अपने पैर काटनेकी कोशिश करोगे।

क्रोध एक भूल है। यदि मनुष्य सीखना चाहे, तो उसे क्रोधकी प्रत्येक भूल कुछ न कुछ सिखला देती है। ठोकरें मारनेसे ज़मीनसे सिर्फ धूल उड़ती है—खेती नहीं उगती।

मैं पूछता हूँ, तुम बुद्धिमान होकर क्रोधकी तरंगोंमें क्यों बहते हो? किस लिये मुसीबतोंसे नाता जोड़ते हो? तुम्हें क्रुद्ध देखकर जीवनके सारे आनन्द यौवनकी समस्त विद्या, सरलताओंकी तमाम ऋद्धि-सिद्धियाँ उलटे पैरों लौट जाती हैं। उनके मनमें क्रोधी मनुष्यकी कोई कीमत नहीं, वे शान्त मनुष्यों को प्यार करती हैं।

यदि तुम्हारी ज़िन्दगीमें आनन्दोंकी शीतल बहार नहीं बहती, तो मैं कहूंगा—तुम मूर्ख हो। तुम्हारी ज़िन्दगीमें कोई चमत्कार नहीं पैदा हो सकता।

घृणा:

मैं ब्राह्मण हूँ; अछूतोंसे घृणा करता हूं। मैं बङ्गाली हूं; मारवाड़ियोंसे नफ़रत करता हूं। मैं तीसमार खां हूं: हिन्दुओंकी दूकानसे सौदा नहीं खरीदता। मैं गोभक्त हूँ; मुसलमानोंको देखकर घृणासे मुंह फेर लेता हूं और खिलखिलाकर हँस पड़ता हूं।

यह कैसी बेवकूफी है, कैसे गन्दे खयालात हैं। घृणा मनहूस बर्बरता है। जानवरोंमें यह वृत्ति नहीं पाई जाती। मगर मनुष्योंको देखो—वह जानवरोंसे ज्यादा बुद्धिमान, चिड़ियोंसे ज्यादा उड़नेवाले, सङ्गीतसे ज्यादा मीठे और वेदोंसे ज्यादा विद्वान हैं। उनके मनकी थाह लो—घृणाके सैकड़ों घोंघे तुम्हारे हाथ लगेंगे।

यदि तुम दिमागमें घृणाकी गन्दगी भरे रहोगे, तो शरीरकी मैशीनरियोंके पुर्जे टूट जायंगे। चुम्बक शक्ति नष्ट हो जायगी। सरपर

जीवनका बोझ लादे दर-ब-दरकी ठोंकरें खाते फिरोते। उस समय तुमसे किसीकी सहानुभूति न होगी। कोई तुम्हारा साथ न देगा।

घृणा वर्बरता है। यह उन्हीं मनुष्योंके दिलमें टिक सकती हैं, जो शरीरके दुर्बल, आलसी और गँवार हैं।

मैं कहता हूः—तुम पापियोंसे नहीं, उनके पापसे घृणा करो। क्योंकि पापी इन्सान हैं—पाप शैतान!

घमंड :=

मैं एक ऐसे आदमीको जानता हूं, जिसका वृद्ध पिता कई लाख रुपयेके कर्ज भारसे दबकर दर बदरकी ठोंकरें खा रहा है। उसके नालायक लड़केने बहुतसी दौलत रंडीबाजीमें फूंक दी। सैकड़ों मन शराब गलेके नीचे उतार गया। इसकी आँखें सुर्ख हैं और चेहरा गोल। इसे मैंने मनुष्यों पर अत्याचार करते देखा है। यह बड़ा घमण्डी और शरारती है!

मैं ही क्या? तुम, तुम्हारे सैंकड़ों दोस्तोंने समस्त पृथ्वी मंडलके भाइयोंने ऐसे बहुतसे घमण्डो मनुष्य देखे होंगे—बल्कि बहुतसो बातोंमें इससे भी ज्यादा बढ़ चढ़कर।

घमण्डके नशेमें चूर होकर आज हम किसी भाईको पैरोंसे कुचल डालते हैं। किन्तु कौन जाने? कल ऐसा दिन आय, जब हमपर एक कमजोर गधा भी दुलत्तियाँ झाड़ने लगे और हमें उसके मुकाबलेमें खड़े रहना मुश्किल हो जाय! अहंकार क्यों? अहंकारने महा दार्शनिक रावणको मिट्टीमें

मिला दिया। शक्तिशाली कंसकी खोपड़ी चूर-चूर करदी। अभिमानी दुर्योधन इसी प्रवाहमें पड़कर अन्तर्ध्यान हो गया।

मनुष्यके लिये विद्याका अहंकार, प्रभुताका अहंकार, धनका अहंकार, ज्ञान प्रतिभाका अहंकार—सब व्यर्थ है। दुनियांमें भाग्यको नष्ट करनेवाले दो बड़े कारण हैं—घृणा और घमण्ड। परमात्मा बड़े-बड़े घमंडी साम्राज्योंसे मुख फेर लेता है, किन्तु सरलता और सादगीसे भरे हुए छोटे-छोटे फूलोंसे कभी खिन्न नहीं होता।

तुम धनी हो, ठीक है। ऊँचे महलोंमें ऐयासी करो—मगर गरीबों की झोपड़ियोंमें आग न लगाओ! तुम्हारे पास मोटरें हैं, हवाखोरी करो—मगर पैदल चलनेवालोंपर पैट्रोलका धुआं न छोड़ो। तुम गरीब हो, चुपचाप अपना काम करो—मगर अमीरोंके वैभवपर विद्रोहकी आहें न छोड़ो। तुम रास्तेकी फुटपाथोंपर आरामसे मीठी नींद सोते हो--वह मखमली बिछौने पर भी करवटें बदलते रहते हैं। सोचो, समझो। मनुष्यतामें कैसा घमण्ड, कैसी घृणा।

मनुष्य जीवन एक पहेली है—एक नाटक। उसमें सभी तरहकी हलचलें होती हैं। उन हलचलोंकी शक्ल क्या है? इसपर गंभीरतापूर्वक विचार करो। फरिश्ता होना आसान है, इन्सान होना मुश्किल। आदमी वही है, जो घमण्डसे कोसों दूर है। मनुष्य वही है, जिसमें मनुष्यता है।

सन्देहः—

मनुष्य जीवन मधुर संगीत है। जिसका राग है प्रेम! यह प्रेम

देह और मनको आनन्द तृप्ति प्रदान करता है यदि इस प्रेममें राहु जैसी कोई चीज़ है, तो वह है सन्देह। सन्देहसे माधुर्य सूखकर अग्निका नर्ककुण्ड बन जाता है।

मुझसे एक नवयुवतीने पूछा—"स्वामीके प्रति मेरे आनन्दका नशा इतना शीघ्र क्यों उतर गया? हम लोग कलह, विरोधी और गन्दी गालियोंके फेरमें क्यों फँस गये? मनमें जरा भी शान्ति और सुख नहीं। स्वास्थ्य दुर्बल हो गया है और मुझे ऐसा जान पड़ता है, मानो मेरी समस्त दुनियां दुख और निराशासे भर गई है।"

मैंने पूछा—"क्या तुम्हें अपने स्वामीके प्रति सन्देह है?"

उसने कहा—"जी हां, वह अकसर रातको गायब रहते हैं। मुझे शक है, वह किसी दूसरी स्त्रीसे प्रेम कर लगने गये हैं।"

मैंने कहा—"तुम इस सन्देहको प्रेमरूपी मोहन मन्त्रसे जीतो। तुम जितना ही उन्हें प्यार करोगी, उतना ही तुम्हें फायदा होगा। यदि तुम्हारे स्वामी सैकड़ों स्त्रियोंसे भी प्रेम करने लगें, तो भी तुम्हारे प्रेमको पराजित न कर सकेंगे। अपनेको पहचानो।"

उस नवयुवतीने सच्चे दिलसे स्वामीपर अपने प्रेमका प्रदर्शन शुरू किया मैंने देखा—दो महीनेके अन्दर उसका चेहरा गुलाबके फूलकी तरह खिल उठा है और उसकी निराश दुनियामें प्रेमके सुनहरे दीपक जगमगा उठे हैं।

यह है प्रेमका तत्त्व! यदि प्रेमको अच्छी तरह न समझ सकोगे, तो सन्देहके कांटे तुम्हारे शरीरको चलनी बना डालेंगे।

सन्देह की भावनायें मनुष्यमें उस समय जागती हैं, जब प्रेमके प्रति नीच-ताओंके बीज उगने लगते हैं। हम यह देखकर जल उठते हैं कि हमारा प्रेम हमें ठुकरा कर दूसरेकी प्रसंशा कर रहा है, हम उसकी नज़रोंमें छोटे हैं। यह मूर्खता भरी चिन्तायें हमारे मनमें संदेह उत्पन्न करतो हैं और हम हिंसाके मैदानमें उतरकर संहारलीला आरम्भ कर देते हैं। इस तरह हम जीवनको कमजोर ही नहीं बनाते, बल्कि जिसे प्यार करते हैं, जिसपर जान देनेको तैयार हैं, उसे अनंत यंत्रणाओसे जर्जरित कर डालते हैं।

सन्देह कैसा खतरनाक ज़हर हैं? हम जिसपर संदेह करते हैं, उसकी हर बातमें, प्रत्येक कार्यमें, त्रुटियां दिखाई देती हैं। उस समय उस मनुष्यके प्रति हमें ऐसा जान पड़ता है, जैसे यह आदमी हमें प्रत्येक बात में धोखा दे रहा है, झूठ बोल रहा है, और हमारे विरुद्ध षड्यंत्र कर रहा है। हम उसकी प्रत्येक नज़रको, उसके प्रत्येक आचरणको अविश्वाशकी दृष्टिसे देखते हैं। यह क्या कम ज्वाला है?

मानलो, पत्नोके प्रति सन्देह उत्पन्न हो गया, तो पत्नी चाहे जैसा सुन्दर शृङ्गार करे, चाहे जैसे क़ीमती गहने-कपड़े पहने, हमारे मनमें फौरन इस बातको ज्वाला जाग उठेगी कि उसका यह शृङ्गार हमारे प्रेम-प्रदर्शनके लिये नहीं, परपुरुषको रिझानेका आडम्बर है। उस समय उसकी मुस्कराहट ज़हर मालूम होती है, हम उसकी प्रसन्नताओंसे जल-भुनकर खाक हो जाते हैं।

सन्देहके इस भयानक जहरसे कितनो ही स्त्रियोंके पतियोंने उन्हें व्यभि-चारी करार देकर उनका खून कर डाला। सन्देहके इस भीषण पापने

कितने ही मित्रोंको एक दूसरेसे अलग कर दिया। सन्देहकी इस धधकती ज्वालाने कितने ही निरपराध मनुष्योंको फांसोके तख्तेपर लटका दिया।

अगर तुम बेतहाशा दौड़े जा रहे हो, तो कभी-कभी रास्तेकी एक छोटी-सी कंकड़ी पैरोंमें लगकर तुम्हें धाराशायी बना सकती है; किन्तु कभी-कभी तुम बड़े-बड़े खंभोंको भी एक छलांगमें पार कर जाते हो। तुम्हें पता नहीं रहता कि कहाँ टीले मिले, कहाँ पानी। ऐसा क्यों होता है?

तुम दोनों हालतोंमें दौड़ते हो, दोनों हालतोंमें तेज दौड़ना चाहते हो, अपनी मंजिल जल्दीसे जल्दी तय करना चाहते हो, लेकिन तुम्हारे दिल और दिमागकी हालत दोनों हालतोंमें एक नहीं रहती। पहली हालतमें दिलमें सन्देह रहता है। यह डर, यह शक ही तुम्हें जमीनपर पटक देती है, यह शुबहा तुम्हारे पैर तोड़ देती है। शकका आदमी कभी मुश्किलों और मुसीबतोंका सामना नहीं कर सकता। एक रोड़ा उसकी सारी मजबूतीको खतम कर डालता है।

अपनी आँखोंमें प्रेम, शान्ति, सौन्दर्य और गम्भीरताका भण्डार खोल दो। हमेशा सावधान रहो। जहाँ तुम्हारे मनमें सन्देहका पौदा उगने लगे—तुम उसे तोड़ कर फेंक दो; पूर्ण शक्तियोंसे मनके साथ युद्ध करो। अपनेको कभी कमजोर या तुच्छ न समझो। यदि तुम संदेहकी तुच्छताको दूर नहीं कर सकते, तो मनुष्योंका साथ छोड़कर सर्वस्व त्याग दो और किसी एकान्त जङ्गलमें बैठकर धूनी रमाओ।

निराशा:—

एक कलाकारका नौ जवान लड़का जहर खाकर मर गया—वह परीक्षामें फेल हो गया था !

आये दिन अखबारोंमें रोज ही ऐसी शोचनीय खबरें पढ़ी जाती हैं। एक आदमीने बेकारीसे तंग आकर आत्महत्याकर ली। दूसरा गंगामें डूब गया—तीसरेने गलेमें फाँसी लगा ली। क्यों? इसकी क्या वजह है?

निराशा इन कीमती मनुष्योंका जीवन-रस पी गई थी।

हमारे हजारों भाई, जिनकी जिन्दगीकी प्याली उदासी और तकलीफों के खूनसे भर गयी थी; हमारे वे हजारों दोस्त, जो निराशाके भैरवी नृत्यमें चकनाचूर हो गये थे।—हमेशाके लिये जीवित हो जाते, यदि वे मनुष्य जीवनकी कीमत समझते, अपनेको पहचानते और आशाकी रोशनीमें संसारके रहस्योंको समझनेकी कोशिश करते।

निराशासे जिन्दगी अँधेरी, भारी और दबी मालूम होती है। यदि तुम इस पैशाचिक वृत्तिको अध्ययन करो, तो मालूम होगा कि निराशा आलस्यकी सनसनाहटके सिवा कुछ नहीं है। इसके प्रचण्ड प्रबाहमें पड़कर बड़े-बड़े बहादुर पतनके गर्तमें डूब गये। यह मनुष्यके फेफड़ोंको जोरोंसे दबोचकर झकझोरती है और वे घबराहट तथा बैचेनीसे भयानक पाप कर बैठते हैं। तुम इस पागलिनीको कभी दिलमें जगह न दो। फूलोंपर नाचते हुए भँवरोंकी तरफ देखो। दीपशिखापर चक्कर काटते हुए परवानोंको सोचो। यह सब एक ही मन्त्रका जाप करते हैं—आशा! प्यारी आशा!

आशा मनुष्य जीवनकी वह पतवार है, जो निराशाके तूफानमें फँसी हुई जीवन नइयाको किनारे खे ले जाती है। आशाका दूसरा नाम जिन्दगी है और जिन्दगीका दूसरा नाम आशा है!

अपने निराश जीवन उद्यानमें इन्हीं भावोंके फूल खिलने दो। संसारिक सुखों और मनुष्योंसे दिलचस्पी बढ़ाओ। निराशाकी डालियाँ पतझड़की तरह टूटकर पृथ्वीके अनन्त गर्भमें गायब हो जायँगी।

सफलताका रहस्य

यदि तुम ऊपर लिखे खतरनाक दुश्मनोंकी लड़ाईमें फतह पा जाते हो, तो तुम्हारी जयजयकार है। यदि हारते हो, तो दुनियामें तुम्हारे लिए कोई जगह नहीं। इनकी संगतसे, इनके फायदेसे, तुम बालूकी दीवालें उठा रहे हो। यह दीवालें एक दिन तुम्हारे ही ऊपर भहराकर गिर पड़ेंगी। उस समय तुम्हें संसारके छोटे-बड़े राहगीर धूल समझकर अपने पैरोंसे कुचलते, रौंदते, मुस्कराते आगे बढ़ते जायँगे। उस समय उनके दिलमें तुम्हारे आँसुओंकी कोई कीमत न होगी।

बोलनेका तरीका

एक सौंदर्य प्रेमीने अपने रंगीले दोस्तसे पूछा—"उसकी आंखें बहुत सुन्दर हैं। तुम्हारे ऊपर उसका कैसा प्रभाव पड़ा?"

दोस्तसे कहा—"आंखोंसे अधिक उसका मुँह चलता है, इसलिये मुझपर उसके बोलनेका अधिक असर पड़ा।"

सचमुच वाक्यशक्ति आकर्षक कला है। यह एक दूसरे मनुष्यके विचारों और सिद्धान्तोंका आदान-प्रदान है। तुम्हारे चेहरेमें चाहे कितनाही सौंदर्य और जादू क्यों न हो, किन्तु बोलीमें जो जादू है—उसे रूपका जादू नहीं पा सकता। कोयलका रूप भद्दा है, मगर हर आदमी उसकी बोलीका आशिक है। गधेका रेंकना या ऊँटका बलबलाना कोई नहीं पसन्द करता। परन्तु तोता-मैनाको सभी प्यार करते हैं। क्यों और किसलिये?—उनकी बोलीमें आकर्षण है।

रूपका जादू प्रकृति देती है, किन्तु बोलीका जादू मनुष्यके हाथमें है। बोलते समय ऐसा मालूम होना चाहिये, मानो फूल झड़ रहे हैं। एक शायर फरमाते हैं :—

"इंशाको चाहिये कि न बोले किसीसे सख्त।
इस वास्ते जुबांमें कोई हड्डियां नहीं!"

मीठी बोलीमें जिन्दा करनेकी ताकत है। बचपनमें माताने अपने दूध

से तुम्हारी जबान धोई है—मीठी बातें करनेके लिये। मीठी बोली दिमाग में प्रतिभाका चमत्कार फैलाती है, मनको ऊँचा उठाती है—

"जीभि जोग अरु भोग, जीभि बहु रोग बढ़ावै;
जीभि करै, उद्योग, जीभि लै कैद करावै।
जीभि स्वर्ग लै जाय, जीभि सब नर्क दिखावै;
जीभि मिलावै राम, जीभि सब देह धरावै॥
निज जीभि ओठ एकत्र करि, बांट सहारे तोलिये।
बैताल कहै विक्रम सुनो, जीभि सँभारे बोलिये॥"

दुनियाका हर आदमी मीठी कड़वी जबानका स्वाद जानता है। जबान सब कुछ कर सकती है। वह मनुष्यके व्यक्तित्वकी सबसे बड़ी सञ्चालन शक्ति है।

संसारमें आज करोड़ों व्यक्ति ऐसे हैं, जिन्हें बोलनेका तरीका नहीं मालूम। उन्हें इस बातका पता तक नहीं कि अपनेमें आकर्षण बढ़ानेके लिये हम किस तरहकी जबान बोलें। वह बोलते इस तरह हैं, जैसे लाठी मार रहे हों। वे अपनी बोलीमें सांप और विच्छू जैसे जहरीले जानवरोंकी सृष्टि करते हैं, ऐसे विषधर आदमी अपने पैरोंमें आप कुल्हाड़ी मारते हैं और जीवनको सर्वनाशकी भट्ठीमें झोंकते हैं :—

भले बुरे सब एकसों जौ लौं बोलत नांहि।
जानि परतु है काक पिक ऋतु वसंतके मांहि॥"

चाहे अमीर हो या गरीब, आफिसर हो या रास्तेका कुली—कड़वी

जबान किसीसे न बोलो। वाक्य शक्तिमें दिलचस्पी, हास्य-विनोद और माधुर्यकी पुट दो। लोगोंको बातें ध्यानसे सुनो और उनका मीठे शब्दोंमें माकूल उत्तर दो। किसीने कहा है :—

"बशीकरन एक मंत्र है,
परिहरु बचन कठोर।"

मीठी बोली वह जादू है, जिससे मनुष्य मात्र तुम्हारे भक्त बन जाते हैं। यदि जबान गंदी है, उससे गालियोंके कोड़े बरसते हैं, तो यह पतन है। कड़वी और मीठी जबान मनुष्योंके दिलसर कहाँतक असर करती है, इसका एक उदाहरण लो—

एक कारखानेकी बात है। इसमें लगभग पाँच सौ कर्मचारी काम करते थे जिनमें अमीर-गरीब, छोटे-बड़े सभी टाइपके आदमी थे। यह कारखाना बड़े उत्साहके साथ चल रहा था। न किसीमें राग-द्वेष था, न पार्टीबन्दी। इसका सबसे बड़ा कारण यह था कि कम्पनीके संचालक बहुत ऊँची तबीयतके आदमी थे। वह सबके साथ आदर और प्रेमका व्यवहार रखते। मगर दुर्भाग्यकी बात देखो, सञ्चालक महोदयको एकाएक जरूरी कामसे योरोप चले जाना पड़ा। उनके स्थानपर उन्हींका एक रिश्तेदार आया। यह मनुष्य जबानका इतना गन्दा था कि प्रत्येक मनुष्यको कुत्ता समझता। शायद उसके दिलमें इस बातकी सनसनी थी, कि नौकरी पेशेवाले कुत्ते होते हैं। वह प्रत्येक आदमीको भद्दी गालियाँ देता और उनका अपमान करता। वह अक्सर पुस्तकें पढ़ता—मगर उसे इस बातकी तमोज न थी कि मनुष्य ईश्वर का अंश है। मनुष्यका अपमान ईश्वरका अपमान है। किन्तु यह हो

कैसे ? कारखानेकी ऊंची कुर्सीपर बैठकर वह अपनेको ईश्वरसे भी बड़ा समझने लगा।

उसके खिलाफ कर्मचारियोंके अन्दर ही अन्दर विद्रोहकी आग भड़कने लगी। एक छोटे क्लासका आदमी कमरेमें छुरा छिपाकर घूमने लगा। वह कहता—"मैं इस गधेका खून करूंगा और फाँसीपर चढ़ जाऊंगा।" इस तरहके गन्दे वायुमंडलसे वह कारखाना नर्कमें बदल गया। खैर, परिस्थितिकी भीषणता देखकर सञ्चालक महोदय योरोपसे आये, उन्होंने अपनी कुर्सी संभाली! दो ही दिनमें रंग बदल गया। जली हुई खेतियाँ लहलहा उठीं। कारखाना शानसे चलने लगा और उनका रिश्तेदार अपना-सा मुंह लेकर भाग गया!

यह है बोलनेका तरीका। जो मनुष्य दूसरोंके प्रति सहृदय होता है; वह बिना सत्ताके ही शासक बन जाता है। उसके हुक्म प्रेमके सन्देश होते हैं—जिन्हें दूसरे लोग हमेशा सुननेके लिये उत्सुक रहते हैं। पर जहाँ अपने प्रति घमंड और विशेषाधिकारका भाव है और दूसरे मनुष्योंके प्रति कठोरताका—सत्ताका शासन वहीं बेकार हो जाता है और उसका पुरस्कार मिलता है—अप्रतिष्ठा तथा पतन!

सदा दूसरोंके दोष देखना, सदा दूसरोंपर अविश्वास करना अपने ही हृदयकी मलिनताका लक्षण है।

यदि तुम वाक्य शक्तिको प्रभावशाली, आकर्षक और मधुर बनानेके इच्छुक हो, तो संगीतका अभ्यास करो। कोमल कवितायें और उत्तमोत्तम नाटक पढ़ो। तुम्हारी जबान साफ, दिलको गुदगुदानेवाली तथा कर्णप्रिय

बन जायगी। गुनगुनाकर न बोलो। कानाफूसो, फुसफुसाहट और रुक-रुककर बोलनेकी आदत बुरी है। यदि मोठो जबानमें ज्यादा आकर्षण उत्पन्न करना हो तो मुस्कुराने और दिल खोलकर हंसनेका अभ्यास करो।

मुस्कुराहट मनुष्यके दिलपर गहरा असर डालती है। बोलते समय जरा मुस्कुरा दो। यह रूप सरोवरकी उठती हुई लहर है, जो स्वाभाविक मनुष्यको अपनी ओर खींच लेती है। उसे देखकर मनुष्य मन्त्रमुग्ध रह जाता है।

बहुतसे लोग हंसते हैं, मगर उन्हें हंसना नहीं आता। वास्तवमें यदि हंसनेकी कलामें तुम उस्ताद हो, तो मीठी हंसीमें कुछ अनोखा जादू है। मनुष्यको छोड़कर संसारका कोई प्राणो नहीं हंसता। हंसी वह हथियार है, जो बड़े बड़े मिजाजियोंके मिजाज चुटकियोंमें ठिकाने लगा देती है। बहुतसे लोग मनहूस और मुहर्रमी सूरतके होते हैं। इन्हें गौरसे देखो। इन लोगों ने मुंह सिकोड़-सिकोड़कर अपनी बुद्धि भी सिकोड़ ली है। फिर बेचारे किस मुंहसे प्रभावशाली हास्यका दम भरें?

हास्य बुद्धिमान, ज्ञानी और साफ दिलोंके लिये है। जिस तरह अमृत देवताओंकी चीज है, उसी तरह हास्य मनुष्यकी सम्पत्ति है। जानवर और पशु-पक्षी इस अनोखे उपहारसे वंचित हैं। इससे बड़े-बड़े काम निकलते हैं। हास्यमें कभी-कभी मीठी चुटकियां लेना आवश्यक है। तुम बीरबलका सा मंजा दिमाग और बिजलीकी तरह तड़पानेवाली बुद्धि उत्पन्न करो।

अगर हंसना नहीं आता, तुम मुहर्रमी सूरतके आदमी हो, तो हास्य

रसके नाटक-तमाशे और फिल्में देखो। हंसानेवाली पुस्तकें पढ़ो। तुम्हारा मिजाज विनोदपूर्ण हो जायगा। जितना ज्यादा तुम दिल खोलकर हंसोगे, उतना ही स्वास्थ्य सुन्दर होगा। आवाज मीठो होगी। हंसनेसे मनुष्यको तुम्हारे दिलकी सचाई और शुद्धताका परिचय मिलेगा। वह सहजमें ही तुम्हारे बसमें हो जायँगे :—

"ऐसी बानी बोलिये मनका आपा खोय।
औरनको शोतल करै आपौ शीतल होय॥

जबानमें आकर्षणका उत्पन्न होना तुम्हारी विचार-शक्तियोंपर निर्भर है। जैसा तुम्हारा मन होगा, जबानकी भाषा भी वैसी ही होगी। इसलिये मन को हमेशा ऊँचा बनाओ। किसीको नीचे गिराकर अपनेको बड़ा करना ढँकी हुई गन्दगी है। किसीके चिद्रोंको खोजकर उसके दुर्भाग्य और गलतियोंकी हंसी उड़ाना पाप है। दूसरोंके व्यवहार और गुणों की प्रशंसात्मक चर्चा करना तुम्हारा कर्तव्य होना चाहिये।

कभी इस तरह न बोलो जिससे दूसरे उन्हें अहंकारी कहें। हल्की और तुच्छ बातोंकी चकल्लसमें पड़ना समयके चिन्होंको नष्ट करना है। जिस समय तुम्हारा किसो नये आदमीसे परिचय हो, उस समय कोई चमत्कारपूर्ण बात कहो; ताकि उसपर तुम्हारा पूर्ण प्रभाव पड़ सके।

यदि प्रेम, विनोद और मधुर व्यवहारसे भी कोई तुम्हारे प्रति आकर्षित नहीं होता, तो अपनी त्रुटियाँ ढूंढ़ो, मगर उसके प्रति कठोर वचन न बोलो। कठोर वचनकी अपेक्षा आत्मशुद्धिमें ज्यादा समय सर्फ करो।

यह वैज्ञानिक प्रयोग है, जो मनुष्यको बहुत ऊँचा उठाते हैं। जब

इन बातोंके विद्वान बन जाओ, तब नित्य नये दोस्त पैदा करनेकी तरकीबें सोचो। अपनी महान् आत्माको अपने साढ़े तीन हाथके अन्दरसे निकाललो और उसे मनुष्योंकी आत्मामें प्रवेश करने दो। वह उनमें देवत्वका तहखाना ढूंढ़ेगी।

देश विदेशकी भाषायें सीखो, उनका साहित्य पढ़ो और उसे उन मनुष्यों में बोलो, जो उस भाषाके प्रेमी हैं। यह ऊँचे मनका वैज्ञानिक प्रतिबिम्ब है। अगर तुम बोलनेमें बुराइयोंकी तरफ ध्यान दोगे, तो तुम्हारे मित्रोंके मनमें फौरन यह बात जम जायगी कि यह मनुष्य कुछ नहीं है।

अपने मित्रोंको अपनी तारीफका सुअवसर दो। उस तारीफका,— जिसमें गुणोंकी प्रशंसा है, प्रेम और सत्कार है। यह मनुष्य जीवनकी सफलताकी सुनहरी कुंजियाँ हैं। इन कुँजियोंसे मनके उन मोरचा लगे हुए तालोंको खोल डालो, जहाँ आश्चर्यजनक शक्तियाँ दबी पड़ी हैं और तुम्हें अपने चमत्कार दिखानेके लिये छटपटा रही है।

यदि बातोंमें कभी वाद-विवादका मौका आ जाय तो अपनी ही जिदपर न डटे रहो। विरोधी पक्षके 'प्वाइन्ट' की तारीफ करते हुए उसके आत्मगौरवकी रक्षा करो। अक्सर लोग तर्क या वाद-विवादसे झगड़ा कर बैठते हैं, एक दूसरेके दुश्मन बन जाते हैं।

तुम चाहे अंधे बहरे हो जाओ, स्वास्थ्य खो दो; मगर सत्य न भूलो। सत्यका तेज हजारों सूर्यके तेजसे अधिक है। उसकी कीमत सैकड़ों यज्ञकी कीमतसे ज्यादा है। जब तुम्हारा हृदय सत्यके तेजको देख लेगा, तो वह

उसे कभी न भूलेगा। सत्य अपने विरुद्ध एक आँधी पैदा कर देता है और यही आँधी उसके बीजोंको दूर-दूरतक फैला देती है।

अपने निन्दकोंको भी प्यार करो। निन्दकोंसे उपकार होता है—क्योंकि उनमें दोष दृष्टि होती है और वे तुम्हारे अवगुणोंको प्रकाशित करके सुधारका अवसर देते हैं—

निन्दक नियरे राखिये, आँगन कुटी छवाय;
बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करै सुभाय ॥

किसीकी खुशामद न करो। खुशामदी ऐसा जानवर हैं, जो मुसकराता हुआ काटता है। उसे भारी दगाबाज जानो। क्योंकि वह तुम्हारी बुराई करनेमें दूसरोंको सहारा देगा और तुम्हारे दोष तुम्हें बतानेके बदले तुम्हारी मूर्खतापर ऐसा लुक फेर देगा कि तुम भले बुरेका विवेक कदापि न कर सकोगे।

फ्रांसका शाहंशाह चौदहवाँ लुई जब गिरजा घर जाता, तो भीड़के मारे गिरजा उफन उठता था। एक बार जब वह गिरजाघर गया, तो सिवा पादरीके किसीको न पाया। सबब पूछा तो पादरीने जवाब दिया—"आपको यह दिखानेको कि गिरजामें कितने 'भक्त' खुदाकी बन्दगीको और कितने 'खुशामदी' आपको खुश करने आते जाते हैं, मैंने मशहूर कर दिया था, बादशाह आज न आयँगे। जिससे यहाँ कोई न फटका।'

अपनी कमजोरियों, आफतों और आहोंको कलेजेमें दबाकर घूमो। लेकिन किसीसे उनकी चर्चा न करो। वर्ना तुम मुसीबतोंके झुण्डको अपने

हाथसे निमन्त्रण दोगे। तुम्हारा जीवन भयानक विपत्तियोंसे घिर जायगा और मौत तुम्हारे इर्द गिर्द चक्कर काटना शुरू कर देगी।

संसार रहस्योंका चलता फिरता जादू घर है :—

"कोई संगी नहिं उतै, है इतही को संग।
पथी लेहु मिलि ताहिते सबसों सहित उमंग॥
सबसों सहित उमंग, बैठि तरनीके माँही।
नदिया नाव संयोग, फेरि यह मिलिहै नाँही॥
बरनै दीनदयाल पार पुनि भेंट न होई।
अपनी अपनो गैल पथी जैहैं सब कोई॥"

———

रुपया

रुपया ! रुपया !!

हाथमें कागज पेन्सिल लेकर मेरे साथ चक्कर काटो। हजारों, लाखों मनुष्य फटी हालतमें दर-दरकी ठोकरें खा रहे हैं। उनके दिलोंमें हाहाकारकी होली जल रही है। इनकी महान आत्मायें, इनकी जिन्दा लाशोंको कन्धेपर लादे आहिस्तः-आहिस्तः श्मशानकी ओर रवाना हो रही हैं। क्यों और किस लिये ? लिख लो :—"इनके पास रुपये नहीं हैं।"

बड़े-बड़े कल-कारखानोंमें, आफिसोंमें, सैकड़ों-हजारोंकी तादाद में क्लर्क, बाबू, चपरासी और मजदूर मैशीनोंकी तरह खटते हुये जिन्दगीके बोझे ढो रहे हैं। क्या वजह है ?—"रुपया !"—हरएकके दिलमें रुपयेकी प्यास है।

जेलखानोंके अन्दर आओ। चोर, उचक्के, गिरहकट, डाकू, और बद-माश लोहेकी जंजीरोंमें जकड़े हुये जानवरोंकी जिन्दगी बसर कर रहे हैं। क्यों ? फर्राटेसे लिख लो—"इन लोगोंने रुपयेके लिये लालचके हथौड़े से सुनहरी जिन्दगीको कुचल डाला है।"

यह वेश्याओंका मुहल्ला है। कुछ लोग इसे नर्क कहते हैं, कुछ परि-स्तान। यहांकी वेश्यायें चांदीके चमकते सिक्कोंपर सतीत्व जैसे रत्नको बेच रही हैं। उनका रूप, उनका सौंदर्य, उनकी जवानी कौड़ियोंके मोल बिक

रही है। इनमें कितनी ही विधवायें हैं, कितनी ही सधवायें—कितनी ही कुमारियां! हरएककी जिन्दगी रहस्योंका मयखाना और भयानकताओंका कत्लगाह है। इन्होंने यह पाप पेशा क्यों अख्त्यार किया?—"रुपया! रुपयेकी इश्कबाजी—रुपयेका प्यार!!"

धार्मिक तीर्थस्थानोंमें आओ। एकसे एक दिग्गज पंडित, पुजारी, महन्त, मौलवी, और पादरियोंके झुण्ड दिखाई देंगे। हरएकके दिल टटोलकर देखो—सबका एक ही उद्देश्य है, एकही, लक्ष्य—"रुपया!" तुम जब तक किसीको रुपयेकी दक्षिणा न दोगे—धर्म सफल न होगा। यह भी नोट कर लो—"धार्मिक स्थानोंमें देवताओंकी नहीं, रुपयोंकी पूजा होती है। आजकल देवताओंसे ज्यादा आकर्षण रुपयेमें है—तुरत दान, महा कल्यान!"

संसारका कोना-कोना छान डालो—कहीं बेटा बापकी गरदन दबा रहा है। भाई, भाईका गला घोंट रहा है; औरत मर्दकी खोपड़ी चाट रही है; ऐबोंके पर्दे फाश किये जा रहे हैं,—क्यों और किसलिये? "रुपया! रुपयेकी प्यास!" रुपयेके लिये कितने ही मनुष्य इन्सानसे शैतान बन गये। कितने ही नरेन्द्र नापाक हो गये। कितने ही देशभक्त, सड़े सन्यासी, स्वार्थी सुधारक, समाजसेवक और ठग व्यापारियोंने रुपयेके लिये मनुष्यको कुचल डाला और अपने आपको भूल गये!

आज संसारमें मनुष्यकी कोई कद्र नहीं। इस जमानेमें मनुष्यके लिये सिर्फ उतनी ही जगह है, जो धन द्वारा उसे मिलती है। बिना धनके मनुष्यके अच्छेसे अच्छे गुण बाहर नहीं आते और धनके कारण नीचसे नीच

आदमीकी भी समाजमें पूजा होती है। जीवनके प्रत्येक विभागमें घृणित रूप देखनेको मिलते हैं। धन; जिसका आविष्कार मनुष्यके सुख सुविधाके लिये किया गया था—आज ऐसा दैत्य बन गया है, जो केवल मनुष्यको अपने इशारोंपर ही नहीं नचाता, बल्कि मनुष्यकी नीच भावनाओं को उत्तेजित कर अपने ही द्वारा उसका संहार करा रहा है।

लिखते लेखनी कांपती है। रुपयेके ही लिये आज एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्रों को खा जानेके लिये राक्षसकी तरह मुंह वाये हैं। रुपया! रुपया! आज हँसती सृष्टिको रुपया श्मशान बनानेके लिये उद्योग कर रहा है। कैसा अंधेर है!

अभी उस दिनकी घटना है, रत्नागिरिके किसी गणपत सखारामने अपने बेटेका खून कर डाला। कारण, लड़केका दो हजार रुपयेका जीवन बीमा था। बापने इन रुपयोंको हथियानेके लालचसे बेटेको लाठियोंसे मार डाला और उसकी लाश एक दरख्तके नीचे रख दी, जिसमें लोगोंको यह विश्वास हो जाय, लड़का दरख्तसे गिरकर मर गया!

कैसा पैशाचिक कांड है, रुपया राक्षस है? रुपयेके प्रभावका डंका संसारके कोने-कोनेमें बज रहा है:—

टका कर्ता, टका भर्ता, टका मोक्षप्रदायकः।
यस्य गेहे टका नास्ति, 'हा टका' टकटकायते!

चारों तरफ रुपयेकी हाय-हाय है। सभी चाहते हैं—रुपयोंका खजाना रुपयोंका ढेर।

आजके इस बिगड़े जमानेमें पैसेके सिवा और कोई आकर्षक देवता नहीं

पैसेवाला चाहे कितना ही शैतान क्यों न हो; महापुरुष माना जायगा। जिस आदमीके पास पैसा नहीं, वह विद्वान होकर भी मूर्ख है, गुणी होकर भी जानवर। आजकी जमानेमें जो निर्धन है, वह न तो इन्सान है, न संसारमें कहीं उसका गौरव सम्मान

रुपये ! चाँदीके टुकड़े !!

अमीरोंकी जेबोंमें, सुन्दरियोंके बटुओंमें, दरबानोंके कन्धे पर—सभी तरफ रुपये दौड़ रहे हैं, तेजीके साथ भागे जा रहे हैं !!

यदि तुम्हारी जेब रुपयोंसे खाली है—तुम गरीब हो—तो चाहे तुम्हारा बच्चा बीमारीसे तड़प-तड़पकर मर जाय; मगर डाक्टर बगैर फीस लिये उसको दवा न करेंगे ! देश और समाज तुम्हें नफरतकी निगाहोंसे देखेगा। तुम जिस जमीनपर चलोगे, वह काँटो और कांचके टुकड़ोंसे भर जायगी। ओह ! रुपये की दुनिया सबसे विचित्र, सबसे रहस्यमय है। बैंतालने ठीक ही कहा है—

टका करै कुल हूक, टका मिरदंग बजावै।
टका चढ़ै सुखपाल, टका सिर छत्र धरावै।
टका माय अरु बाप, टका भइयन को भइया।
टका सास अरु ससुर, टका सिर लाड़ लड़इया।
अब एक टके बिनु टकटका रहत लगाए रात दिन।
बैताल कहै विक्रम सुनो धिक जीवन एक टके बिन।

मैं कहता हूं, अगर तुम निर्धन हो, तो रुपये कमाओ ! मगर रुपयोंके लिये किसीके सामने हाथ न फैलाओ—कि मैं कङ्गाल हूं।

आकर्षण-शक्ति

संसारमें चिराग लेकर ढूंढ़नेपर भी तुम्हें एक मनुष्य ऐसा न मिलेगा जो तुम्हारी मुसीबतें सुनकर, तुम्हारे दुःख-दर्दसे हिलकर तुम्हें 'इम्पीरियल बैंक' का एक चेक मुफ्त दे देगा। सभी अपने-अपने स्वार्थमें 'बिजी' हैं, किसीको क्या गरज ? जो तुम्हारी आफतोंको देखे, तुम्हारे रंज अफसाने सुने और उन्हें दूर करनेकी कोशिश करे—

"मांगन मरन समान है, मत मांगें कोइ भीख।
मांगनसे मरना भला, यह सद्गुरुकी सीख॥"

आज रुपया शक्तिका स्रोत है। रुपयेका न होना जिन्दगीके आनन्दोंको खो देना है। रुपयेका होना जिन्दगीको सुखोंसे लाद देना है।

अपनी निर्धनतापर अफसोस न करो। प्रसन्नता और मस्तीसे यह मंजिल तय कर डालो। दुनियामें आज तक जितने धनी आदमी हुए हैं, सभी पहले मामूली हालतमें थे। बगैर छोटेको ग्रहण किये कोई बड़ा नहीं हो सकता। आज तक दुनियामें कोई हुआ भी नहीं। यह सच है निर्धनता भयानक है। वह बहुधा अन्तरात्मा तक को मुर्दा बना देती है; पर ठोकर खाकर ही मनुष्यमें सद्बुद्धि उत्पन्न होती है :—

"सुर्खरू होता है इन्सां आफतें आनेके बाद;
रंग लाती है हिना पत्थर पै पिस जानेके बाद।"

प्रेसिडेन्ट विलसनने लिखा है—'मेरा जन्म निर्धनतामें हुआ। मां के पास रोटियों तकका ठिकाना न था। दस वर्षकी उम्रमें मैंने घर छोड़ा और ग्यारह वर्ष तक सपरिश्रम नौकरी की। मैंने एक डालर भी कभी अपने मनोरंजन और सुखके लिए नहीं खर्च किया। इक्कीस वर्षकी उम्र तक मैंने

पैसा-पैसा सँभालकर रखा। नौकरीकी तलाशमें सैकड़ों मील मारे-मारे फिरना कैसा होता है, इसका मुझे खूब अनुभव है। जंगलमें लकड़ी तोड़ना, सूर्योदयसे पहले उठना और अस्त होनेके बाद तक मेहनत करना और वह भी केवल छः डालर माहवारपर !" परन्तु विलसनने आत्म-सुधारका कोई मौका हाथसे नहीं जाने दिया। अपने बचे-खुचे समयमें इक्कीस वर्षकी उम्र तक उन्होंने लगभग एक हजार अच्छी-अच्छी पुस्तकें पढ़ीं। इसके अलावा उन्होंने किसानी और मोचीगीरी भी सीखी। सालभरमें वह अच्छे वक्ता हो गये और आठ वर्षके अन्दर व्यवस्थापिका सभामें उन्होंने दासताके विरुद्ध वह ओजस्वी व्याख्यान दिया, जिससे उनका नाम हमेशाके लिये अमर हो गया।

सुप्रसिद्ध फ्रान्सीसी जीन जेक्स रूसोसे एक बार किसीने पूछा—"आपने किन-किन विद्यालयोंमें शिक्षा प्राप्तकर सफलता पायी है ?' उन्होंने उत्तर दिया—"मैंने ज्यादातर विपत्तियोंके स्कूलमें पढ़ा है और अपनी गरीबीसे शिक्षा ग्रहणकी है।"

इसी तरह दुनियाके अनेकों वीर और महापुरुषोंका जन्म गरीबीमें हुआ—उन्होंने तरह-तरहके दुर्भाग्यसे टक्करें खायीं—पर सिर्फ आत्मबल और समयके सदुपयोगसे उनके जीवन सफल हो गये।

हम सामाजिक बन्धनकी जञ्जीरोंमें जकड़े अभागे कैदीकी तरह जीवन व्यतीतकर रहे हैं। हमें देश-बिदेशमें घूम-फिरकर अनुभव हासिल करनेका हुक्म नहीं। हम किसी सोसायटीमें नहीं शामिल हो सकते। किसीके साथ खाने-पीनेसे हमारा धर्म भ्रष्ट हो जाता है—फिर हम रुपये कैसे कमा सकते हैं ?

आकर्षण-शक्ति

हम मनुष्योंकी निन्दा-स्तुति और फिजूलकी गपबाजियोंमें अपना कीमती समय बरबादकर रहे हैं। हम अपने दोस्तोंकी उन्नति देखकर जलते हैं, फिर हम रुपये कैसे कमा सकते हैं ?

शिक्षा, परिश्रम, शानदार व्यक्तित्व, मीठी जबान और अनुभव रुपये कमानेमें कल्पवृक्षका काम देते हैं।

यदि तुम रुपये कमाना चाहते हो; बड़े-बड़े व्यापार हाथमें लेना चाहते हो, अखंड धन राशिके मालिक बनना चाहते हो—तो 'हाय रुपया!' कहकर चिल्लानेसे कुछ न होगा। पहले विद्यालयोंमें भर्ती होकर शिक्षा प्राप्त करो, संकुचित विचार दूरकर देश-विदेशकी यात्रा करो, कला कौशल और नये नये व्यापार सीखो, खुद आगे बढ़ो और अपने बच्चोंको आगे बढ़ाओ। फिर देखो, तुम्हारा नाम एक दिन कारनेगी, राकफेलर, हेनरी फोर्ड और निजाम हैदराबाद जैसे धनकुबेरोंकी लिस्टमें लिखा जायगा। तुम रुपयेके महल बनाओगे और तुम्हारे बच्चे काश्मीरके आँगनमें फूलोंकी तरह खेलेंगे।

तुम सिर्फ चार आने पैसे लेकर कोई रोजगार करो। ईश्वर चाहेगा तो इसी चवन्नीसे एक दिन तुम्हें चार लाख रुपये मिल जायँगे। यह हँसनेकी बात नहीं, सत्य है। मनुष्य जो सोचता है, वही हो जाता है।

यदि तुम किसी फर्मके मैनेजर, एकाउण्टेण्ट, कैशियर, क्लर्क, चपरासी, मजदूर या दरवान हो—तो अपनी ड्यूटी ठीकसे दो। अपने काममें खुद अपनेको समर्पितकर दो। होशियारीसे सब काम सँभालो और अपना काम शीशेकी तरह साफ रखो। परिश्रम और सावधानीसे तुम्हारी तनख्वाह बढ़

जायगी। यदि मालिक कंजूस, स्वार्थी और तुम्हारे परिश्रमको कोमत नहीं समझता तो अपनी उन्नतिका दूसरा रास्ता सोचो और आगे बढ़ो।

यदि तुम दूकानदार हो और दूकानदारोसे अच्छे रुपये कमाना चाहते हो तो ग्राहकोंको पहचानो—अपने प्रेम पूर्ण व्यवहारसे उन्हें मुग्ध कर लो। पहले स्वयं उनके हाथों बिक जाओ—फिर माल बेचो, सफलता अवश्य मिलेगी। यूरोप, अमेरिका इत्यादि उन्नत शील देशोंमें दूकानपर काम करने वाले ग्राहकोंको इस तरह अपनी बातोंमें मुग्ध कर लेते हैं कि उनकी तबियत बिना कुछ खरीदे नहीं मान सकती। दूकानदार यदि एक चीज ना पसन्द होगी तो दूसरी दिखायेंगे—फिर तीसरी—फिर चौथी, यहां तक कि सारी दूकानका सामान ग्राहकके सामने उलट देंगे। यदि फिर भी पसन्द न आये तो उनका धन्यवाद स्वीकार कर चले आओ। वे कभी तुम पर रंज न होंगे मगर हमारे देशकी क्या हालत है? यदि तुम दो-चार चीजें देखकर नापसंद कर दो, तो दूकानदार नाक भौं सिकोड़ेगा, बाज-बाज तो यह भी कह बैठते हैं, कि लेना न था, तो परेशान क्यों किया? यहां दोपहरके समय किसी दूकानपर पहुंच जाओ। अधिकांश दूकानदार ऊँघते हुए मिलेंगे। यदि तुम किसी चीजको पूछो कि है या नहीं, तो जवाब मिलेगा—'है'। जब तक तुम दिखाओ न कहोगे, तब तक वह उठ कर दिखानेकी तकलीफ न करेंगे। यदि तुमने दिखानेको कहा, तो इस तरह आलस्यके साथ उठेंगे मानों बड़ी मजबूरीसे उठ रहे हैं और तुमपर बहुत बड़ा ऐहसान कर रहे हैं। किसी-किसी दूकानपर जाकर खड़े हो जाओ, तीन-चार मिनट तक दूकानदार

एक दूसरेसे बातें करते रहेंगे और तुम्हारी तरफ ध्यान भी न देंगे। यह आदतें दूकानदारी को बिगाड़ने वाली हैं।

रुपये कमानेके लिये सबसे बड़ी सफलता तुम्हारे व्यक्तित्वपर निर्भर है। व्यक्तित्व जितना ही ऊँचा और प्रभावशाली होगा—उतने ही ज्यादा रुपये हाथ लगेंगे। बड़े-बड़े व्यवसायी और नौकरी पेशेवाले जो रुपये कमानेकी स्कीममें 'फेल' हो जाते हैं, इसका सबसे बड़ा कारण है—उनका कमजोर व्यक्तित्व, मनकी अप्रसन्नता, चेहरेकी मनहूसियत, चिड़चिड़ा स्वभाव, गुस्सा और अहंकार।

रुपया निकम्मे मनुष्योंके लिये पानीके बुल्लेकी तरह है—यह उठा और वह गायब। आलसी और निकम्मे आदमियोंकी शक्लें देखो, यह पुराने अजगरकी तरह आलस्यकी साँसें लेते दिखाई देंगे।

इन्हें रोना आता है; मगर हँसना नहीं। ये जमानेको कोसते हैं—किन्तु जमानेको पलटनेकी कोशिश नहीं करते। सोनेवालोंमें इनका नम्बर पहला है—जागनेवालोंमें इनका नाम निशान तक नहीं मिलता। ऐसे आदमी स्वयं नष्ट होते हैं और अपनी जातिको नष्ट करते हुये समाज गौरवको भी खत्म कर डालते हैं।

गरीबी मनुष्यके लिये महापाप है और इस महापापको दूर करनेकी तरकीबें तुम्हारे हाथमें है। हुनर, होशियारी सच्चाई, ईमानदारी; प्रेममय, मिजाज और शिक्षा—रुपये कमानेकी चाभियां हैं। कुछ लफंगोंका खयाल है—रुपये दगा, फरेब, बेईमानी, घूसखोरी, तिकड़म और खुशामदसे प्राप्त

होते हैं, यह उनकी बेवकूफी है। इस तरह रुपये कमानेवाले एक दिन फकीर हो जाते हैं और उन्हें कोई नहीं पूछता।

संसार में हजारों किस्मके आकर्षक व्यापार हैं, उन्हींमें से किसी एकको अपना साथी चुनलो। मगर पहले इस बातका निश्चय करलो कि तुम किस व्यापारके लायक 'फिट' हो, किस काममें तुम्हें ज्यादा दिलचस्पी है। मौके ढूंढ़ो और मनकी मोटरके चक्कोंको बदल डालो। वे पंकचर हो गये हैं। उनमें नये 'टायर' फिटकर आगे बढ़ो। लक्ष्मी उद्योगी पुरुषका सहारा लेती हैं।

दुनिया पुरानी केंचुल छोड़कर नया रूप धारणकर रही है। हाथपर हाथ धरकर बैठनेसे कुछ न होगा। भाग्यसे कर्म अधिक प्रबल है। मनुष्यको कोई नहीं बनाता, उसे खुद मनुष्य बनना पड़ता है।

रुपयेको लेकर तुम सब काम कर सकते हो। स्वर्ग तकमें सीढ़ियाँ लगाकर आकाशकी अन्दरूनी हालतका पता लगा सकते हो, रुपया बच्चोंके लिये खिलौना है, जवानोंके लिये चेहरेकी सुर्खी और बूढ़ोंके लिये सहारेकी लकड़ी!

यों तो मैंने कुछ रुपये कमानेवालोंमें विलक्षण दिमाग देखे हैं। मगर मुझे जीवनमें एक ऐसा आदमी मिला—जिसकी बुद्धिपर दंग रह जाना पड़ा।

एक दिन मुझे अपनी लायब्रेरीमें एक चिठ्ठी मिली, जिसका मजमून था :—

"प्रिय महाशय,

आपका पुस्तकालय बड़ा अच्छा है। मैं जब आपको पुस्तकें पढ़ते देखता

हूं, तब मुझे खूब आनन्द आता है; परन्तु आपको धन्यवाद देनेका साहस नहीं होता। इसलिये कि आप पुस्तकें पढ़नेमें इस तरह तल्लीन रहते हैं कि आपकी खूबसूरत आंखें रास्तेके चलते-फिरते मनुष्योंको नहीं देख सकतीं।

मुझे सख्त अफसोस है, आपके पुस्तकालयकी कई कुर्सियां टूट गयीं हैं। उनमें किसीके पाए उखड़ गये हैं, किसीकी पीठदानी हिल रही है। मैं जब उन्हें देखता हूं, कलेजा हिल जाता है।

अच्छा हो, आप उन्हें मरम्मत करालें। मैं कल सुबह आठ बजे आपकी सेवामें हाजिर होऊँगा।

आपका—
एक बढ़ई"

मैंने उसका स्वागत किया और उसके पत्र लेखन कलाकी तारीफ की। उसने कहा—"मैं इसी तरह रोज सुबह-शाम घरके बाहर निकलता हूँ और बड़े आदमियोंके बैठकखानों, घरों तथा दूकानोंको होशियारीसे ताड़ता हूँ। जहां त्रुटियाँ देखता हूँ, पत्र लिखकर मालिकोंसे मिलता हूँ और इस तरह प्रत्येक दिन अच्छा रोजगारकर लेता हूँ। वर्तमान समयमें मेरी आमदनी लगभग तीन सौ रुपये मासिक है। आज तक मैं कहीं असफल नहीं हुआ और मेरा काम धड़ल्लेसे चल रहा है। उसने मेरे पुस्तकालयकी कुर्सियों की मरम्मतकी और मेरे घरके दरवाजोंको सुधारा। इस तरह वह मुझसे खुशी-खुशी कई रुपये ले गया।

यों ही, बल्कि इससे भी बढ़कर रुपये कमानेकी हजारों आकर्षक तरकीबें हैं। हां, तुममें धनोपार्जनका दिमाग और परिश्रमका माद्दा होना चाहिये।

मैनचेस्टरके धनवान बैंकर मि॰ अ॒कका कहना है—"मैं जब तक एक गिनी नहीं पैदाकर लेता—तब तक एक शिलिंग (गिनीका २१ वां भाग) भी नहीं खर्च करता। मैंने अपने जीवनमें निरन्तर इसी नियमका पालन किया है और यही मेरे धनवान होनेका रहस्य है। धन पैदा करना उतना कठिन नहीं, जितना उसका संचय करना। जो अपनी आमदनीसे अधिक खर्च करता है, वह कभी धनवान नहीं हो सकता।"

मालामाल याने लखपती, क्रोड़पती होनेके आश्चर्यजनक सिद्धान्त जिन लोगोंमें पाये जाते हैं, उनकी मनोवृत्तियोंका अध्ययन प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक डा॰ के॰ बारेन पी॰ एच॰ डीने किया है। डा॰ बारेन मनोविज्ञानके विशेषज्ञ हैं और उनके आविष्कारोंसे यह संभव हो गया है कि किसी भी व्यक्तिको यह बतलाया जा सकता है, कि वह लखपती होगा या नहीं? डा॰ बारेनने गत २५ वरसोंमें कई हजार लखपतियोंका अध्ययनकर कसौटीके रूपमें तीस प्रश्न तैयार किये हैं, जिन्हें मैं यहां लिख रहा हूँ। उनका विश्वास है, यदि सचाई के साथ प्रत्येक प्रश्नका ठीक ठीक उत्तर दिया जाय तो यह बतलाया जा सकता है कि प्रश्न पूछनेवाला लखपती होगा या नहीं। जो प्रश्न दिये गये हैं, उनमें से प्रत्येकके लिये १ नम्बर नियत है। तुम जिस प्रश्नका उत्तर "हां" में देसको—उसका १ नम्बर रखलो। जिस प्रश्नका उत्तर "नहीं" देसको—उसका कोई नम्बर न लिखो। सब प्रश्नोंका उत्तर देनेके बाद जोड़कर देखो—तुमने कितने नम्बर पाये हैं। नम्बरोंकी संख्याका तुम्हारे लखपती होनेके साथ क्या सम्बन्ध है—यह अन्तमें देखो :—

प्रश्नावली:—

(१) क्या तुम रुपया चाहते हो, या वह अधिकार जो संसारकी अन्य चीजोंकी अपेक्षा रुपयेसे ही प्राप्त होता है ?

(२) नीति या अन्य जनोंके भावोंकी परवा न कर क्या तुम अपनी व्यक्तिगत योजनाओंको कार्यान्वित करते हो ?

(३) तुम क्या अपनेको महापुरुष मानते हो और बाहरसे नम्र बनते हो ?

(४) तुम्हारा हृदय जो कुछ चाहता है, या तुम्हारी प्रवृति जो प्रेरित करती है, उसके बजाय अपनी बुद्धिका तकाजा पूरा करनेका इरादा क्या तुममें है ?

(५) तुम्हारे विचारोंमें उत्पादन-शक्ति तो है ? तुम इन विचारोंको कार्यान्वित तो करते हो ?

(६) क्या तुम्हें ऐसी मूल्यवान चीजें एकत्र करनेका अभ्यास है, जिन्हें मुनाफेके साथ बेंचा जा सकता है—जैसे टिकट, तैलचित्र, अलभ्य पुस्तकें आदि।

(७) क्या तुम अपने रोजगार या कार्यके विषयमें हमेशा कुछ अधिक जाननेका प्रयत्न करते हो, जिससे तुम अपने प्रतिद्वन्द्वियों को पछाड़े रहो ?

(८) क्या तुम सामूहिकके बजाय व्यक्तिगत उद्योगके लिए जान लड़ा देते हो ?

(९) जनता जिस तरह सोचती हो, उसके विरुद्ध आचरण करनेका

नैतिक बल क्या तुममें है—भले ही तुम्हारा साथी वैसा आचरण करनेके कारण तुमसे घृणा करे या तुम्हारा मखौल उड़ाये ?

(१०) लोगों पर कैसे प्रभाव डालना चाहिये और कैसे उनका नेतृत्व करना चाहिये—क्या तुम्हें यह आता है ?

(११) क्या ऐसे काम करनेके लिए तुम अपनेको तैयारकर सकते हो, जो तुम्हें स्वयं अच्छे न लगते हों ?

(१२) अपनी व्यक्तिगत योजनाओंको पूरा करनेके लिए कठिन परिश्रम करनेवाले उपयुक्त व्यक्तियोंका चुनाव करनेकी योग्यता क्या तुममें है ?

(१३) तुम दूसरोंके बजाय क्या अपने लिए काम करना पसन्द करने और क्या अपना कारबार आरम्भ करनेका साहस तुममें है ?

(१४) जब तक कोई समस्या हल न हो या जब तक कोई कार्य सन्तोषजनक रूपमें पूरा न हो, तब तक उसमें संलग्न रहनेकी योग्यता क्या तुममें है ?

(१५) प्रकट रूपमें सैकड़ों बाधाओंके रहते हुए भी उनकी परवा न कर क्या तुम अपने काममें लगे रहते हो ?

(१६) "अशर्फियां लुटें कोयलोंपर छाप" की कहावत चरितार्थ किये बिना क्या तुम मितव्ययी हो ?

(१७) तुम अपने साथी बच्चोंके साथ जब अपने खिलौनोंकी बदऔदल करते थे, तब अक्सर इस व्यापारमें मुनाफा तो रहता था न ?

(१८) माता-पिता द्वारा मजबूर नहीं किये जानेपर भी कुछ अतिरिक्त रकम पैदा करनेकी इच्छासे क्या तुमने स्कूलके घण्टोंके बाद बाकी समयमें अपने लिए कोई काम खोज लिया था ?

(१९) क्या तुम लोगोंको यह विश्वास दिलाते हो कि तुम्हारा बचन ही तुम्हारा लेख है ?

(२०) क्या तुम यह विश्वास करते हो, कि दूसरोंके सङ्गठित कार्यके मुनाफेको बुद्धिमत्तापूर्वक नियन्त्रिण और प्राप्त कर साधारणतः लखपती हुआ जाता है ?

(२१) खर्च कम करने, बिक्री बढ़ाने और मुनाफा ज्यादा उठानेके लिये नये-नये उपाय निकालनेकी योजना तैयार करने पर तुम क्या प्रतिदिन १२ घण्टे विचार करते हो और फिर अपने निर्णयोंके अनुसार क्या तुम कार्य करते हो ?

(२२) तुम सावधानीसे अपने स्वास्थ्यकी रक्षा तो करते हो ?

(२३) दूसरोंके इरादोंके विषयमें तुम्हें सन्देह रहता है और क्या तुम उनके सम्बन्धमें सही-सही विश्लेषण करते हो ?

(२४) अच्छी तरह जांच कर लेनेके बाद अपने निर्णयोंकी सचाई पर क्या तुम अपना रूपया लगानेके लिए तैयार हो ?

(२५) जिस कामके विषयमें तुम स्वयं नहीं जानते, उसे किसीके इशारे पर उसीके लाभके लिए करनेसे क्या तुम बचते हो ?

(२६) हानि-लाभकी गुञ्जाइशके लिए रकम जमा देकर क्या तुम सट्टा करनेसे बचते हो ?

(२७) क्या तुम इस बातको जानते हो, केवल कठिन परिश्रम और मितव्ययतासे कभी कोई आदमी लखपती नहीं हुआ, परन्तु अन्य लोग जो

काम करते हैं, उसका मुनाफा, सब लोगोंके परिश्रमका मुनाफा स्वयं प्राप्त कर लेनेसे कोई भी लखपती हो सकेगा ?

(२८) क्या तुममें सङ्गठन करनेकी योग्यता है ?

(२९) तुम्हारे आरामसे रहनेकी दृष्टिसे तुम्हारी आमदनी चाहे काफी से भी ज्यादा हो, परन्तु क्या तुम इससे हमेशा असन्तुष्ट रहते हो ?

(३०) क्या तुम जानते हो, रुपए से कैसे काम लिया जाता है ?

प्राप्त नम्बरोंका अभिप्राय

इन प्रश्नोंका सही-सही उत्तर देनेसे तुम्हें जितने नम्बर मिलेंगे, उससे तुम्हारे लखपती होनेके सम्बन्धमें यह नतीजा निकाला जा सकता है—

१२ या कम—व्यापारी या कारबारीके रूपमें निश्चित असफलता।

१३-१५—तीसरे दर्जेके व्यापारी।

१६-२१—मध्यम श्रेणीके व्यापारी, औसत दर्जेकी आमदनी।

२२-२४—अच्छे व्यापारी, आरामसे अपना स्थान निर्माण कर सकते हो

२५-२६—बहुत अच्छे व्यापारी; कुछ धन कमा सकते हो।

२७-२८—ऊँचे दर्जेके व्यापारी, अच्छी रकम पैदा कर सकते हो।

२९-३०—प्रमुख उद्योगी, तुममें लखपती होनेके लिए सभी परमाणु हैं

गरीबी या बेकारी भीख मांगने, सहानुभूति ढूंढ़ने या व्याख्यानोंसे नहीं दूरकी जा सकती। किसी काममें एक-दो बार 'फेल' हो जानेपर घबराओ नहीं। कोशिश करो और फिर कोशिश करो। चिकनी दिवाल पर मकड़ी बार-बार चढ़ती और गिरती है, परन्तु हताश नहीं होती। इससे सबक सीखो और आगे बढ़ो।

रुपयेको सही रास्तेसे खर्च करो, न किसीसे कर्ज लो, न दो। कर्जदार आदमीका दुनियामें खड़ा होना मुश्किल है। जब तक तुम्हारे पास पैसे न हों, भूखे सो जाओ, मगर कर्ज लेकर दूध-मलाई न चाभो। कर्ज वह कोढ़ है जो जिन्दगीको गन्दा बना देता है।

जुआ, रेस, सट्टा और लाटरियोंमें किस्मत न आजमाओ। बीती आफतें भूल जाओ और अपनी अन्तरात्मासे यह आवाज उठने दो :—

"हम कर्मयोगी हैं। दुनियामें तूफान पैदा करने आये हैं—नई रोशनी लेकर आगे बढ़ेंगे—जिसे दुनियाकी कोई ताकत न बुझा सकेगी।"

———

वर्तमानकी कीमत

लोग कहते हैं, यह हाहाकारका जमाना है। जिधर देखो, उधर हाहा-कार! हमारी आँखोंमें आफतकी तस्वीरें नाच रही हैं, आँसुओंमें घर डूबा जा रहा है—

"लुटे हैं यों कि किसीके गिरहमें दाम नहीं,
नसीब रातको पड़ रहनेका मुकाम नहीं।
यतीम बच्चोंके खानेका इन्तजाम नहीं,
जो सुबह खैरसे गुजरी उमीदे शाम नहीं।
अगर जियें भी तो कपड़ा नहीं बदनके लिए।
मरें तो लाश पड़ी रह गई कफनके लिये॥"

हमारे अफसाने लहूके रङ्गमें डूबे हैं, हमारी कोई नहीं सुनता!

मैं कहता हूं, कोई सुनेगा भी नहीं। तुम्हारे रोने व्यर्थ होंगे। तुम्हारी आहोंका धुआं मनुष्य सिगरेटके धुएंकी तरह उड़ा देंगे। क्यों, जानते हो? तुम मनकी शक्तियोंको भूलकर पथ-भ्रष्ट हो गये हो, मनुष्यताका मार्ग छोड़ कर पशुओंकी श्रेणीमें चले आये हो। सच्चा आनन्द क्या है? यह सोचनेकी फुरसत नहीं। चतुरता तुममें इतना ज्यादा बढ़ गयी है कि उसमें धूर्तताके चिराग जल रहे हैं। पालिसी या नीतिने तुम्हारे अन्दर दगाबाजीका रूप धारण कर लिया है। दम्भ और अभिमानने तुमपर इतना बड़ा सिक्का जमा

लिया है कि तुम ईश्वर और उसके कानूनोंको भूल गये और तुममें फिजूल हाहाकार मचानेकी आदत पड़ गयी है।

तुम्हारे मनमें कुछ और है— जबानमें कुछ और। जिन्दगी और मौत के थपेड़े खानेपर भी तुम्हें होश नहीं होता। अपनी बेवकूफियोंसे मौतके साथ लिपटे जा रहे हो; मगर मौत भी तुम्हारा तिरस्कार करती है। फिर तुम्हें कोई क्यों पूछे ?

यदि तुम पशुओंके झुण्डसे भागकर मनुष्य श्रेणीमें आना चाहते हो, मनुष्यसे भी ऊँचे महामानव बनना चाहते हो,—तो बीती बातें भूल जाओ। वर्तमानको पहचानो। वर्तमानमें ही मनुष्य की सफलताओंका तत्व छिपा रहता है।

यह जमाना आगे बढ़नेका है। इतिहासका युग है। मानसिक शक्तियोंके जगानेका वक्त है। इस युगकी धारा बिजलीकी रफ्तारसे भी तेज है। दुखी और हताश होनेकी जरूरत नहीं, सुखोंकी स्वयं सृष्टि करो। अब तुम्हारे लिए वह जमाना आ रहा है, जब तुम विज्ञानकी बदौलत समुद्र, पहाड़, जंगल, दरख्त, पशु, पक्षी और ईश्वरको प्रत्येक सृष्टिके साथ दिल खोलकर बातें करोगे। यह मिथ्यावाद, कविकी कल्पना या पागलका प्रलाप नहीं—ऐसा होगा, बल्कि इससे भी बढ़कर, इससे भी ज्यादा विचित्र होगा। मैं भंग पीकर यह नहीं लिख रहा हूं—मेरे होश दुरुस्त हैं। मनुष्य प्रकृति, आकाश, पाताल किसीको न छोड़ेगा, सबपर उसकी विजय होगी, वह शक्तियों की खोजमें जमीन-आसमान एक कर देगा और धीरे धीरे देवताओंको श्रेणीमें जा बैठेगा।

जरा तुलना कर देखो—मनुष्य पहले बन्दरकी शक्लमें था, अब वह आदमी बनने लगा है। हमारे समाजमें जो बातें सौ वर्ष पहले थीं, आज उनमें जमीन आसमानका फर्क हो गया है। इसी तरह जिस जमाने पर आज तुम चल रहे हो, सौ वर्ष बाद उसमें महान उलट-पुलट हो जायगा। मनुष्य ज्यों-ज्यों महामानव होकर ज्ञान मार्गकी ओर बढ़ता जा रहा है, त्यों-त्यों उसकी अधिक उन्नति हो रही है। आँखें खोलकर देखो—जैसे फूलोंके साथ पत्तियाँ लगी हैं, चन्द्रमाके साथ तारे लगे हैं, सागरके साथ नदियाँ और नदियोंके साथ नल नाले जुड़े हैं, वैसे ही वर्तमान भी तुम्हारे साथ छाया जैसा चल-फिर रहा है। उसे पहचानो और ज्यादेसे ज्यादा फायदा उठाओ।

इस समय तुम व्यक्तित्व, साहस, शक्तियों और योग्यताओंको बढ़ाकर उनमें नये-नये चमत्कार उत्पन्न करो। मनुष्योंपर अपने दिमागका प्रभाव डालो, शक्तिशाली मनुष्योंसे शक्ति संचय करो। गवर्नमेंन्टके उच्च कर्मचारियोंसे मिलो। गवर्नर, मिनिस्टर, जज, मेयर, कांग्रेसमैन, राजे-महाराजे, और रईसोंसे मेल-मिलापकर अपनेको आगे बढ़ाओ।

तुम्हारे लिये तो यही सुनहरा समय है। देश-विदेशकी यात्रा करो। व्यापार, साहित्य, विज्ञान और नये आविष्कारोंके अध्ययनमें अपनेको अर्पित कर दो। सभा-सोसाइटियोंमें प्रभावशाली भाषण दो। रुपये कमाओ। मकान, बगीचे जमीन्दारियाँ खरीदो और मनकी अच्छी अभिलाषाओंकी पूर्तिमें लग जाओ।

यही तो समय है। मनकी कमजोरियां दूर कर उनमें खूबसूरती पैदा

करो। चमत्कार पूर्ण पुस्तकें लिखो, नए और मौलिक विचारोंको गहराईसे फैलाओ और संसारके प्रसिद्ध राजनैतिक, लेखक, वैज्ञानिक तथा सम्पादकोंके साथ परिचय प्राप्त करो। दर्शन, आध्यात्म, इतिहास और साइन्सकी पुस्तकें पढ़ो। तुम्हारे लिये यह जमाना भंग छाननेका नहीं, शराबकी मतवाली तरंगोंमें बहनेका नहीं, शादियोंमें मशगूल होनेका नहीं—यह जागरणका जमाना है। इस जमानेमें धर्मके असली तत्वोंको समझो और मनकी खेती मनुष्य-गौरवके बीज बोकर दुनियाकी तेज रफ्तारमें आगे बढ़ो।

हफ्तेमें एक दिन छुट्टी मनाना बहुत जरूरी है। रोज एक ही धन्धेमें लगे रहनेसे दिमाग कूड़ा हो जाता है। छुट्टीके दिन मनको पूर्ण आजादीकी दुनियांमें टहलेने दो। इस दिन छोटी-मोटी यात्राएं करो, जीवनमें मनो-विनोदकी उथल-पुथल होने दो। छुट्टियां शक्तिकी जननी हैं। संसारमें बहुत ज्यादा मनुष्य ऐसे हैं, जो छुट्टियोंकी आशापर जीते हैं और बहुत कम मनुष्य ऐसे हैं, जो छुट्टियोंकी जरा भी कीमत नहीं समझते। इनकी मनकी मशीनें रात दिन चला करती हैं, जिसका नतीजा यह होता है कि एक दिन इनके कल पुर्जे इस तरह बन्द हो जाते हैं कि मरम्मतमें जमीन-आसमान एक कर देना पड़ता है—फिर भी कुछ फायदा नहीं होता।

तुम्हारे लिए यही तो समय है। मनमें उत्साह पैदा करो। उत्साह सैकड़ों गुणोंकी उत्पत्तिका मूल रहस्य है। उत्साहके कारण भयानकसे भयानक कठिनाइयां सुलझ जाती हैं। सच पूछा जाय; तो सिकन्दरने उत्साहसे ही एशियापर विजय प्राप्त की। उत्साहसे मन हमेशा जवान रहता है। उम्र अधिक हो जानेसे बाल भले ही सफेद हो जायँ, उत्साही हृदय बूढ़ा नहीं

होता। शर्मीले और फिसड्डी आदमियोंकी कहीं कद्र नहीं होती। सोते शेरकी अपेक्षा भूंकनेवाले कुत्तेसे ज्यादा काम निकलता है।

जीवनकी हर एक सांसपर आगे बढ़ो ? दुःखोंकी कड़ी धूपमें झुलसते हुए मरु जीवनमें सुखका झरना बहा दो। मृत्युमें जीवनका निर्माण करो। तुममें ब्राह्मणका सा तेज और अर्जुनका सा पुरुषार्थ होना चाहिये। तुम्हारे दुःख-दर्दोंमें गहरे आकर्षण छिपे हैं ? अपनी कठिनाइयों, बलिदानके तकाजों कँटीले रास्तोंमें सफल यौवन खोज करो। जिन्दगीका यही अक्षय बल है।

अपने रास्तेपर अकेले चलो। स्वप्नमें डूबे हुए प्राणीकी तरह बीहड़ बियाबानोंमें प्रवेश करो और ऊबड़-खाबड़ भूमि लाँघते हुए अपने लक्ष्यपर पहुंचो। यदि तुमपर मुसीबतोंके पहाड़ टूटते हैं, तो न घबड़ाओ! अपनी बिपत्ति कहानी जङ्गलके दरख्तोंको सुनाओ। इस तरह यदि सिद्धांत पथपर सफर करते हुए लोग तुम्हारा साथ छोड़ दें और मानव-जातियाँ तुम्हारे खिलाफ हो जाँयँ, तो किसीकी परवा न करो—आगे बढ़ो।

वर्तमान शक्तियों द्वारा तुम्हारे उजड़े हुए चमनमें पुनः बसन्तका आगमन होगा। रङ्ग-विरंगे फूलोंसे तुम्हारी दुनिया भर जायगी और तुमपर हजारों-लाखों भवँरे मंडलायेंगे। निराशा क्यों ? निराशा पत्तन है और आशा उत्थान!

स्त्री

विन्ध्याचलकी खूबसूरत पहाड़ियोंपर टहलते हुए अचानक मेरी मुलाकात एक महात्माजीसे हुई। बातचीतके सिलसिलेमें उन्होंने कहा—"स्त्री काल-सांपिनी है, तुम हमेशा उससे दूर रहना।"

यदि तुम आत्माकी उन्नति चाहते हो, धर्मपर तुम्हारा विश्वास है, तो स्त्री जातिसे हमेशा घृणा करना। यह परमात्माकी नापाक सृष्टि है :—

"ब्यास कनक औ कामिनी, ये हैं करुई बेलि।
बैरी मारै दांव दै, ये मारैं हँसि खेलि॥"

मैं महात्माजीके सामने झुक गया और उनकी चरणधूलि मस्तकपर चढ़ाली।

यह बहुत दिनोंकी बात है। उन दिनों मैं यौवनके बासन्ती बगीचेमें टहल रहा था। एकाएक महात्माजीने उसमें वैशाखकी तरह प्रवेशकर मेरी उमंगोंको झुलसा डाला। मैं नहीं समझता, वह महात्माजीका उपदेश था, या दुर्वासाका शाप। रोम-रोमसे आगकी चिनगारियाँ निकलने लगी और मेरा मधुर जीवन प्रलयंकर शंकरका ताण्डव नृत्य हो गया। उन दिनों जहाँ कहीं मैं औरतोंको देखता, मुंह फेर लेता। महात्माजीकी कृपासे मैं स्त्री-द्रोही बन गया।

इस तरह बरसों बीत गये। जिन्दगामें कितनी ही आँधियाँ आई और तूफानकी तरह निकल गईं। फिर भी स्त्री क्या है—मैं न पहचान सका!

पहचाना कब? जब उसने मुझे एक दिन मौतके पंजेसे खींच लिया! कष्टोंके भयानक अन्धकारमें उसने मेरी जिन्दगीमें प्रकाशके दीपक जला दिये, मेरे हृदयमें प्रेमकी वीणा बज उठी।

हाँ, उसी दिन मैंने पहचाना—स्त्री क्या है, स्त्री-शक्ति किसे कहते हैं? यदि विन्ध्याचलके स्त्रीद्रोही महात्माजी आज मुझे मिल जाते, तो मैं पूछता—"महात्मन, यदि मैं स्त्रीको न देखूंगा, तो समझूंगा कैसे—स्वर्ग कैसा है? देवी-देवताओंकी पवित्रता कैसी है? स्त्रीको न देखूंगा, तो सीखूंगा कैसे—भक्ति क्या हैं? धैर्य और धर्म किसे कहते हैं। यदि वह रूप-छटा न देखूंगा, तो जानूँगा कैसे—अप्सरायें और गन्धर्व जो संगीत अलापते हैं वह मधुर संगीत कैसा है?

स्त्रीने अपने प्रेमके आँसुओंसे संसारको उसी तरह घेर रखा है, जिस तरह समुद्र पृथ्वीको घेरे हैं।

स्त्रीकी आँखोंमें ईश्वरने दो दीपक जला दिये हैं, ताकि संसारके भूले-भटके उसके प्रकाशमें खोया हुआ रास्ता देख लें। स्त्री एक मधुर सरिता है, जहाँ मनुष्य अपनी चिन्ताओं और दुःखोंसे त्राण पाते हैं।

जिस समय तुमपर तकलीफें पड़ें, रमणी-रूप-रसका पान करो—उमंगोंकी तरंगें उछलने लगेंगी। जब तुमपर आफतें आयें, सुन्दरी स्त्रीका दिल टटोलो—विपत्तियोंके बादल कट जायंगे। इसे याद रखो—तारे आकाशकी कविता हैं, तो स्त्रियाँ पृथ्वीकी संगीत-माधुरी।

आकर्षण-शक्ति

स्त्री वह फूल है, झरने जिसे पानी पिलाते हैं; मेघ नहलाते हैं, चन्द्रमा जिसका मुंह चूमता है और ओस जिसपर गुलाबजल छिड़कती है। श्रीमती सरोजिनी नायडू अपनी एक कवितामें लिखती हैं—'गुलाब पीले पड़ गये हैं, उनका सौरभ हवामें उड़ने लगा है। क्यों? गुलाब ईर्षासे कुम्हला गया है, सौरभ उसका रुदन है। इसलिये कि राजकुमारी जेबुन्निसाने अपने गालों-परका घूंघट जरा हटा दिया है। गुलाबोंका नाज इसीलिये काफूर हो गया!"

"दिले दुश्मन उस हूरका घर बना है।
जहन्नुममें फिरदौस मंजिल यही है॥"

स्त्री द्वारा ही प्रकृति पुरुष-हृदयमें अपना सन्देश लिखती है।

देवताओंके इतिहास पढ़ो, शास्त्रोंके पन्ने उलटो, काव्य-समुद्रमें गोते लगाओ, उपन्यास-नाटकोंका समुद्र मन्थन करो—सबमें स्त्री-शक्ति सूर्य किरणोंकी तरह चमक रही है। देखो—सीता खो गई हैं; भगवान राम-चन्द्र उसके बिरहमें पागल हैं। वह जंगलोंमें भटकते हैं और बृक्षलतासे पूछते हैं:—

हे खगमृग! हे मधुकर श्रेणी।
तुम देखी सीता मृगनयनी?

कहाँ तक लिखूं? स्त्री जीवन एक गूढ़ पहेली है। सौंदर्य कोमलता स्नेह और शीलकी देवी, इन्हीं गुणोंसे वह पुरुषको अपनी ओर आकर्षित करती है। जहाँ स्त्री नहीं, वह स्थान नर्क है। यदि पुरुषको समस्त संसारका राज्य

मिल जाय और स्त्री न मिले, तो वह भिखमंगा है। इसके विपरीत यदि निर्धनके पास स्त्री है—तो वह चक्रवर्ती राजाके समान है।

प्रकृतिने स्त्रीको इस कारण बनाया है कि वह प्रेम और प्यारसे हमारे आनन्दमें वृद्धि करे, कष्टोंको दूर करे। यदि संसारमें कोई स्त्री न हो, तो यह इस तरह सूना नजर आये, जैसे वह मेला—जिसमें किसी प्रकारको न तो बिक्री हो, न मनोरञ्जनका सामान। स्त्रीकी मुस्कुराहट बिना संसार ऐसा निकम्मा हो जाये—जैसे साँस बिना शरीर, फूल-फल बिना वृक्ष, और नींव बिना मकान।

आजकल बिगड़े दिल मनुष्योंकी धारणा है, स्त्री केवल भोग विलासकी सामग्री है। पुरुषोंकी पशु प्रवृत्तिको चरितार्थ करनेके लिये ही उसका जन्म हुआ है। यह मनुष्य नामको कलंकित करनेका सिद्धान्त है।

स्त्रीके आदिमें मनुष्य अपंग था, वह पृथ्वीके कोनेमें पड़ा सिसक रहा था। स्त्रीने ही उसे उठाया और पाल-पोसकर बड़ा किया। आज वही कृतघ्न मनुष्य स्त्रीको पैरकी जूती समझता है। घृणित इन्द्रिय लालसाको चरितार्थ करनेके लिये उसे चरणोंको दासी बना रक्खा है। हम उसपर अत्याचार करते हैं, उसे बिलासकी वस्तु समझते हैं। विचारकर देखो, स्त्रीपर अत्याचार करना अधर्म है; इन्द्रियोंपर अत्याचार उससे भी ज्यादा अधर्म! स्त्रियोंको दुर्बल बन्धनमें न बाँधो, उनका अपमान न करो, जो दीपक हर समय बुझाया जा सकता है, जो लता बातकी बातमें तोड़ी मरोड़ी जा सकती है,—उसके साथ अधर्म कैसा, अत्याचार क्यों?

स्त्री लक्ष्मी है; यदि तुम सोती शक्तियोंको जगाना चाहते हो, तो स्त्री द्वारा आकर्षण प्राप्त करो।

"जहाँ स्त्रियोंकी पूजा होती है, वहाँ देवता रहते हैं।" शास्त्रकारोंने कहा है—"पृथ्वीके समस्त तीर्थ स्त्रीके पैरोंमें मौजूद हैं। उनमें देवताओं तथा मुनियोंका तेज है।"

स्त्री, शिक्षा देनेमें पिताके समान है। हर तरहके दुःख दूर करनेमें माता जैसी। एकही भार्या मन्त्री, मित्र, नौकर रूपसे अनेक हो जाती है। उसे पहचानते ही संसार अमरावतीके रूपमें दिखाई देता है।

तुम मैक्स्वनीके ये शब्द न भूलो। वह कहते हैं:—"जब हम किसी महान कार्यके लिये अपनेको या दूसरोंको उत्साहित करना चाहते हैं, तो उन बीर पुरुषोंका उदाहरण देते हैं, जो शूरताके साथ युद्धमें कूदे हैं और छाती दिखाते हुए लड़ाईके मैदानको पारकर गये हैं। यह हमारे लिये कम लज्जाकी बात नहीं कि हम अपने वीर पुरुषोंका इतिहास कम जानते हैं। इससे भी अधिक लज्जाका विषय है, हम अपनी वीर स्त्रियोंके विषयमें कुछ भी नहीं जानते।"

यदि तुम किसी स्त्रीको पापकी आँखोंसे देखते हो, तो परमात्माके क्रोधको जगाते हो और अपने लिये जहन्नमका रास्ता तैयार करते हो।

स्त्रीको न भूलो। स्त्री शक्तिको न भूलो। स्त्रियाँ शक्तिकी देवी हैं। उन्हें पहचानो—

मुहब्बतकी मुहब्बत है, इबादतकी इबादत है।
जहाँ जलवा किसीका देखा लेना सर झुका देना॥

—

मनुष्य-धर्म

मनुष्यने धर्मकी सृष्टिकी है, धर्मने मनुष्यकी नहीं।

लेकिन धर्म है क्या? धर्म किसे कहते हैं? हमारा जो कर्तव्य है, उसीका नाम धर्म है। सदाचारका नाम धर्म है। प्रेम और शुद्ध स्वभावका नाम धर्म है। यदि मनुष्य, मनुष्यके साथ युद्ध करता है, लड़ता है, तो उसके यह माने हुए कि मूर्खताकी तरफ उसकी जीत है, किन्तु धर्मकी तरफ हार! वह एक तरफ सिद्धि प्राप्त करता है, दूसरी तरफ अमृतसे वञ्चित हो जाता है।

धर्मका उद्देश्य है आत्माकी उन्नति—इसलिये जो धर्म व्यक्तित्वकी उन्नति और आत्माके विकासमें बाधा डालता है, वह धर्म नहीं।

बहुतसे लोग समझते हैं, धर्म जंगलोंमें रहता है, कपड़े रंग लेनेसे ही ईश्वर मिल जाता है—यह भूल है। संसारमें रहते हुए सत्यके सहारे कर्तव्यका पालन करते, सबमें रहकर, सबसे अलग रहना ही मनुष्यका धर्म है।

संसारमें ऐसे हजारों महापुरुष (!) हैं, जो उर्द्धबाहु रहते हैं। कोई लोहेके कांटोंपर सोते हैं, कोई अग्निकुण्डके किनारे सर झुकाये रहते हैं। कुछ गाँजा, भाँग, अफीम और चरसके नशेमें बेहोश हैं। यह मनुष्योंको समझाते हैं, हम तुमसे श्रेष्ठ हैं। यदि विचारपूर्वक देखा जाय, तो शरीरको कष्ट देनेवाले ये महात्मा (!) अधम और अस्वाभाविक हैं। इसे कहते

हैं धर्मकी दुनियामें रेकार्ड तोड़ना। यह प्रकृतिके विरुद्ध विद्रोह है। शारीरिक अस्वाभाविकताको लेकर आडम्बरको धर्म समझते हैं। धर्मके नामपर मनुष्यको मनुष्यसे, समाजको समाजसे और राष्ट्रको राष्ट्रसे अलगकर रहे हैं। ये नैतिक निर्बलताको 'पवित्रता' कहते हैं और पवित्रताके नामपर जीवनको घृणित बना रहे हैं।

दूसरी तरफ चलो। मनुष्य अपनी-अपनी टुकड़ियोंके लिए रास्तेके कुत्तोंकी तरह दुम हिलाने, दूसरोंकी वैसी ही हिलती दुम देखकर गुर्राने, झपट पड़ने और इधर-उधर दो-चार बकोटें भरनेमें ही दुनियाकी भलाई समझते हैं। यही वजह है, जो हम अब तक मनुष्यताके ऊँचे आदर्श तक पहुंचनेमें असमर्थ हैं। जिस समय सारा संसार आगे बढ़ रहा है, उस समय हम नीचे गिर रहे हैं। हमारी बुद्धि पर ऐसा तुषारपात हो गया है कि साधारण बातें भी समझमें नहीं आतीं। और हम भूत-प्रेतोंमें विश्वास करते हैं, कीड़े मकोड़ोंकी आराधना करते हैं।

यह आडम्बर हैं। ऐसे ही धार्मिक विश्वासोंने हमें कहींका नहीं रखा। जो हमारे सिरमौर थे, हमें ज्ञान-विज्ञानको शिक्षा देते थे ; वे आज इक्के हाँकते हैं, पराये घरोंमें रोटियां सेंकते हैं। क्लर्की, मजदूरी और दरबानी करते हैं। धार्मिक अन्धेरने हमारे समाजपर कालिख पोत दी है। आज हमें सभी घृणाकी दृष्टिसे देखते हैं। हमारी ऐसी ही धार्मिक संकीर्णतापर स्वामी विवेकानन्दने कहा है—"हिन्दुओंका धर्म न तो अब वेदोंमें रहा, न पुराणोंमें ; न भक्ति मुक्तिमें। तो फिर रहा कहाँ? बस चूल्हे और चौकेमें। आजकल सिर्फ छुआछूतमें ही धर्म समाया है। जो भूखे

के मुंहमें रोटीके टुकड़े नहीं डाल सकते, वे 'धर्म-धर्म' चिल्लाकर कैसे मुक्त हो सकते हैं ?"

हम जब तक धार्मिक अन्ध विश्वासोंको, मजहबके इन तास्सुबोंको तिलांजलि देकर धर्मके वास्तविक तत्वको नहीं स्वीकार करते, तबतक हमें मनुष्यके मूल धर्मका पता पाना असम्भव है।

स्वार्थ हमें जिस ताकतसे ठेलकर आगे ले जा रहा है, उसकी मूल प्रेरणा जीव प्रकृतिमें दिखाई देती है। किन्तु जो हमें त्याग और तपस्याकी ओर ले जाता है, वही है मनुष्यत्व—मनुष्य धर्म। इसी धर्मको लेकर मनुष्य महामानव बनता है। वह दूसरे देशों, समाजों और भिन्न-भिन्न जातियोंमें एक होकर रमता है। उसकी आत्मा सब आत्माओंमें मिलकर सत्य धर्मके दर्शन करती है। वह अपने विचारोंसे सबको एकताके सूत्रमें बांध लेता है और अन्तमें जिस तरह नदी समुद्रमें मिलकर महासागर बन जाती है, उसी तरह मनुष्य भी महा मानवताको प्राप्त कर लेता है। उस समय वह सफलताके उच्च शिखरपर छाती तानकर खड़ा हो जाता है। उसके चरणोंमें मानी मान समर्पित करते हैं, धनी धन और वीर आत्मायें अपने प्राण बिसर्जन कर देती हैं।

एक दिन ब्राह्मण रामानन्दने इसी महा मानवताको पाकर नाभा चाण्डाल भक्त कबीर और रैदास चमारको आलिंगन किया था। उस दिन इस महा मानवताके आगे विरोधियोंका विद्रोह जलकर खाक हो गया था।

एक दिन महात्मा ईसाने इसी मानवताको प्राप्त कर कहा था—"मैं और मेरा पिता एक है।"

एक दिन महात्मा बुद्धने इसी महामानवताके दर्शन कर संसारको समझाया था—"तुम मनुष्यमात्रसे हिंसा, बाधा और शत्रुताशून्य मैत्री जोड़ो। उठते, बैठते, चलते; सोते इसी मैत्रीके प्रवाहमें अपनेको बहा दो। तुम्हारी कल्पनाका अमृत यही है।"

असलमें जीवन देवताके साथ जीवनको अलग करते ही हमपर विपत्तियोंके बादल टूट पड़ते हैं। जीवन देवताको जीवनमें मिलाते ही हृदयसे मुक्तिका आनन्दस्रोत फूट पड़ता है और हम मनुष्यमात्रको बड़ा मानने लगते हैं। उस समय वायुके झोंकोंसे जैसे अञ्चल हिल-हिलकर नये-नये रूप धारण करता है, वैसे ही हमारी आँखोंके सामने संसारका मान-चित्र बदलता जाता है। हम प्रेम सागरमें गोते खाकर आप अपनी काया-पलट कर लेते हैं। उसी समय हमें मालूम होता है, यह संसार कितना सरस, पवित्र और मनोरम है। भर्तृहरिने कहा है—"जब मैं यों ही कुछ समझने बूझने लगा था, हाथीके समान मदान्ध हो गया था और यह अभिमान रखता था, मैं सर्वज्ञ हूं। पर आगे जैसे-जैसे विद्वानोंके सत्संगसे ज्ञान प्राप्त होता गया, मुझे विश्वास होता गया, मैं मूर्ख हूं। इस तरह मेरा वह अहंकार ज्वरके समान उतर गया।"

आजकल अन्धश्रद्धा रखनेवाले मनुष्योंकी धारणा है धार्मिक मामलोंमें उनके सिवा और किसीको बोलनेका अधिकार नहीं। इसमें कोई शक नहीं, हमारी धार्मिक लीडरी बहुत दिनों तक ऐसे ही आदमियोंके हाथमें रही है; परन्तु इसीलिए वे वर्तमान समयमें भी हमारे देशके धार्मिक नेता नहीं रह सकते। ज्यों-ज्यों वे अपने धार्मिक अधिकारोंकी चिल्लाहट मचाते

हैं, त्यों-त्यों जनताकी निगाहोंसे गिरते जा रहे हैं। किसी भी धर्मकी एक-सी रूप-रेखा न कभी रही है, न रहेगी। समयकी आवश्यकताओंके अनुसार सभी धर्मोंको अपनी प्राचीन कड़ाइयाँ कम करनी पड़ी हैं और नये नियम बनाने पड़े हैं।

अन्धविश्वासी धर्म मनुष्यके लिए अफीमके समान है।

अन्धविश्वासी धर्म परलोकका झूठा सब्ज बाग दिखाकर भोलेभाले लोगोंको इस लोकमें सन्तोषकी सूखी रोटियां खानेका पाठ पढ़ाता है। काल्पनिक स्वर्गका लालच देकर गरीबोंके घरोंमें नर्क उँड़ेलता है और जो गरीबोंके मुंहका कौर छीनकर खाते हैं; उनसे कुछ टके ऐंठकर उन्हें स्वर्गका पासपोर्ट दे देता है।

नदी या पुलके नीचे जब मनुष्योंको बलि देनेकी प्रथाका समर्थन किया जाने लगता है, तब धर्म वास्तवमें जहर बन जाता है। धर्मके नामपर सदियोंसे प्रचलित देवदासी प्रथा, मन्दिरोंपर चढ़ाई जानेवाली बलिके लिए पशुहत्या, तीर्थोंमें होनेवाले पाप, व्यभिचार भ्रूणहत्यायें और धर्मजीवी पुरोहितोंकी पापलीलाएँ सुनते हुए भी धर्मको जीवनका संरक्षण कहनेसे अधिक भूल और क्या हो सकती है? जिन स्थानोंमें धर्मकी जितनी ज्यादा दुहाई दी जाती है, उनमें उतनी ही अधिक पोल दिखाई देती है।

जार जैसे निरंकुश शासक और राशपुटीन जैसे शराबी द्वारा धर्मके नाम पर प्रजाकी मुसीबतोंके कारण ही रूसमें धर्मके विरुद्ध विद्रोह हुआ था। जारके जमानेमें धार्मिक जनताका अन्धविश्वास देखकर ही महात्मा टालस्टाय ने कहा था, "मैं पादरियोंका दुश्मन हुए बिना नहीं रह सकता, क्योंकि ये

अशिक्षित जनताके हृदयमें धर्मकी झूठी धारणायें पैदाकर उन्हें सर्वनाशको ओर लिये जा रहे हैं।"

धर्मके नामपर अन्धविश्वासोंने मनुष्योंपर भयानक अत्याचार किये हैं! यदि भारत-सरकार सती प्रथाको रोकनेका कानून न बनाती, तो आज हिन्दुस्तानमें चारों तरफ जिन्दा लड़कियाँ विधवा होनेपर आगमें जलकर भस्म होते दिखायी देतीं। धर्म द्वारा मनुष्यके सुख और शान्तिमें वृद्धि होनी चाहिये, न कि अशान्त हाहाकार!

आज विधवाओंकी आहसे हिन्दू समाज दल रहा है। वेश्याओंके नित्य नये बाजार खुलते जा रहे हैं, दहेजकी प्रथाओंमें पीसकर कितोनी ही कुमारियाँ बगैर शादीके दुःखमय जीवन बिता रही हैं। लाखों अछूत विधर्मी बनते जा रहे हैं। ऐ पाखण्डी धर्मधुरन्धरों! क्या तुम्हारा धर्म यही है? इन धार्मिक अत्याचारोंके विरुद्ध तुम विद्रोह क्यों नहीं करते?

यदि सच पूछा जाय, तो आज अन्धा धर्म ही मनुष्यका खून चूस रहा है। मनुष्यको गुलामके रूपमें बदल देने और उसके मनको मुर्दा बना देनेके लिये धर्म ही पर सबसे ज्यादा जिम्मेदारी है। जब किसी देशमें मनुष्यको पेटभर अन्न नहीं मिलता; तब उस देशमें सिर्फ अकाल ही पढ़कर नहीं रह जाता, बल्कि वहां तरह-तरहको तकलीफें पैदा होती हैं, बुरे रस्म रिवाज फैलते हैं व्यभिचार अत्याचारको वृद्धि होती है। भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है—"मनुष्य अपना उद्धार आप करे। अपने आपको गिरने न दे। क्योंकि हर आदमी स्वयं अपना दोस्त है, स्वयं अपना दुश्मन।" तुम धर्मके अन्धे दीवानोंको तर्पण करनेके लिये अपना खून न दो। जैसे तलाबपर

मच्छरोंका झुण्ड मैलेरिया फैलाता है, वैसे ही अन्धविश्वासी समाज भी कोरी कल्पनाओंके प्रवाहमें बहा जा रहा है और अपने भाइयों पर बीमारियों और मुसीबतोंके पहाड़ ढा रहा है। मैली-कुचैली अन्धेरी गलियोंमें आज हजारों लाखों औरत मर्द जानवरोंकी तरह जिन्दगी बिता रहे हैं। यही वजह है कि लाखों मनुष्योंको आज हलचलकी इतनी ज्यादा जरूरत हो गयी है कि अगर अन्धविश्वासोंके ये अन्धेर फौरन न हटाये गये, तो न मालूम किस दिन एक भीषण सामाजिक क्रान्ति या प्रचण्ड युद्ध ज्वाला मानव समाज में धू-धू कर जल उठे। यदि सिकन्दरकी तरह कोई महाप्रतापी पुरुष अपनी गर्जनाके बलसे, मनुष्योंके बीच काले साँपकी तरह बैठा हुआ धर्म, भाषा और जातीय भेद भावोंको मिटा दे, तो मानव समाजकी सारी समस्यायें हल हो जायँ।

धर्मके असली तत्वको वही जानता है, जो कर्म, मन और वाणीसे सबका प्रेमी है। जब तक हमारे अन्तःकरणमें समानता की ज्योति नहीं जगमगाती; तब तक हममें दृढ़ संकल्प, और संघ शक्तिकी भावनायें मजबूत नहीं हो सकतीं। भुना हुआ बीज जैसे उग नहीं सकता, वैसे हो जब ज्ञानबुद्धिसे मनुष्यके अधर्म जल जाते हैं, तब वे पुनः आत्माको प्राप्त नहीं होते।

धार्मिक संकीर्णताओं और मतमतान्तरोंसे संसारमें कितना खून बह रहा है, ईर्ष्या और पशुता किस तेजीसे बढ़ी हुई है—इसकी कौन कल्पना कर सकता है? धार्मिक सिद्धान्तोंने दुनियामें भीषण भ्रम फैलाये हैं। जन्म भरकी दुष्टता सवा पांच आनेके गऊदानसे धुल जाती है। हजारों पाप करो, एक बार राम नाम जप लो—बेड़ा पार है। गङ्गास्नान और तीर्थ यात्रायें

मोक्षदायक समझ ली गयी हैं। हिन्दू-मुसलमान आपसमें कट मर रहे हैं। शिया सुन्नियोंके झगड़े, सनातनी आर्यसमाजियोंका लट्ठ-मलट्ठ—कहां तक लिखूं, खुद अपने ही घरोंमें धार्मिक लड़ाइयां हो रही हैं। यह कितना बड़ा अपराध है! जिस दिन मनुष्यके बनाये ईश्वरोंका अन्त हो जायगा, हम मन की पवित्रतामें ही ईश्वर-दर्शन कर सकेंगे। उस दिन संसारमें किसी जाति का अपना धर्म न रहेगा। मनुष्य ईश्वरके स्वरूपका निर्णय भक्ति और विश्वाससे नहीं, बुद्धि और विचारसे करेंगे। उस समय ईश्वर और मनुष्य के बीच कोई नबी, रसूल या अवतार न होगा। मनुष्य ईश्वरको आत्मामें अनुभव करेंगे। आँखोंसे देखकर नहीं, कानोंसे सुनकर नहीं, बल्कि अपनी आत्मामें रुद्ध प्रेरणाका अनुभव करके।

दुःख क्या है? दुःख पापका परिणाम नहीं, बल्कि मनुष्यकी आज्ञानताका फल है। आत्मा बन्धनोंसे जकड़ी है, यदि उसके बन्धन तोड़ दिये जायँ, तो आत्म प्रकाश फैलनेमें कोई शक नहीं।

आवश्यकता आविष्कारोंकी जननी है। यह कहावत उतनी ही पुरानी है, जितना कि संसारका इतिहास। संसारका इतिहास बताता है; जिस तरह रुका हुआ जल बांध तोड़कर जिधर रास्ता पाता है, उधर ही बह चलता है, उसी तरह समयकी आवश्यकतायें भी अपना रास्ता बना लेती हैं और पूरी होकर रहती हैं। मनुष्य हृदयमें एक बार प्रवेश किये भाव कभी नहीं मरते। वे कुछ समयके लिये दबाये जरूर जा सकते हैं, पर समय पाकर जिस तरह कटा पेड़ दुगुने वेगसे बढ़ता है, उसी तरह मनुष्योंके आध्यात्मिक भाव भी दुगुने वेगसे उठेंगे और संसारमें फैल जायेंगे।

मनुष्यको यदि विचारपूर्वक देखा जाये, तो वह हमेशा अनागरिक है। पशुओंको रहनेके लिये जगह मिली है और मनुष्यको आगे बढ़नेके लिये रास्ता मनुष्योंमें जो श्रेष्ठ है, वे पथ-निर्माता और मार्ग-प्रदर्शक हैं। जो थके हैं, वे अपने हाथों अपनी चिता तैयार करते हैं।

हमने आध्यात्मिक शक्ति खो दी है। इसीलिए हम आफतोंकी जंजीरोंमें जकड़े हैं। पाश्चात्यके उन्नतिशील देशोंकी ओर देखो, वहांके स्त्री-पुरुषोंमें ही नहीं, लड़की लड़कोंतकमें आत्मविश्वास भरा है। उनका कहना है—"हम जो चाहें कर सकते हैं, हमारी इच्छाशक्तिमें कोई बाधा नहीं डाल सकता।" लेकिन हमारे देशके लड़के क्या कहते हैं? लड़कियोंकी बात छोड़दो—मैं समझता हूँ, अविद्याके अन्धकारमें डूबे हुए माता-पिता भी ऐसा नहीं करते!

पुरानी बात है। ब्रिटिश सेना अफगानिस्तानके महसूद ग्रामको ध्वंस कर रही थी। तोपोंकी अग्निवर्षासे हवाई जहाज ध्वंस होकर मैदानमें आ गिरा। उसमें कई घायल सैनिक थे। एक अफगान लड़कीने उन्हें देखा और बम वर्षाके बीहड़ मैदानसे वह उन सैनिकोंको एक पहाड़ी गुफामें भगाले गयी। अफगानोंको यह बात मालूम हुई, वे सैनिकोंको मार डालनेके लिये दौड़े, मगर लड़कीने उनकी इस तरहसे गुप्त रक्षाकी कि कोई उनकी बू-बास तक न पा सका। एक दिन मौका मिला—लड़कीने घायल सैनिकोंको अफगानी पोशाक पहनाकर अफगानी सीमाके बाहर कर दिया! दुश्मनको माफ करनेका यह मनुष्य-स्वभाव अत्यन्त पवित्र है।

आज संसारमें उपकारके जितने चमत्कार देखे जाते हैं, वह किसी जादू-

गरके खेल नहीं। उनका आविष्कार न तो धर्मधुरन्धरोंने किया है, न राज-नीति-विशारदोंने। अरिस्टाटल, बेकन, रूसो और कार्ल मार्क्स इसके निर्माता नहीं; न नेपोलियन और बिस्मार्कने ही इन चित्रोंको बनाया है। इसकी रचनाकी है मनुष्यकी आध्यात्मिक शक्तियोंने; जो नदीकी धाराकी तरह अपना कल्याण मार्ग आप ढूढ़ती चली गयी है। आकाशमें रहनेवाले नक्षत्र जिस तरह रातमें रास्ता दिखाते हैं, उसी तरह आध्यात्मिकशक्तिके विचारकोंने इन चमत्कारोंके इशारे भर किये हैं, जिनके द्वारा मनुष्य सुखी हैं।

मनुष्य हमेशासे मनुष्यताके आकर्षणको लेकर पागल है। उसके सामने कितने ही राज्य उठे और गिरे। उसने कितने ही माया मन्त्रोंको चाभियाँ तैयार कीं। उन्हीं चाभियोंसे वह दुनियांके रहस्य भण्डारोंका ताला खोलता आ रहा है। रोटी-कपड़ेके लिये नहीं; महा मानवोंकी प्रतिष्ठा करनेके लिये, जटिल बाधाओंसे सत्यका उद्धार करनेकेलिये। मनुष्य होकर आराम कौन चाहेगा? उसे स्वयं मुक्तिपाकर दूसरोंको मुक्ति दान देना होगा। उस समय मृत्यु गर्जन उसे सङ्गीत जैसा सुनाई देगा ; वह आँधी तूफानमें आत्माका दीपक जलाकर बेधड़क सफल मार्गपर चला चलेगा। उसकी कृपासे उसी दिन सारा मानव समाज एक धर्मका, सच्चे मनुष्य-धर्मकी घोषणा करेगा। उस दिन यह संसार एक विशाल परिवारके रूपमें बदल जायगा। ईसा, मोहम्मद, बुद्ध, शंकराचार्य, नानक इत्यादि महापुरुषोंके सब धर्म मिलकर एक हो जायँगे— जिसे संसारके सब मनुष्य मानेंगे। उस दिन चोरी, झूठ डाकेजनी, बलवा विद्रोह इत्यादि आधुनिक समाज के अधार्मिक रोग ढूंढ़नेसे भी न मिलेंगे।

मनुष्यका दिमाग बुराइयोंको ढूँढ़नेमें लगा है और क्रमशः उन्हें नष्ट करता जायगा।

हमारे लिये वह दिन दूर नहीं, जब मनुष्योंके सामने इतने आकर्षक कार्योंकी भीड़ लगी रहेगी कि वह मुग्ध हो जायँगे। विश्वाससे नवयुगका आरम्भ होगा। सारा संसार एक पुस्तककी तरह मनुष्यके सामने खुल जायगा और उसके पढ़नेवाले कहेंगे—"ओह, हमारे पूर्वज भी अजीब थे, जो एक दूसरेको न पहचानकर आपसमें लड़ाइयाँ करते थे।"

तुम ईश्वरको न भूलो। मगर अन्धविश्वासी और तकलीफ देनेवाले ढोंगी धर्मका जनाजा निकालो। उसे रसातलमें धकेल दो, यदि वहाँ जगह न मिले, तो ज्वालामुखीके उदरमें डाल दो—ताकि उसकी खाकतकको पता न लगे और उसके जले हुए कण उड़ उड़कर तुम्हारे घरोंमें न आ सकें।

तुम मनुष्य हो। मनुष्य क्षुद्र रहनेके लिए संसारमें नहीं आया। मङ्गलमयी शक्तियाँ इकट्ठा करो। तुम्हारा महा मङ्गल है।

आकर्षण

इस लेखमें तुम्हें न तो जंत्र-मंत्र मिलेंगे, न जादू टोने। यहाँ मैं आकर्षण प्राप्त करनेके वह सरल तरीके बताऊँगा, जिनके द्वारा तुम जीवन-संग्राममें फतह पाते जाओगे।

मनुष्य जीवनका सबसे बड़ा आकर्षण है—उसका महान "व्यक्तित्व।" जिस तरह बिजलीमें चमक, चन्द्रमामें चाँदनी, सूर्यमें किरण, फूलमें सौन्दर्य, वनमें हरियाली, पक्षियोंमें रङ्ग और रमणीमें रूपका आकर्षण होता है, उसी तरह मनुष्यमें उसके 'व्यक्तित्व' का आकर्षण है। जिस मनुष्यका 'व्यक्तित्व' जितना ही शानदार होगा, उसका आकर्षण उतना ही तेज और प्यारा होगा।

'व्यक्तित्व' क्या है? 'व्यक्तित्व' के माने हैं—स्वयं तुम। 'व्यक्तित्व' मनुष्यके अन्दरूनी ताकतोंकी तेजस्वी चमक है। वह चमक, जिससे मनुष्य स्वयं अपनेको जाहिर करता है और उसके जरिये दूसरोंपर अपना प्रभाव डालता है।

शक्तिशाली 'व्यक्तित्व' रखनेवाले सिर्फ स्रष्टा ही नहीं, द्रष्टा भी होते हैं। वह देखते हैं, सुनते हैं और सृष्टि करते हैं। सभी देखते और सुनते हैं, मगर साधारण मनुष्योंसे और इनसे जमीन आसमानका फर्क है। इनके देखने सुननेमें महान अन्तर रहता है। साधारण लोगोंकी दृष्टिमें जो 'कुछ नहीं' है—इनकी निगाहमें वही सबसे बड़ी चीज है।

ऊँचा 'व्यक्तित्व' इन्सानको अमर होनेका अमृत पिलाता है। यदि ऊँचा 'व्यक्तित्व' झोपड़ीके लता-पत्रोंके अन्दर भी छिपा रहे, तो उसके आत्मिक प्रकाशसे झोपड़ी सोनेके महलसे अधिक सुन्दर दिखाई देती है। व्यक्तित्वशाली मनुष्य निर्भीक होते हैं। वे स्नेहसे बालकोंके सामने बच्चे बन जाते हैं, और इन्साफकी कुर्सीपर बैठकर दुश्मनोंकी भी इज्जत करते हैं।

वे स्त्री-पुरुष अभागे हैं, जो संसारमें प्रकाश लेकर आते हैं और अन्धकारके साथ वापस लौट जाते हैं, किन्तु दुनियामें अपनी यादगारका कोई ऐसा चिन्ह नहीं छोड़ जाते जिससे फिर कभी उनके जीवनसे आकर्षक लपटें निकल सकें। ऐसे मनुष्योंपर संसार सम्मानका बोझ भले ही लाद दे, किन्तु वह इस तरह मृतककी शोभा बढ़ाना चाहता है।

जंगलमें शेर अपने 'व्यक्तित्व' के ही आकर्षणसे राज्य करता है। आज दिन जो हम 'फेल' होते जाते हैं, उसका प्रधान कारण है, हम 'व्यक्तित्व' को भूल गये हैं, जीवन आकर्षणको खो बैठे हैं।

क्या तुम जानते हो,—मनुष्यको महान 'व्यक्तित्व' कहांसे मिलता है? मेरी साइन्स कहती है—चरित्रबलसे।

जिन्दगीका ताज और मनोहर प्रकाश है—इन्सानका ऊँचा चरित्र। मनुष्यके पास यह ऐसी कीमती चीज है, जिसके सामने दुनियांकी सब वस्तुयें तुच्छ हैं। सच्चरित्र मनुष्य राष्ट्रोंकी रचना करता है, मुर्दोंमें जीवन और कमजोरोंमें ताकत बांटता है। उसके लिये आग शीतल जल, समुद्र छोटी नदी, पहाड़ शिलाखण्ड, विष अमृत और सर्प फूलकी माला बन जाते हैं। ऐसे मनुष्यके चरणोंमें संसारकी आत्मा झुक जाती है, पृथ्वी उसे

सिंहासन प्रदान करती हैं और शक्तियां विजय-मुकुट। मनुष्य इन्हीं शक्ति कणोंको इकट्ठाकर एकदिन संसारको चुम्बककी तरह अपनी ओर खींच लेता है।

आजकल मेरे दिन-रात किस आचरणमें बीत रहे हैं—यह विचार करने वाले आदमी दुखी नहीं हो सकते। मनुम्यका मूल्य उसके चरित्रमें है। चरित्रमें ही उसके आत्मबलका प्रकाश होता है और दूसरे मनुष्योंको इस बातका पता लगता है कि आत्मा कितनी शक्तिशाली है। धन, मित्र मान और आनन्द चरित्रवान व्यक्तिको आपसे आप प्राप्त होते हैं और मृत्युके बाद उसे ज्यादा मशहूर कर देते हैं। चरित्रवान व्यक्ति दूसरोंके हुक्म कम मानता है, मगर उसका हुक्म दूसरोंपर बड़े प्रभावसे चलता है। मैं कहता हूं चरित्रवान मनुष्योंके चरणचिन्होंपर चलो। तुम्हारा महा मंगल होगा और तुम कठिनाइयोंकी मंजिल सरलतासे पारकर ले जाओगे।

जिस मनुष्यका चरित्र ऊँचा है, उसके शरीरसे एक प्रकारकी जीवित ज्योति निकला करती है; जिसे हम मानव ज्योति कहते हैं। साधारणतः यह शरीरके चारों ओर एक या डेढ़ फुट तक फैली रहती है और कई फीट दूरके मनुष्योंको अपनी ओर आकर्षित करती है। यदि तुम दृष्टि-शक्तिके तेजसे इसे देखो, तो यह ज्योति सम भावसे चारों ओर फैली दिखाई देगी, जो मानसिक आन्दोलनमें असाधारण रूप धारण कर लेती है।

इस ज्योतिको हर जातिके लोग किसी न किसी रूपमें मानते हैं। संस्कृतमें इसे तेजस् कहते हैं, मुसलमान नूर और पश्चिमी विद्वान 'मैगनेटिज्म' त्या 'ह्यूमैन इलेक्ट्रीसिटी' नामोंसे पुकारते हैं।

तुमने अकसर देखा होगा, बहुतसे लोग ऐसे हैं, जिनके पास बैठनेसे

सुख शान्ति मिलती है। अनेक ऐसे हैं कि उनके पास बैठनेसे अशान्ति दुःख, क्रोध, ईर्ष्या आदि बुरे विचार पैदा होते हैं। यह क्यों? यह सब इसी मानव ज्योतिकी रहस्य लीला है। इस पदार्थके कारण आकर्षण-विकर्षण होते हैं। इसी तत्व-बलसे एकका दूसरे पर प्रभाव पड़ता है। मनुष्य जिस तरहके विचारोंका सेवन करता है, उसकी ज्योति वैसे ही घटती-बढ़ती है। इस ज्योतिको शुद्ध करने या प्रबल बनानेके लिये प्राणायामकी आवश्यकता है।

विचारोंकी लहरें बिजलीकी लहरोंसे ज्यादा शक्तिशाली हैं। इसलिये जो आदमी उन्नति, शक्ति, उत्साह इत्यादिके विचारोंको मनमें हरा भरा रखता है, उसका जीवन ज्यादेसे ज्यादा सुखी और शक्ति सम्पन्न बन जाता है और उसकी जीवन ज्योति इतनी बलवान हो जाती है कि दूसरोंके बुरे विचार उसपर असर नहीं डाल सकते। बुरे विचार उसी अपवित्र मनुष्यके पास लौट जाते हैं, जिसके हृदयसे निकलते हैं और उनका उस मनुष्यको उचित फल चखाते हैं।

ईश्वर और संसारका आकर्षण ज्ञानेन्द्रियोंके जागरण से प्राप्त होता है। यह आकर्षण प्रतिभाशाली व्यक्तियोंमें कविकी कल्पनाकी तरह विलक्षण आविष्कार कर डालता है। असलमें इन्द्रियोंका जागरण मनुष्य-जीवनको ठीक रास्तेसे ले चलता है। उसके कार्य चाहे गुप्त हों या प्रकट, उसके प्रत्येक कार्य मनुष्यमें जागृत आदतें उत्पन्न करते हैं।

आदतें बगैर उद्योगके अपना काम करती हैं। इनकी शक्तियाँ विचित्र होती हैं। तुम जिस आदतको अपनेमें एक बार डाल लेते हो, उसे कार्य रूपमें परिणत करनेकी आदत पड़ जाती है। आदतका पहला रूप मकड़ीके

जालेके तरह कमजोर होता है। किन्तु वही जाला धीरे-धीरे लोहेकी मजबूत जंजीर बन जाता है, जिसे तोड़नेमें खतरेसे भरी मुसीबतोंका मुकाबला करना पड़ता है।

इन्द्रियोंको जगानेमें आदतोंका सबसे बड़ा हाथ रहता है। आंखोंको ही लो, इनके देखनेमें भी एक तरहकी आदत होती है। किसी चीजको तेजीसे देखना और हलकेपन, लापरवाहीसे देखना; किन्तु सर्वश्रेष्ठको देखना-सुनना ही मनुष्यके लिये कीमती है। इसीसे सोई शक्तियां जागती हैं। अच्छी आदतें डालनेमें कुछ खर्च भी नहीं होता, उनके द्वारा संसारकी कीमती चीजें मुफ्त खरीदी जा सकती हैं। मनुष्यके पास दिमाग, आंख, नाक, कान, हाथ और जीभ ये छै सबसे बड़ी ताकतें हैं। इनमें जागरण आते ही वह संसारके रहस्य भेदोंसे बहुत बड़ा फायदा उठा सकता है। लोग कहते हैं, भाग्य अन्धा होता है। वह बिना देखे-भाले जिस आदमीको जिस तरफ चाहे खींच ले जाता है। किन्तु यह सिद्धान्त गलत है। वास्तवमें भाग्य नहीं, मनुष्य अन्धा होता है। भाग्यका उद्धार आत्माके आनन्दसे है। एक लैम्पसे हजारों लैम्पें जलाई जाती हैं।

मनुष्य-शरीरमें कई करोड़ जीव-कोषोंके अड्डे हैं। इनमें से हर एक स्वतन्त्र जन्म लेता है और स्वतन्त्र मृत्यु प्राप्त करता है। जीवनमें हर सातवें वर्ष हर आदमी नया अवतार लेता है। उस समय उसके मानसिक प्रदेशमें एक तरहकी प्रलय होती है और बहुत तरहका तहस-नहस होता है। उस समय इन जीव-कोषोंमें अद्भुत हलचल होती है। इनमेंसे कितने ही मरमिटकर हमेशाके लिये विदा हो जाते हैं। जो बचे रहते हैं, वे नये जीव-

कोषोंके साथी बन बैठते हैं। उन्हींसे मनुष्यका रूप, रङ्ग और स्वभाव बदलता है। स्वभावसे बिचार पैदा होते हैं, विचारोंसे मनुष्य कर्मोंका फल भोगता है। हां, यह मनुष्यके हाथकी बात है—चाहे वह अपने कर्मोंको अच्छा बनाये या बुरा। कर्म मनुष्यकी इच्छा शक्तिका पीछा करते हैं। जो लोग अच्छे कर्मोंको चुनते हैं, वे अपने भाग्यके खुद बिधाता बन बैठते हैं। जो बुरे कर्मोंकी तरफ आकर्षित होते हैं, वह मनुष्य-जीवनको बरबाद करनेके अपराधी ठहराये जाते हैं।

यह विराट संसार शक्ति, सुख, सौन्दर्य, सत्य और प्रेमका कीमती खजाना है। यह हमारे व्यक्तित्वका संसार है। इसके चारों तरफ आकर्षण है। मनुष्य जीवनकी दैनिक घटनायें, जिन्हें हम रोज देखते सुनते हैं, इन्हींके उत्थान पतनसे मनुष्यमें मूल ज्ञान उत्पन्न होते हैं और वह जिन्दगी में अनेकों महत्वपूर्ण कामकर डालते हैं। हम और तुम रोज हो मुरदे देखते हैं, मगर महात्मा बुद्ध मुरदेको देखकर मनुष्योंके भगवान बन गये। हम और तुम रोज ही देव-मूर्तियोंपर चूहोंको उछलते देखते हैं। मगर जिस दृष्टिसे स्वामी दयानन्दने यह दृश्य देखा, वे खुली हुई आँखें थीं। उन आंखोंने इस छोटीसी घटगा द्वारा उन्हें आर्यसमाजका नेता बना दिया। दरअसल छोटी छोटी घटनायें हमारे लिये बड़ी महत्वपूर्ण हैं। मगर इन घटनाओंसे वही आकर्षण प्राप्त करते हैं, जो आंखें खोलकर चलते हैं और कानोंमें पड़नेवाली प्रत्येक आवाजको होशियारीसे सुनते हैं।

पीसाके गिरजाघरमें एक दिन एक अठारह वर्षका नवजवान खड़ा हुआ ऊपरकी हिलती बत्तीको बड़े गौरसे घूर रहा था। बत्ती ठीक वक्तपर एक सिरेसे दूसरे सिरेपर आती-जाती थी। नवजवानने सोचा, 'इस आइडिया' पर समय देखनेकी एक आकर्षक वस्तु तैयारकी जा सकती है। पचास वर्षके कठिन परिश्रमके बाद उसकी यह इच्छा हुई और उसने घड़ीका आविष्कार

कर डाला। इसी तरह सर हम्परी डेवीके व्याख्यानोंको सुनकर जिल्दसाज फराडेने रसायनका आविष्कार किया। कोलम्बसने एक सामुद्रिक पौधेको देखकर स्वजातिमें फैली हुई लड़ाइयोंका तहस-नहस कर डाला। फ्रैंकलिनने बिजलीके तथ्योंको ढूंढ़ निकाला। न्यूटन फलका गिरना देखकर गुरुत्वा-कर्षणपर विचार कर बैठे। ऐसी हजारों छोटी-छोटी घटनायें हैं, जिन्होंने मनुष्यकी आँखोंमें वह चमत्कार पैदा कर दिया, जिससे आज लाखों करोड़ों मनुष्य फायदे उठा रहे हैं। मनुष्य ज्यों-ज्यों शिक्षित होता जा रहा है' वह महा शक्तियोंको परीक्षागारके मामूली बर्तनोंमें कैदकर उनमें अद्भुत आकर्षण उत्पन्न कर रहा है। अब वह ज्ञान विज्ञानकी बदौलत धनी बनता जा रहा है। रेगिस्तानको हँसता बगीचा और श्मशान जैसी पृथ्वीको अमरावती बनाता जा रहा है। उसका अधिकार उत्तुङ्ग तरङ्ग-वाले महा समुद्रपर भी फैल रहा है। अमित तेजस्विनी रहस्यमयी प्रकृति भी आज उसकी सेवामें रत और उसके उद्देश्योंकी पूर्तिमें तैयार हो गयी है। उसकी उन्नतिके प्रचण्ड प्रवाहोंको संसारकी कोई ताकत नहीं रोक सकती, किसीमें शक्ति भी नहीं है। जिस तरह एक दिन अमृतकी खोजमें देवता और दैत्य पागल थे, आज उसी तरह जीवनकी खोजमें मनुष्य भी दीवाने हो रहे हैं। वे ढूंढ़ते हैं कि उन्नतिकी प्रयोगशालामें कितने किस्मके आकर्षण हैं और इनमें किन किन नये चमत्कारोंका आविष्कार कर सकते हैं।

रूसके प्रवर्त्तक मैक्सिम गोर्कीने लिखा है—"अपरिवर्तित अवस्थामें रहना बड़ा दुःखदायी है। ऐसी हालतमें रहकर भी यदि हमारा हृदय नहीं मरता, तो वह परिस्थिति हमें और भी दुःखदायी मालूम होने लगती है।" सच है, मनुष्य अपने उलट-फेरसे ही अनन्त शक्तियोंपर अधिकार करता है।

यह कहावत सच है, दुनिया झुकती है झुकानेवाला चाहिये। संसारके चारों तरफ आकर्षण शक्तिका उजेला है, किन्तु जब तक हम उसे नहीं पहचानते, हमारी शक्तियां मुर्दा हैं। ठीक उसी तरह जैसे फूल तब तक

हमारे लिये बेकार है, जब तक हम उसकी खूबसूरती और सुगन्धका आनन्द नहीं जान पाते। थालोमें स्वादिष्ट भोजन परोसे हैं, यदि खानेवाला न हो, तो इसमें भोजनका क्या दोष ?

इन्सानकी सबसे बड़ी भूल यह है कि किसी भी अच्छे कामको वह कल परसोंपर टाल देता है इस तरह उसकी जिन्दगी खत्म हो जाती है; मगर कल परसों कभी नहीं आता।

न्यूटन कहता था—"मैं अपना विषय हमेशा अपने सामने रखता हूं। धीरे-धीरे उसके अन्धकारको टटोलता हूं और क्रमशः अपना मार्ग साफकर ज्यादेसे ज्यादा रोशनी पा जाता हूं।" किसी कामको पूरी ताकतोंके साथ करनेमें ही सफलतायें मिलती हैं, हाहाकार मचानेसे नहीं।

मनुष्यके मनमें एक निराली और विचित्र दुनिया बसी है। उसमें आकर्षक बगीचे हैं—जिसमें गुलाबकी नर्म और नाजुक पंखुड़ियां बिछी हैं। उसमें निराशाके खाई कुयें है, जिनमें मौत जैसा अन्धकार और भयानक सन्नाटा है। उसमें मुसीबतोंकी महामारियां है—जिनकी आकाशको छूने-वाली ऊँचाई देखकर कलेजा काँप उठता है। उसमें प्रेमका झरना झरता है—जिसमें त्याग और सहानुभूतिकी धारायें बहा करती हैं।—उसमें घृणा, द्वेष, असत्य, लालच, अभिमान, और इन्द्रिय लोलुपताका नर्क भी है। उसमें सत्य, सन्तोष, भक्ति और नम्रताका स्वर्ग भी जगमगा रहा है। उसमें प्रफु-ल्लताका बसन्त है, प्रसन्नताकी बहार है, और हलाहलका जहर भी भरा है।

मन एक निराली दुनिया है। इतनी विशाल कि मनुष्य अपनी तमाम जिन्दगीभर भी उसके सम्पूर्ण दृश्योंको देखनेमें असमर्थ है।

तुमने अकसर देखा होगा कि एक मनुष्य दूसरे मनुष्यके इतना वशीभूत हो जाता है कि सरासर अन्यायपूर्ण बातें करनेपर—उसे अन्याय जानते हुए भी—उसमें एक क्षणके लिये भी उसके कार्योंको न करने या टाल देनेकी शक्ति नहीं होती। प्रेमिका प्रेमीको ठुकराती है, घृणासे मुंह फेर लेती है

लेकिन प्रेमी उसी स्त्रीके लिये अपने प्राण तक बिसर्जनकर देता है। ऐसी आश्चर्य जनक आकर्षण-शक्ति किस मोहिनी मन्त्रके बलपर उठ खड़ी हुई है— जानते हो ? मनुष्यके व्यक्तित्वकी महानताके बलपर !

यदि तुम किसी गिरे हुए आदमीको उठाते हो, तो यह न समझो कि हमने उसे उठाया, किन्तु यह समझो कि उसी समयसे दिव्य प्रकृतिने तुम्हें उन्नत गोदमें ले लिया। तुमने दूसरेका नहीं, वरन अपना ही उद्धार किया।

हर इन्सानकी जिन्दगीमें कुछ न कुछ महान कर्तव्य होना चाहिये। वह कर्तव्य, जो उसके धन्धेसे बड़ा, और धनसे ज्यादा कीमती, और प्रशंसासे ज्यादा स्थायी हो ; किसी देशकी महानता उसके क्षेत्रफल आबादी या धन-पर निर्भर नहीं, उसकी महानता है उसके महामानवोंपर।

अच्छाईके साथ नेकी और बुराईके साथ बदी पैदा होती है। हृदयका प्रतिबिम्ब हमारे नेत्रों और कार्यों द्वारा दुनियाके सामने प्रकट होता है। कलुषित हृदयोंकी परछाई भी काली है, किन्तु जितेन्द्रिय और सद्गुणी मनुष्य के चेहरेमें प्रकाशका आकर्षण होता है !

तुम मनुष्य हो। अमृतकी बूंदें पीकर दुनियामें आये हो। हमेशा उन्नतिके मार्गमें आगे बढ़ो, और अज्ञान, गरीब तथा मुसीबतोंके मारे हुए भाइयोंको अपनी हुँकारसे जिन्दा कर दो।

तुम्हारी जिन्दगीको किसीने चाहे समझा हो या नहीं ; किन्तु मैं तुम्हारे जीवनकी कीमत समझता हूं ! शक्तिशाली और तेजस्वी बननेकी कोई त्रुटि नहीं पाता।

जागो, उठो। हे मनुष्य ! तुम भगवान कृष्णकी तरह कर्मयोगी, बृह-स्पतिकी तरह विद्वान, ब्रह्माकी तरह कवि हो। सुन्दर, धनी और भीष्मके समान वीर बनो। मानव शक्तिमें दैव शक्तिका आबिष्कार करो। जीवनको पवित्र और मंगलमय बनाओ ! मेरी यही आन्तरिक कामना है।

* समाप्त *